

Safarnama
सफ़रनामा
स्वयं से समाज तक

आवरण कला: तेजी ग्रोवर

इस पुस्तक के आवरण को अपनी भावपूर्ण कला से समृद्ध करने के लिए हम तेजी ग्रोवर के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करते हैं।

तेजी ग्रोवर एक प्रतिष्ठित हिंदी कवयित्री, कथाकार, अनुवादक और चित्रकार हैं। उनकी रचनात्मक यात्रा भाषा, रंग और प्रकृति के बीच सहज रूप से संवाद करती है। अपने व्यापक साहित्यिक और अनुवाद कार्य के साथ-साथ वे वर्ष 2003 से चित्रकला से भी सक्रिय रूप से जुड़ी हुई हैं और उन्होंने गहन अध्ययन के आधार पर प्राकृतिक तथा पर्यावरण-अनुकूल रंगों की एक विशिष्ट रंग-पद्धति विकसित की है। शुद्ध प्राकृतिक रंगद्रव्यों से निर्मित उनकी कलाकृति इस पुस्तक के आवरण को एक आत्मीय जैविक और चिंतनशील स्वर प्रदान करती है। यह उनकी प्रकृति, सामग्री और कलात्मक अभिव्यक्ति के प्रति गहरी संवेदनशीलता को प्रतिबिंबित करती है।

Cover Art by Teji Grover

We extend our heartfelt gratitude to Teji Grover for enriching this book with her evocative cover artwork.

Teji Grover is an eminent Hindi poet, fiction writer, translator, and painter whose creative practice moves fluidly between language, colour and the natural world. Alongside her extensive literary and translation work, she has been painting since 2003 and has developed a carefully researched palette of natural, eco-friendly colours. Created with pure natural pigments, her artwork on the cover brings an organic and deeply contemplative quality to this book, reflecting her distinctive sensitivity to nature, material and artistic expression.

राँझा राँझा कर दी नी मैं आपे राँझा होई
सद्दो नी मैनुँ धीदो राँझा हीर ना आखो कोई

बुल्ले शाह | Bulleh Shah

Repeating the name of Ranjha, I have become Ranjha myself.
O call me ye all "Dheedo- The Ranjha," let no one call me Heer.

The journey of this fellowship was not only about helping communities understand the Constitutional values, it was equally about the transformation of the fellows themselves. As they introduced constitutional values into the lives of others, they found those same values reshaping their own beliefs, relationships, and identities. In helping others understand the Constitutional values, they themselves grew closer to the identity of the Constitution.

This book is co created by:

Kajal, Abhishek, Ajay, Neetu, Mukesh, Chulbuli, Pallav, Payal and Anirudh

Editors: Shafaque Kaur Reen and Avinav Kumar

Creative Direction and Design: Sunpreet Singh

Project 'Meri Pehchan Samvidhaan' supported by Azim Premji Foundation

Safarnama - Swayam se Samaaj Tak © 2026 by PHIA Foundation is licensed under CC BY-NC-ND 4.0.

To view a copy of this license, visit <https://creativecommons.org/licenses/by-nc-nd/4.0/>

Year of Publishing 2026



Partnering Hope Into Action Foundation

Trust registered in 2005

Registered under 80G

www.phia.org.in

LinkedIn - [linkedin.com/company/phiafoundation/](https://www.linkedin.com/company/phiafoundation/)

Instagram - [instagram.com/foundationphia/](https://www.instagram.com/foundationphia/)

Reach us at

info@phia.org.in

+91-11-2625 8107

Registered Office

D25/D, First Floor, South Extension II, New Delhi -110049 India

Madhya Pradesh Office

E8/104, Basant Kunj, Bhopal, Madhya Pradesh 462016

Introduction | प्रस्तावना

Over the last three years, a diverse cohort of 50 fellows from different parts and communities of Madhya Pradesh undertook a journey to bring about change in themselves and in their communities. Guided by the values inscribed in the Constitution of India – equality, justice, dignity, fraternity and liberty, they worked on issues close to their hearts.

As they progressed in their journey of working with communities and understanding the many facets of these values, they underwent a transformation themselves – some found answers, some found questions while some found different ways of working and being. This collection encapsulates their personal journeys of transformation – from the moments which moved them to the paths which guided them.

Mentors:

Upasana Behar, Anupa Madharia, Sunder Singh Khadse, Abhishek Chaturvedi, Pragyan Mohanty, Seema Bajaj, Abhay Nema (former), Sudha Jain (former)

Team: Anirudh, Arti, Avinav, Payal, Pallav

पिछले तीन वर्षों में मध्य प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों और समुदायों से आए 50 फ़ेलोज़ ने स्वयं में और अपने समुदायों में सकारात्मक परिवर्तन लाने की एक सार्थक यात्रा तय की। भारत के संविधान में निहित समानता, न्याय, गरिमा, बंधुत्व और स्वतंत्रता जैसे मूल्यों को अपना मार्गदर्शक बनाते हुए उन्होंने उन मुद्दों पर काम किया जो उनके लिए व्यक्तिगत रूप से महत्वपूर्ण थे।

समुदायों के साथ काम करते हुए और इन संवैधानिक मूल्यों के विभिन्न आयामों को समझते हुए, उनकी अपनी सोच और व्यक्तित्व में भी गहरा परिवर्तन आया। किसी को अपने प्रश्नों के उत्तर मिले, किसी को नए प्रश्न मिले, तो किसी ने काम करने और जीवन को देखने के नए तरीके खोजे। यह संकलन उनकी इसी आत्मपरिवर्तन की यात्रा का दस्तावेज़ है—उन क्षणों से लेकर जिन्होंने उन्हें भीतर तक प्रभावित किया, और उन रास्तों तक जिन्होंने उनकी दिशा तय की।

मार्गदर्शक (Mentors):

उपासना बेहार, अनुपा माधारिया, सुंदर सिंह खड़से, अभिषेक चतुर्वेदी, प्रज्ञा मोहंती, सीमा बजाज, अभय नेमा (पूर्व), सुधा जैन (पूर्व)

टीम: अनिरुद्ध, आरती, अविनव, पायल, पल्लव

Avinav

Our histories have a queer characteristic, without us realising they shape our journey of life. Sometimes this history is light, charted by our individual actions and experiences but quite often we bear the burden of history that has nothing to do with us as individuals. They originate from the social, gender, economic and other identities that we inherit. Breaking the shackles of such histories requires grit and audacity.

For me the journey of the individuals that we supported through the project 'Meri Pehchan Samvidhan' is the manifestation of that grit and audacity. I have had the privilege of watching all of them closely through their almost three years of association with PHIA. I thought I knew them well, but reading and editing their life stories and their drive behind doing what they are doing makes me see them in a different light. But this light was not all about illumination. I realise that it was sometimes in their darkest hours that they decided to shape their life journeys differently. It was the very discrimination and injustice that many of them faced directly, that defined their missions to fight against them. In narrating their stories, they have become courageously and candidly vulnerable and in doing so these narrations have unfolded into tales of inspirations for me and hopefully others.

Their stories tell us that through this journey many of them have undergone internal metamorphosis and cannot go back to being the same individuals again. I also realise that their association with us was nothing but few steps together in their long individual and collective journeys. They had been walking this path before and they will continue to walk this path in some way or the other, for they are restless people. People who want to bring and see change with an urgency. I feel immensely informed, enriched and inspired having contributed to putting together their journeys and having the privilege of knowing them as individuals.

अविनव

हमारे इतिहास की एक अनोखी विशेषता होती है—अक्सर बिना हमारे एहसास के ही वह हमारे जीवन की यात्रा को आकार देता रहता है। कभी यह इतिहास हल्का होता है, जिसे हमारे अपने अनुभव और निर्णय रचते हैं। लेकिन कई बार हम ऐसे इतिहास का बोझ भी उठाते हैं जिसका हमारे व्यक्तिगत अस्तित्व से कोई सीधा संबंध नहीं होता। यह उन सामाजिक, लैंगिक, आर्थिक और अन्य पहचानों से जन्म लेता है जो हमें विरासत में मिलती हैं। ऐसे इतिहास की बेड़ियों को तोड़ने के लिए असाधारण साहस, दृढ़ता और जज़्बे की आवश्यकता होती है।

मेरे लिए 'मेरी पहचान संविधान' परियोजना के माध्यम से जिन लोगों के साथ हमें चलने और उन्हें सहयोग देने का अवसर मिला, उनकी जीवन-यात्राएँ उसी साहस और दृढ़ संकल्प की जीवंत मिसाल हैं। लगभग तीन वर्षों तक PHIA के साथ उनके जुड़ाव के दौरान मुझे उन्हें निकट से देखने और समझने का सौभाग्य मिला। मुझे लगता था कि मैं उन्हें अच्छी तरह जानता हूँ, लेकिन जब मैंने उनकी जीवन-कथाएँ पढ़ीं, उन्हें संपादित किया और यह जाना कि उनके कार्यों के पीछे कौन-सी प्रेरणाएँ हैं, तब मैंने उन्हें एक बिल्कुल नए दृष्टिकोण से देखा।

यह नया दृष्टिकोण केवल उजाले का नहीं था। मैंने महसूस किया कि अनेक बार उनके जीवन के सबसे अंधेरे और कठिन क्षण ही वे मोड़ बने, जहाँ उन्होंने अपनी जीवन-यात्रा को एक नई दिशा देने का निर्णय लिया। जिन भेदभावों और अन्यायों का उन्होंने स्वयं सामना किया, वही आगे चलकर उनके संघर्षों और उनके उद्देश्य की नींव बने। अपनी कहानियाँ साझा करते हुए उन्होंने असाधारण ईमानदारी और साहस के साथ स्वयं को संवेदनशील और खुला रखा। इसी खुलेपन ने उनकी जीवन-कथाओं को मेरे लिए, और मुझे विश्वास है कि अनेक अन्य लोगों के लिए भी, प्रेरणा की सशक्त गाथाओं में बदल दिया।

उनकी कहानियाँ यह भी बताती हैं कि इस यात्रा ने उनमें गहरा आंतरिक परिवर्तन पैदा किया है। यह एक ऐसा रूपांतरण है जिसके बाद वे फिर कभी पहले जैसे व्यक्ति नहीं रह सकते। साथ ही मुझे यह भी एहसास होता है कि उनके साथ हमारी साझेदारी उनकी लंबी व्यक्तिगत और सामूहिक यात्रा का केवल कुछ कदम भर थी। वे इस राह पर पहले भी चल रहे थे और आगे भी किसी न किसी रूप में चलते रहेंगे, क्योंकि वे ठहरने वाले लोग नहीं हैं। वे ऐसे लोग हैं जो परिवर्तन लाने और उसे अपनी आँखों से देखने की तीव्र आकांक्षा रखते हैं।

उनकी यात्राओं को शब्दों में संजोने में अपना छोटा-सा योगदान दे पाने और उन्हें एक व्यक्ति के रूप में जानने का अवसर मेरे लिए अत्यंत समृद्ध, शिक्षाप्रद और प्रेरणादायक अनुभव रहा है।

From the Editor | संपादक की ओर से

Shafaque

Curiosity has always taken me to places and asked questions which were always directed towards my father. His love for poetry and people like Faiz and Bulle Shah had always surrounded me and an answer to my many whimsical questions, gave me an imagination and a different perception of seeing people differently. Our culture has many histories, different ways of asking whether it may be good or bad, but somehow has shaped today's society's narrative that still burdens us.

I have always been drawn to people who do not follow the given paths in a traditional manner, rather they move within those lines in their own rhythms that drive them. Encountering the stories of these individuals took me on a journey to understand them more closely. Until then I had only read enough books, poetries and met a few people in college. But this was different. Their ambitions, experiences, tenacity and relationships were more to them, that gave them hope to move forward.

Reading and editing the stories of the fellows I realized the peculiarity they all have within their journeys but at the same time a parallelism that drives them towards their goals. What stayed with me is how with integrity and kindness with which they approached their work and their lives. Their growth could be seen in the choices they made, in the generosity they showed to others, in their willingness to keep learning, and in their dedication to the communities around them.

Their experiences also made me look at my own journey differently. I grew up asking questions, exploring unfamiliar ideas, and sometimes choosing directions that others did not fully understand. Over time, I have realised that stepping beyond what is familiar can help us recognise what truly interests us, discover abilities we did not know we had, and develop a stronger sense of purpose.

For me, this book is a celebration of eagerness, dedication and altruism embodied by these individuals. My association with them is a very small chapter in their much longer journeys, but learning about their lives has deeply enriched my own understanding. They have shown me that thoughtful choices, pursued with patience, care, and consistency, can create meaningful possibilities not only for ourselves, but also for the people around us.

शफ़ाक़

जिज्ञासा मुझे हमेशा नई जगहों तक ले जाती रही और ऐसे प्रश्न पूछने के लिए प्रेरित करती रही, जिनका रुख अक्सर मेरे पिता की ओर होता था। कविता से उनका प्रेम और फ़ैज़ तथा बुल्ले शाह जैसे कवियों की मौजूदगी मेरे आसपास हमेशा बनी रही। मेरे अनेक कल्पनाशील और अनगढ़ प्रश्नों के उनके उत्तरों ने मेरी कल्पना को विस्तार दिया और मुझे लोगों को एक अलग दृष्टि से देखना सिखाया। हमारी संस्कृति अपने भीतर अनेक इतिहास और प्रश्न पूछने के विविध तरीके समेटे हुए है। वे सही भी हो सकते हैं और गलत भी, लेकिन किसी न किसी रूप में उन्होंने आज के समाज की उस सोच को आकार दिया है, जिसका बोझ हम अब भी ढो रहे हैं।

मुझे हमेशा ऐसे लोगों ने आकर्षित किया है, जो परंपरागत रूप से तय किए गए रास्तों पर नहीं चलते। वे उन्हीं सीमाओं के भीतर रहते हुए भी अपनी लय और अपने भीतर की प्रेरणा के अनुसार आगे बढ़ते हैं। ऐसे लोगों की कहानियों से परिचित होना मुझे एक ऐसी यात्रा पर ले गया, जिसमें मैं उन्हें और निकटता से समझना चाहती थी। तब तक मैंने कुछ किताबें और कविताएँ पढ़ी थीं और कॉलेज में कुछ लोगों से मिली थी, लेकिन यह अनुभव उनसे बिल्कुल अलग था। उनकी आकांक्षाएँ, अनुभव, दृढ़ता और रिश्ते उनके व्यक्तित्व के ऐसे गहरे पक्ष थे, जो उन्हें आगे बढ़ते रहने की आशा देते थे।

फेलोज की कहानियों को पढ़ते और संपादित करते हुए मैंने महसूस किया कि उनकी यात्राओं की अपनी अलग-अलग विशेषताएँ हैं, फिर भी उनमें एक समानता भी है, जो उन्हें उनके लक्ष्यों की ओर बढ़ाती है। मेरे मन में सबसे अधिक यह बात रह गई कि वे अपने काम और जीवन को कितनी ईमानदारी और संवेदनशीलता के साथ देखते हैं। उनका विकास उनके द्वारा लिए गए निर्णयों में, दूसरों के प्रति दिखाई गई उदारता में, लगातार सीखते रहने की उनकी तत्परता में और अपने आसपास के समुदायों के प्रति उनकी प्रतिबद्धता में स्पष्ट दिखाई देता है।

उनके अनुभवों ने मुझे अपनी यात्रा को भी एक अलग दृष्टि से देखने के लिए प्रेरित किया। मैं प्रश्न पूछते हुए, अनजाने विचारों को समझने की कोशिश करते हुए और कभी-कभी ऐसे रास्ते चुनते हुए बड़ी हुई, जिन्हें दूसरे लोग पूरी तरह समझ नहीं पाते थे। समय के साथ मैंने जाना कि परिचित सीमाओं से बाहर कदम रखना हमें यह पहचानने में मदद करता है कि वास्तव में हमारी रुचि किसमें है। इससे हम अपने भीतर छिपी उन क्षमताओं को खोज पाते हैं, जिनके बारे में हमें स्वयं भी पता नहीं होता, और अपने जीवन के उद्देश्य को अधिक स्पष्टता से समझने लगते हैं।

मेरे लिए यह पुस्तक इन व्यक्तियों में समाई जिज्ञासा, समर्पण और निःस्वार्थता का उत्सव है। उनके साथ मेरा जुड़ाव उनकी लंबी यात्राओं का केवल एक छोटा-सा अध्याय है, लेकिन उनके जीवन को जानने और समझने ने मेरी अपनी दृष्टि को गहराई से समृद्ध किया है। उन्होंने मुझे सिखाया है कि धैर्य, संवेदनशीलता और निरंतरता के साथ लिए गए विचारपूर्ण निर्णय न केवल हमारे अपने जीवन में, बल्कि हमारे आसपास के लोगों के जीवन में भी सार्थक संभावनाएँ पैदा कर सकते हैं।

From the Editor | संपादक की ओर से

“Journey that reminds us that courage often begins in quiet acts of care.”

Anubha Soni came from Anuppur district in Madhya Pradesh, yet her work took her nearly 1300 kilometers away to the tribal regions of Alirajpur. Her journey into social work began much earlier than her professional life.

As a young girl of about twelve or thirteen, she often witnessed violence against women in her neighborhood. Men returning home drunk would beat their wives, sometimes locking them in rooms for days without food or water. Many of these women would quietly come to Anubha's home, sharing their pain with her mother. Sometimes her mother would secretly give them food because they had been denied even that.

Those moments stayed with her. She could not understand why women had to endure such injustice, or why other women within families often remained silent. Watching two women from her neighborhood eventually leave their homes and children to escape violence left a deep impression on her young mind. From that time onward, she carried a quiet determination that she would one day work against injustice and stand for women's rights and dignity.

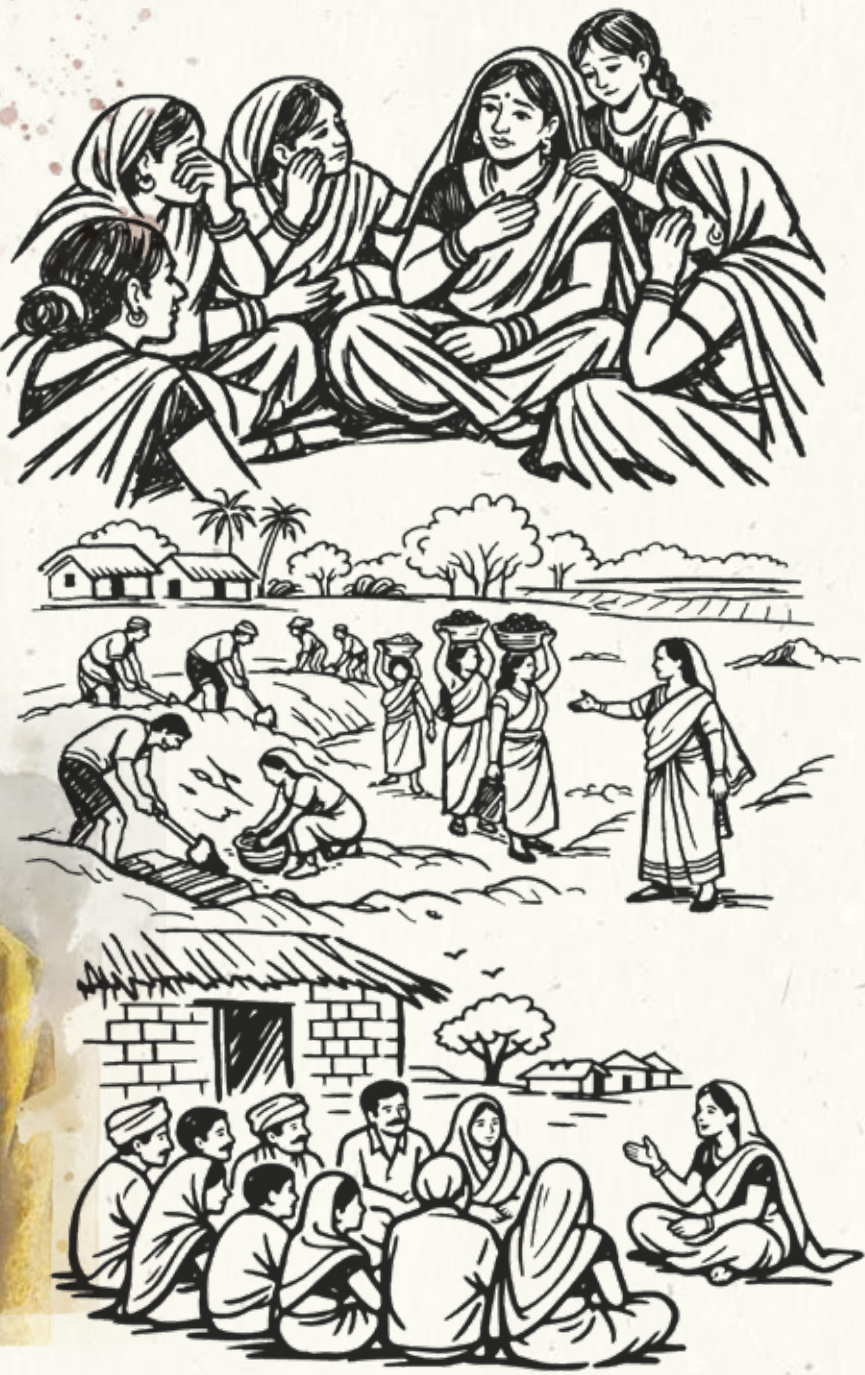
Anubha completed her Bachelor's degree and later received training on issues of health, education, and the rights related to land, forest, and water. During the COVID pandemic in 2020 and 2021, while working in the Bundelkhand region of Tikamgarh district, she helped mobilize communities to dig three ponds and five wells through collective labour. These efforts helped nearly 300 families secure water for irrigation, drinking, and livestock. Through the Meri Pehchan Samvidhan Fellowship, she continued working with tribal communities, helping them understand constitutional values and access land and forest rights.

During the fellowship, Anubha sadly suffered a cardiac arrest and passed away. Yet the work she began continues to live through the communities she stood beside.

Her life reminds us that equality, justice, freedom, and fraternity are not only constitutional principles. They are values that take root in small acts of courage and compassion.

Anubha
अनुभा





“यात्रा जो हमें याद दिलाए है कि साहस अक्सर देखभाल के छोटे और शांत कार्यों से शुरू होता है।”

अनुभा सोनी मध्य प्रदेश के अनुपपुर ज़िले से थीं, लेकिन उनका काम उन्हें लगभग 1300 किलोमीटर दूर अलीराजपुर के आदिवासी इलाकों तक ले गया। सामाजिक कार्य की ओर उनका सफर उनके पेशेवर जीवन से बहुत पहले ही शुरू हो गया था।

जब वे लगभग बारह या तेरह वर्ष की थीं, तब उन्होंने अपने आसपास के मोहल्लों में महिलाओं के खिलाफ होने वाली हिंसा को कई बार देखा। शराब पीकर घर लौटने वाले पुरुष अपनी पत्नियों को मारते-पीटते थे। कई बार उन्हें कई-कई दिनों तक कमरे में बंद कर देते थे और खाने-पीने तक से वंचित रखते थे। ऐसी कई महिलाएँ चुपचाप अनुभा के घर आतीं और अपनी पीड़ा उनकी माँ से साझा करतीं। कभी-कभी उनकी माँ उन्हें चोरी-छिपे खाना भी दे देती थीं, क्योंकि उन्हें अपने घरों में वह भी नहीं मिल पाता था।

ये घटनाएँ अनुभा के मन में गहराई से बस गईं। वे समझ नहीं पाती थीं कि महिलाओं को इतना अन्याय क्यों सहना पड़ता है, और क्यों परिवारों के भीतर ही कई बार दूसरी महिलाएँ भी चुप रहती हैं। अपने पड़ोस की दो महिलाओं को हिंसा से बचने के लिए अपने घर और बच्चों को छोड़कर जाते देखना उनके मन पर गहरी छाप छोड़ गया। उसी समय से उनके भीतर एक शांत लेकिन दृढ़ संकल्प जन्म लेने लगा कि एक दिन वे अन्याय के खिलाफ खड़ी होंगी और महिलाओं के अधिकार और गरिमा के लिए काम करेंगी।

अनुभा ने अपनी स्नातक की पढ़ाई पूरी की और बाद में स्वास्थ्य, शिक्षा तथा जल, जंगल और जमीन से जुड़े अधिकारों के मुद्दों पर प्रशिक्षण प्राप्त किया। वर्ष 2020 और 2021 के कोविड महामारी के दौरान, जब वे बुंदेलखंड क्षेत्र के टीकमगढ़ ज़िले में काम कर रही थीं, तब उन्होंने समुदायों को सामूहिक श्रम के माध्यम से तीन तालाब और पाँच कुएँ बनाने के लिए संगठित किया। इन प्रयासों से लगभग 300 परिवारों को सिंचाई, पीने के पानी और पशुओं के लिए पानी की उपलब्धता सुनिश्चित हुई।

मेरी पहचान संविधान फेलोशिप के माध्यम से उन्होंने आदिवासी समुदायों के साथ काम जारी रखा। इस दौरान उन्होंने समुदायों को संवैधानिक मूल्यों को समझने और भूमि व वन अधिकारों तक अपनी पहुँच बनाने में सहयोग दिया।

फेलोशिप के दौरान ही दुर्भाग्यवश अनुभा को हृदयाघात हुआ और उनका निधन हो गया। लेकिन जो काम उन्होंने शुरू किया था, वह आज भी उन समुदायों के माध्यम से जीवित है जिनके साथ वे खड़ी रहीं।

उनका जीवन हमें याद दिलाता है कि समानता, न्याय, स्वतंत्रता और बंधुत्व केवल संविधान के सिद्धांत नहीं हैं। ये वे मूल्य हैं जो साहस और करुणा के छोटे-छोटे कार्यों से समाज में जड़ें जमाते हैं।

**“The cart is stuck in the sand,
yet my destination lies far ahead.”**

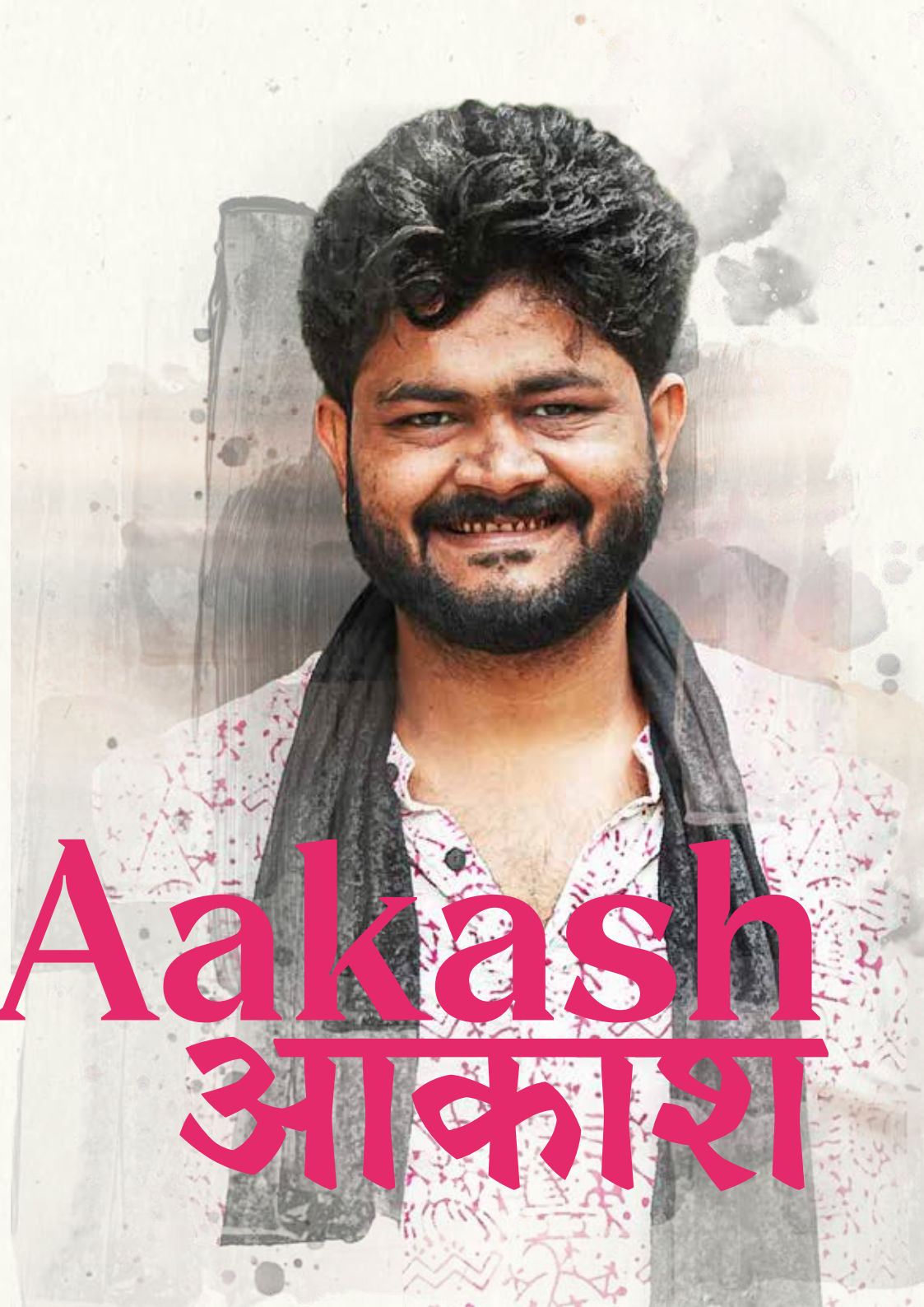
I am 23 years old and live in Suraj Nagar Basti in Bhopal. I come from a large Banjara family with four brothers. Growing up, I saw very closely how poverty and community pressures shape the lives of young people.

In my community, early marriage is common, and caste panchayats closely monitor people's lives, especially the freedom of girls. In such a context, continuing education itself became an act of courage for me.

My elder brothers had to leave their studies, but I continued, first in a government school and later through self-study. Along with my studies, I worked late nights as a party waiter and attended classes during the day. My father's illness, liver cirrhosis, deepened our family's financial crisis, but I still completed Grade 12 with 76 percent. My interest in biology and my belief that education could widen my world kept me going.

There were many setbacks. I struggled for admission, my degrees were interrupted, and the pandemic created more difficulties. During this period, music became my anchor. Through Kabir bhajans, my association with the group 'Tatsang', and discussions with other young people, I began questioning the structural barriers within my community.

Today, as a PHIA fellow, I work with young people, especially girls, to create spaces for dialogue, learning, and confidence-building. My journey is not just about survival. It is about gently and persistently reshaping possibilities.

A portrait of a young man with dark, curly hair and a beard, smiling. He is wearing a light-colored shirt with a red floral pattern and a dark grey scarf. The background is a soft, out-of-focus grey.

Aakash
आकाश



॥ गाड़ी अटकी रेत में, मेरी मजल पड़ी है दूर ॥

मैं 23 वर्ष का हूँ और भोपाल की सूरज नगर बस्ती में रहता हूँ। मेरा परिवार बंजारा समुदाय से है और हम चार भाइयों का बड़ा परिवार हैं। बचपन से ही मैंने बहुत करीब से देखा कि गरीबी और सामाजिक परंपराएँ किस तरह युवाओं के जीवन को प्रभावित करती हैं। हमारे समुदाय में कम उम्र में विवाह होना आम बात है और जाति पंचायतें लोगों के जीवन, विशेषकर लड़कियों की स्वतंत्रता, पर गहरी निगरानी रखती हैं। ऐसे माहौल में पढ़ाई जारी रखना अपने आप में साहस का काम था।

मेरे बड़े भाइयों को अपनी पढ़ाई बीच में छोड़नी पड़ी, लेकिन मैंने अपनी पढ़ाई जारी रखी। पहले सरकारी स्कूल में पढ़ा और बाद में स्वाध्याय के सहारे आगे बढ़ा। पढ़ाई के साथ-साथ मैं रात में पार्टियों में वेंटर का काम करता था और दिन में कक्षाओं में जाता था। इसी दौरान मेरे पिता लीवर सिरोसिस जैसी गंभीर बीमारी से जूझने लगे, जिससे परिवार की आर्थिक स्थिति और कठिन हो गई। फिर भी मैंने 76 प्रतिशत अंकों के साथ बारहवीं की परीक्षा उत्तीर्ण की। जीवविज्ञान में मेरी रुचि और यह विश्वास कि शिक्षा मेरे लिए एक नई दुनिया खोल सकती है, से मुझे लगातार प्रेरणा मिलती रही।

इस यात्रा में कई रुकावटें भी आईं। कॉलेज में प्रवेश पाने के लिए संघर्ष करना पड़ा, पढ़ाई बीच-बीच में बाधित हुई और कोविड-19 महामारी ने मुश्किलें और बढ़ा दीं। इन्हीं दिनों संगीत मेरा सहारा बना। कबीर भजनों, 'तत्संग' समूह से जुड़ाव और अन्य युवाओं के साथ होने वाले संवादों ने मुझे अपने समुदाय के भीतर मौजूद सामाजिक संरचनाओं और असमानताओं पर नए ढंग से सोचने की प्रेरणा दी।

आज फिया फेलो के रूप में मैं युवाओं, विशेषकर लड़कियों, के साथ संवाद, सीखने और आत्मविश्वास बढ़ाने के लिए सुरक्षित और भरोसेमंद स्थान बनाने का काम कर रहा हूँ। मेरी यात्रा केवल संघर्षों से निकलकर आगे बढ़ने की नहीं है, बल्कि धैर्य और निरंतरता के साथ नई संभावनाओं का निर्माण करने की यात्रा है।



“If I didn’t define myself for myself, I would be crunched into other people’s fantasies for me and eaten alive.”

– Audre Lorde

I was born in 1978 in Jabalpur, Madhya Pradesh, into a Muslim family. Within my community, people affectionately know me as ‘Chanda’. My life has been a journey of courage and self-acceptance. When I was only six months old, my parents separated, and I was raised in my maternal uncle’s home.

From an early age, I identified myself as a girl. I found joy in wearing frocks, bangles, bindis, and playing with dolls. But society, family expectations, and constant scrutiny made my childhood deeply difficult.

Despite many adversities, I continued my education and completed an M.Com and an M.A. in Indian Classical Music. My college years were marked by discrimination and traumatic experiences of gender-based violence. But instead of remaining silent, I transformed my pain into purpose. When mainstream employment remained inaccessible because of stigma, I briefly joined the traditional Kinnar community. Yet my vision was always beyond survival. I wanted to create systemic change.

In 2008, I began organizing LGBTQIA+ individuals in Jabalpur. In 2011, I founded Armaan Foundation, a community-based organization that created dignified spaces and livelihood opportunities for transgender persons. As a PHIA Fellow in 2019 and again in 2023, I deepened my work through a constitutional lens, advocating for equality, liberty, justice, and dignity as fundamental rights.

As a poet and writer, I also use literature and public platforms to amplify constitutional values. My dream is simple yet profound that every transgender child should be accepted by their family and live with dignity, freedom, and belonging.



“यदि मैंने स्वयं को अपने लिए परिभाषित नहीं किया होता, तो मैं दूसरों की बनाई हुई कल्पनाओं में कुचल दिया जाता और मिट जाता।”

- ऑड्रे लॉर्ड

मेरा जन्म 1978 में मध्य प्रदेश के जबलपुर में एक मुस्लिम परिवार में हुआ। मेरे समुदाय में लोग मुझे प्यार से 'चंदा' कहकर बुलाते हैं। मेरा जीवन साहस, संघर्ष और स्वयं को स्वीकार करने की यात्रा रहा है। जब मैं केवल छह महीने का था, तभी मेरे माता-पिता अलग हो गए और मेरा पालन-पोषण मेरे मामा के घर हुआ।

बहुत छोटी उम्र से ही मैं स्वयं को एक लड़की के रूप में महसूस करती थी। मुझे फ्रॉक पहनना, चूड़ियाँ और बिंदी लगाना तथा गुड़ियों के साथ खेलना अच्छा लगता था। लेकिन समाज, परिवार की अपेक्षाएँ और लगातार होने वाली निगाहों ने मेरे बचपन को बेहद कठिन बना दिया।

अनेक संघर्षों के बावजूद मैंने अपनी पढ़ाई जारी रखी और एम.कॉम. तथा भारतीय शास्त्रीय संगीत में एम.ए. की डिग्री प्राप्त की। कॉलेज के दिनों में मुझे भेदभाव और लैंगिक हिंसा के कई दर्दनाक अनुभवों का सामना करना पड़ा। लेकिन मैंने चुप रहने के बजाय अपने दर्द को अपने उद्देश्य में बदलने का निर्णय लिया। सामाजिक कलंक के कारण मुख्यधारा में रोजगार के अवसर लगभग बंद थे, इसलिए कुछ समय के लिए मैं पारंपरिक किन्नर समुदाय का हिस्सा बनी। लेकिन मेरा सपना केवल जीवित रहना नहीं था। मैं व्यवस्था में बदलाव लाना चाहती थी।

वर्ष 2008 में मैंने जबलपुर में LGBTQIA+ समुदाय के लोगों को संगठित करना शुरू किया। 2011 में मैंने 'अरमान फाउंडेशन' की स्थापना की, जिसने ट्रांसजेंडर व्यक्तियों के लिए सम्मानजनक और सुरक्षित स्थानों के साथ-साथ आजीविका के अवसर भी विकसित किए। 2019 और 2023 में पीएचआईए फेलो के रूप में जुड़ने के बाद मेरे काम को संवैधानिक मूल्यों की नई दिशा मिली। मैंने समानता, स्वतंत्रता, न्याय और गरिमा को केवल आदर्श नहीं, बल्कि प्रत्येक व्यक्ति के मूलभूत अधिकार के रूप में देखने और उनके लिए आवाज़ उठाने का काम किया।

मैं एक कवयित्री और लेखिका भी हूँ। साहित्य और सार्वजनिक संवाद के माध्यम से मैं संवैधानिक मूल्यों को लोगों तक पहुँचाने का प्रयास करती हूँ। मेरा सपना बहुत सरल, लेकिन गहरा है—कि हर ट्रांसजेंडर बच्चा अपने परिवार द्वारा स्वीकार किया जाए और उसे गरिमा, स्वतंत्रता और अपनत्व के साथ जीने का अधिकार मिले।



“Being able to feel safe with other people is probably the single most important aspect of mental health.”

I work at the intersection of psychology, art, and social justice. I am a Community Mental Health and Dance/Movement Therapy practitioner. I hold a Master's degree in Psychology from Ambedkar University, Delhi, am certified in Dance/Movement Therapy from Tata Institute of Social Sciences, Mumbai, trained in Odissi dance, and am currently pursuing a PhD in Psychology.

I was raised in a deeply political and feminist household. Growing up, I witnessed movements for women's rights, social justice, and constitutional values through the work of my mother, Kalpana Mehta, and my freedom-fighter grandparents. These early influences shaped my commitment to equality, dignity, and solidarity.

My academic journey led me to critical psychology and community mental health, where I began exploring how social structures shape individual suffering. Through Dance/Movement Therapy, I found a powerful medium for collective healing and empowerment.

I work primarily with De-notified and Nomadic communities, creating safe, arts-based therapeutic spaces where women and children can build agency and practice constitutional values in their daily lives. Through the PHIA fellowship, I have been able to integrate care, creativity, and constitutional consciousness, transforming healing into a pathway toward justice and belonging.



“दूसरे लोगों के साथ सुरक्षित महसूस कर पाना, शायद मानसिक स्वास्थ्य का सबसे महत्वपूर्ण पहलू है।”

मैं मनोविज्ञान, कला और सामाजिक न्याय के संगम पर काम करती हूँ। मैं सामुदायिक मानसिक स्वास्थ्य और नृत्य/गतिशीलता चिकित्सा (Dance/Movement Therapy) की प्रैक्टिशनर हूँ। मैंने अंबेडकर विश्वविद्यालय, दिल्ली से मनोविज्ञान में मास्टर डिग्री प्राप्त की है और टाटा सामाजिक विज्ञान संस्थान, मुंबई से नृत्य/गतिशीलता चिकित्सा में प्रमाणित प्रशिक्षण लिया है। मैंने ओडिसी नृत्य का प्रशिक्षण भी प्राप्त किया है और वर्तमान में मनोविज्ञान में पीएचडी कर रही हूँ।

मेरा पालन-पोषण एक गहरे राजनीतिक और नारीवादी परिवेश वाले परिवार में हुआ। बचपन से ही मैंने अपनी माँ, कल्पना मेहता, और स्वतंत्रता सेनानी रहे अपने दादा-दादी/नाना-नानी के कार्यों के माध्यम से महिला अधिकारों, सामाजिक न्याय और संवैधानिक मूल्यों से जुड़े आंदोलनों को बहुत करीब से देखा। इन शुरुआती प्रभावों ने समानता, गरिमा और एकजुटता के प्रति मेरी प्रतिबद्धता को आकार दिया।

मेरी अकादमिक यात्रा मुझे आलोचनात्मक मनोविज्ञान और सामुदायिक मानसिक स्वास्थ्य के क्षेत्र में ले गई, जहाँ मैंने यह समझना शुरू किया कि सामाजिक संरचनाएँ किस प्रकार व्यक्ति के दुःख और पीड़ा को प्रभावित करती हैं। नृत्य/गतिशीलता चिकित्सा के माध्यम से मुझे सामूहिक उपचार, सशक्तिकरण और बदलाव का एक प्रभावशाली माध्यम मिला।

मैं मुख्य रूप से विमुक्त और घुमंतू समुदायों के साथ काम करती हूँ। मेरा प्रयास कला-आधारित, सुरक्षित और उपचारात्मक स्थान तैयार करना है, जहाँ महिलाएँ और बच्चे अपनी निर्णय लेने की क्षमता, आत्मविश्वास और स्वायत्तता को मजबूत कर सकें तथा अपने दैनिक जीवन में संवैधानिक मूल्यों को व्यवहार में उतार सकें।

PHIA फेलोशिप के माध्यम से मुझे देखभाल, रचनात्मकता और संवैधानिक चेतना को एक साथ जोड़ने का अवसर मिला है। इस प्रक्रिया में उपचार केवल व्यक्तिगत स्तर तक सीमित नहीं रहता, बल्कि न्याय, गरिमा और अपनेपन की ओर बढ़ने का एक मार्ग बन जाता है।

"And each and every one of us, including you and me, has both femininity and masculinity in us in varying degrees and shades. Only when we learn to embrace both can we attain harmonious oneness"
- Shams Tabrizi

From the moment I refused to accept chores labeled "for women" and instead ran alongside my brother to fetch water from a mile away and fill the water tanks, tasks reserved for boys, I knew I was different. Not different in defiance alone, but in the way I never saw the world through a gendered lens. I questioned what was assigned, challenged what was expected, and pushed back against the limits placed around me. That instinct to resist and redefine has shaped my life, and I have fought every step of the way to carve space beyond those boundaries.

Learning karate was a stepping stone in my journey. I began after finishing school, driven by my natural love for high energy sports. At first, I kept it hidden from my parents but I enjoyed every second of it.

Over time, I realized how important self-defence truly was, not just for protection but for confidence and awareness. My interest grew stronger as I witnessed how common harassment was around me and the silent trauma many of my friends carried. One incident that shook me deeply was seeing a close friend fall into severe depression after what she had experienced.

This one incident is one of the main reasons why I started looking at self-defence in not just one degree but also in the other aspects too. It was no longer just about physical strength, but about mental resilience and emotional safety. Karate helped me feel more capable, steady, and prepared to stand up not just for myself, but for others as well. With Tinka Foundation, I learned a lot about the importance of social justice, mental health, constitutional rights and gender equality. I began sharing what I was learning about self-defence with young girls. The Meri Pehchan Samvidhan Fellowship introduced me to the Indian Constitution in a meaningful way, helping me see how gender equality is rooted in constitutional values and fundamental rights. This deepened my understanding of social justice and gave my work clearer direction and language. It marked the beginning of my journey once again this time with greater awareness, humility, and a renewed sense of purpose.

I continue to engage in karate training, gender awareness efforts, and conversations around mental health, trying to consciously ground my practice in the constitutional principles of equality, dignity and freedom.



“हम सबके भीतर—तुम और मैं सहित—स्त्रीत्व और पुरुषत्व दोनों ही अलग-अलग मात्रा और रूपों में मौजूद होते हैं। जब हम इन दोनों को स्वीकार करना सीखते हैं, तभी हम सामंजस्यपूर्ण एकता को प्राप्त कर सकते हैं।”

- शम्स तबरेज़ी

जिस दिन मैंने यह मानने से इनकार कर दिया कि कुछ काम केवल “लड़कियों के लिए” होते हैं और अपने भाई के साथ एक मील दूर से पानी लाकर घर की टंकियाँ भरने लगी—एक ऐसा काम जिसे केवल लड़कों का काम माना जाता था—उसी दिन मुझे एहसास हो गया था कि मैं अलग हूँ। यह अलग होना केवल विरोध करने तक सीमित नहीं था, बल्कि इसलिए भी था क्योंकि मैंने कभी दुनिया को स्त्री-पुरुष के चरम से नहीं देखा। जो भूमिकाएँ मुझे सौंप दी गई थीं, मैंने उन पर सवाल उठाए; जो अपेक्षाएँ मुझसे की जाती थीं, उन्हें चुनौती दी; और मेरे चारों ओर खींची गई सीमाओं को स्वीकार करने से इनकार किया। विरोध करने और अपनी राह स्वयं बनाने की यही प्रवृत्ति मेरे जीवन की दिशा बन गई। उन सीमाओं से परे अपनी जगह बनाने के लिए मैंने हर कदम पर संघर्ष किया है।

कराटे सीखना मेरी इस यात्रा का एक महत्वपूर्ण पड़ाव था। स्कूल की पढ़ाई पूरी करने के बाद मैंने इसकी शुरुआत की। तेज़-रफ़्तार और ऊर्जावान खेलों के प्रति मेरा स्वाभाविक लगाव ही मुझे इसकी ओर ले गया। शुरुआत में मैंने यह बात अपने माता-पिता से छिपाकर रखी, लेकिन कराटे का हर पल मुझे बेहद पसंद आता था।

धीरे-धीरे मुझे एहसास हुआ कि आत्मरक्षा केवल अपनी सुरक्षा का साधन नहीं है, बल्कि यह आत्मविश्वास और सजगता का भी स्रोत है। जैसे-जैसे मैंने अपने आसपास छेड़छाड़ की घटनाओं को आम होते देखा और अपनी कई सहेलियों के भीतर छिपे मौन आघात को महसूस किया, आत्मरक्षा के प्रति मेरी रुचि और गहरी होती गई। एक घटना ने मुझे भीतर तक झकझोर दिया—मेरी एक करीबी दोस्त अपने साथ हुई घटना के बाद गहरे अवसाद में चली गई।

यही घटना उन प्रमुख कारणों में से एक बनी, जिसने मुझे आत्मरक्षा को केवल शारीरिक प्रशिक्षण के रूप में नहीं, बल्कि उसके अन्य आयामों से भी जोड़कर देखने के लिए प्रेरित किया। मेरे लिए यह अब केवल शारीरिक शक्ति का प्रश्न नहीं रह गया था; यह मानसिक दृढ़ता और भावनात्मक सुरक्षा का भी विषय बन गया था। कराटे ने मुझे अधिक सक्षम, संतुलित बनाया और मेरा आत्मविश्वास बढ़ाया। कराटे ने मुझे केवल अपने लिए ही नहीं, बल्कि दूसरों के लिए भी आवाज़ उठाने और उनके साथ खड़े होने का साहस दिया।

तिंका फ़ाउंडेशन के साथ जुड़कर मैंने सामाजिक न्याय, मानसिक स्वास्थ्य, संवैधानिक अधिकारों और जेंडर समानता के महत्व को गहराई से समझा। मैंने आत्मरक्षा के बारे में जो कुछ सीखा था, उसे युवा लड़कियों के साथ साझा करना शुरू किया। मेरी पहचान संविधान फ़ेलोशिप ने मुझे भारतीय संविधान को एक नए और सार्थक दृष्टिकोण से समझने का अवसर दिया। मैंने महसूस किया कि जेंडर समानता केवल एक सामाजिक विचार नहीं, बल्कि संविधान के मूल्यों और मौलिक अधिकारों में गहराई से निहित है। इससे सामाजिक न्याय के प्रति मेरी समझ और स्पष्ट हुई तथा मेरे काम को नई दिशा और नई भाषा मिली। यह मेरी यात्रा की एक नई शुरुआत थी—इस बार अधिक जागरूकता, अधिक विनम्रता और उद्देश्य की नई स्पष्टता के साथ। आज भी मैं कराटे का अभ्यास, जेंडर समानता पर संवाद और मानसिक स्वास्थ्य से जुड़े प्रयास जारी रखे हुए हूँ। मेरा प्रयास रहता है कि मेरे काम की बुनियाद संविधान के उन मूल सिद्धांतों पर टिकी रहे, जो समानता, गरिमा और स्वतंत्रता की बात करते हैं।

What you seek is seeking you.

– Rumi

My earliest memories are of walking long roads between home, school, and the fields. Those journeys taught me responsibility early, but they also taught me to observe the lives of people around me very closely.

I was born in Oon Khurd, a small village in Khargone, in a farming family where life was shaped by hard work, seasons, and shared responsibilities. My days moved between school, home, and the fields. In those everyday routines, I learned not only responsibility, but also how closely women's lives were tied to care, sacrifice, and resilience.

Like many girls in villages, there were expectations around what my future should look like. Questions around marriage came early. People often wondered how long I would study. But inside my home, there was also trust. My parents, especially my father, believed I should study and become independent. That belief gave me courage.

He once hoped I would become a doctor. That did not happen. For a long time, I carried the feeling that I had left that dream unfinished. But with time, life showed me another path.

As I grew older, I saw women silenced in their own homes, girls left out of decisions, and many voices going unheard. That slowly led me toward social work. Over the years, working with women and communities taught me that change often begins quietly with trust, conversation, and someone speaking for the first time.

Through the Meri Pehchan Samvidhan Fellowship, this understanding became stronger. It helped me create spaces where women could come together, speak openly, and recognise their own strength.

I may not have become a doctor in the way my father once imagined. But in my own way, I still work toward healing, restoring confidence, voice, and dignity where it has been missing for far too long.

A portrait of a woman with dark hair pulled back, wearing a blue and white striped garment. She has a bindi on her forehead and is smiling slightly. The background is a light, textured wash of colors.

नीतू
Neetu



“जिसकी तुम तलाश कर रहे हो, वह भी तुम्हारी तलाश में है।”

- रूमी

मेरी बचपन की सबसे पुरानी यादें घर, स्कूल और खेलों के बीच की उन लंबी पगडंडियों से जुड़ी हैं, जिन पर मैं रोज चला करती थी। उन्हीं रास्तों ने मुझे छोटी उम्र में जिम्मेदारियाँ निभाना सिखाया, और साथ ही अपने आसपास के लोगों के जीवन को ध्यान से देखना भी।

मेरा जन्म खरगोन जिले के छोटे से गाँव ऊन खुर्द में एक किसान परिवार में हुआ। हमारा जीवन खेती, मौसम और परिवार की साझा जिम्मेदारियों के इर्द-गिर्द चलता था। स्कूल से लौटकर खेलों का काम करना और घर की जिम्मेदारियाँ निभाना मेरे रोजमर्रा का हिस्सा था। इन्हीं अनुभवों के बीच मैंने बहुत करीब से देखा कि महिलाओं का जीवन देखभाल, त्याग और धैर्य से बना होता है।

गाँव की दूसरी लड़कियों की तरह मेरे भविष्य को लेकर भी लोगों की अपनी अपेक्षाएँ थीं। कम उम्र से ही शादी की बातें होने लगी थीं और अक्सर पूछा जाता था कि “आखिर कितनी पढ़ाई करोगी?” लेकिन मेरे घर में भरोसे का माहौल था। मेरे माता-पिता, विशेषकर मेरे पिता, चाहते थे कि मैं पढ़ूँ, अपने पैरों पर खड़ी होऊँ और अपनी पहचान बनाऊँ। उनका यही विश्वास मेरी सबसे बड़ी ताकत बन गया।

पिताजी का सपना था कि मैं डॉक्टर बनूँ। वह सपना पूरा नहीं हो सका। लंबे समय तक मुझे लगता रहा कि मैं उनकी उम्मीदों पर खरी नहीं उतर पाई। लेकिन समय के साथ जीवन ने मुझे एक अलग राह दिखा दी।

जैसे-जैसे मैं बड़ी हुई, मैंने देखा कि कितनी महिलाएँ अपने ही घरों में चुप रह जाती हैं, कितनी लड़कियाँ अपने जीवन से जुड़े फैसलों में शामिल नहीं होतीं, और कितनी आवाज़ें कभी सुनाई ही नहीं देतीं। शायद यहीं से मेरा झुकाव सामाजिक कार्य की ओर हुआ। सालों से महिलाओं और समुदायों के साथ काम करते हुए मैंने सीखा कि बदलाव अक्सर बहुत शांत तरीके से शुरू होता है—विश्वास जीतने से, संवाद से, और उस पहली आवाज़ से जो लंबे समय बाद बोलने का साहस करती है।

‘मेरी पहचान संविधान’ फेलोशिप ने इस समझ को और गहरा किया। इसने मुझे ऐसे सुरक्षित और भरोसेमंद मंच बनाने का अवसर दिया, जहाँ महिलाएँ एक साथ बैठ सकें, खुलकर अपनी बात कह सकें और अपनी ताकत को स्वयं पहचान सकें।

मैं शायद उस अर्थ में डॉक्टर नहीं बन सकी, जैसा मेरे पिता चाहते थे। लेकिन आज भी मैं अपने तरीके से उपचार का ही काम कर रही हूँ—उन लोगों के जीवन में आत्मविश्वास, आवाज़ और गरिमा को फिर से जीवित करने का, जिनसे यह बहुत पहले छिन गई थी।



**“Our identity is not what separates us.
It is what teaches us how to stand with
dignity.”**

I still remember standing outside the Gram Panchayat office, holding my papers in my hand.

I had gone there to apply for my caste and income certificates. It felt like an ordinary task. But what I carried back that day was not paperwork, it was humiliation. Instead of help, I was met with untouchability and words that made me feel as if my identity itself was something to be ashamed of. For days after that, I stopped going to school. A single question kept returning to me: Is being Adivasi a weakness?

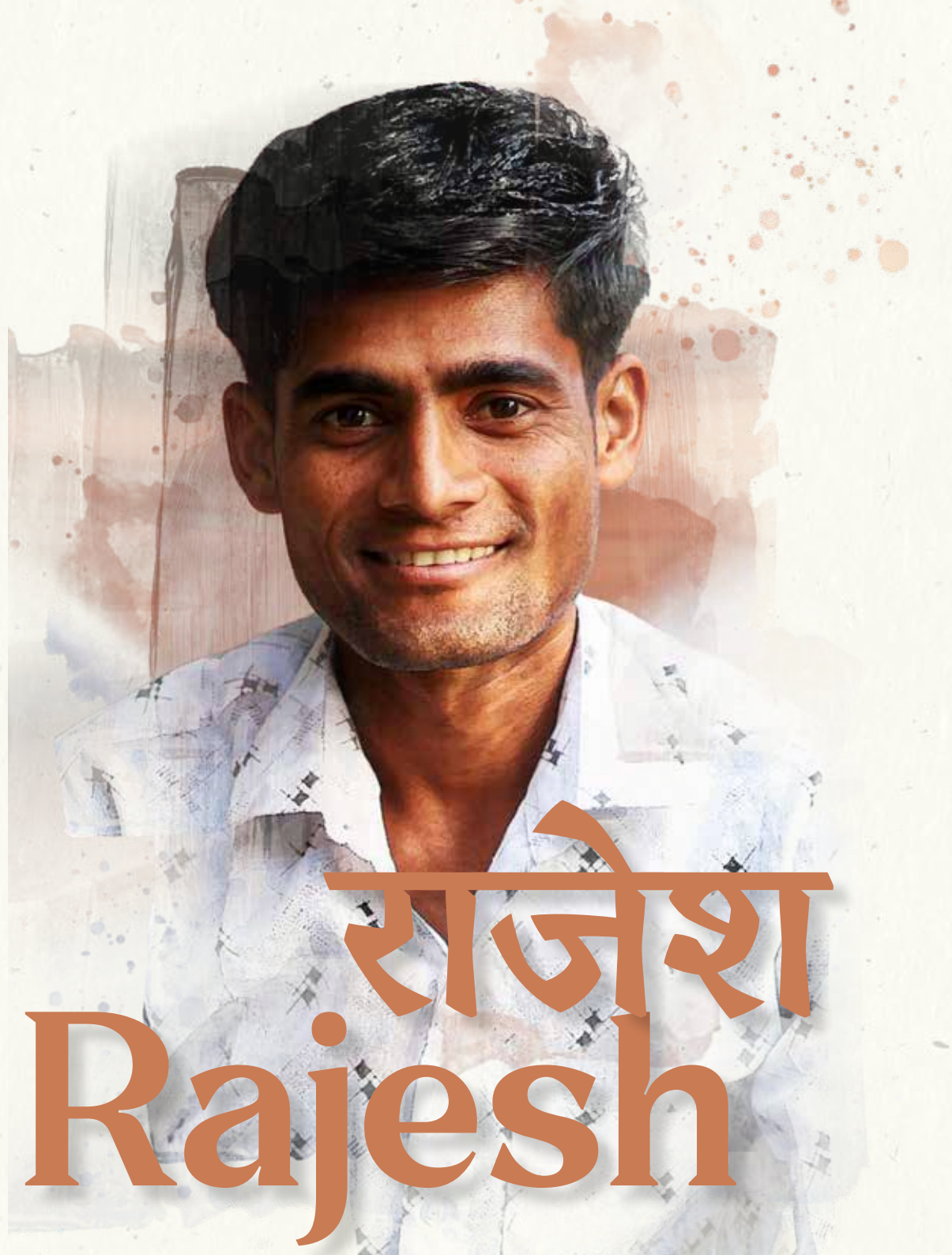
That question stayed with me for a long time. But slowly, it changed.

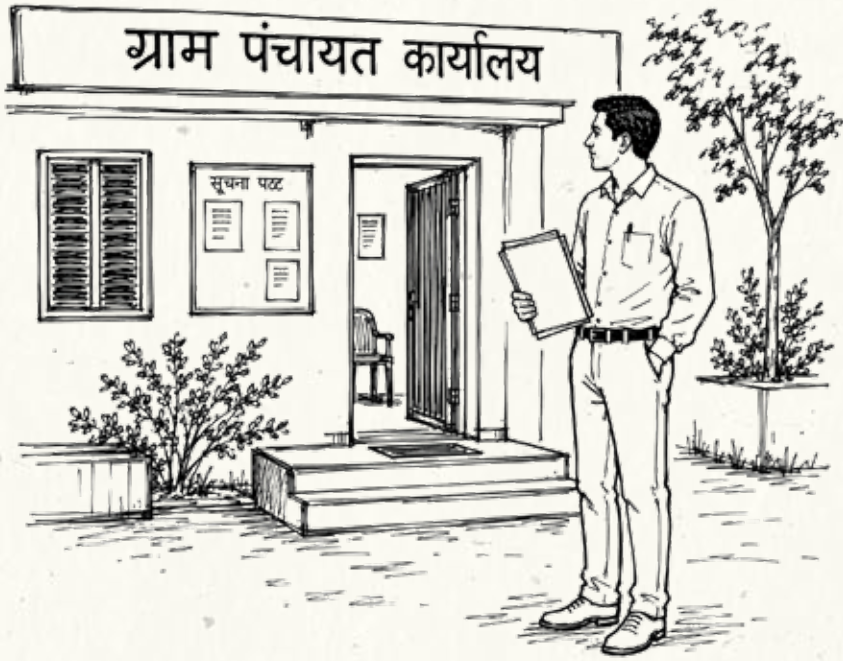
With the support of my father, friends, and the spaces I began entering through community meetings, I found a new language for what I had felt that day: equality, dignity, justice. I began to understand that what I had experienced was not personal failure. It was part of a larger reality many in our communities continue to face.

Through my journey with Ekta Parishad, and later through the Meri Pehchan Samvidhan Fellowship, that understanding became clearer. I saw how issues like forest rights, access to documents, education, and healthcare are all connected to dignity and constitutional rights.

Today, I work with Barela, Korku, and Gond communities, facilitating conversations in villages and Panchayats around rights, identity, and the Constitution. I encourage people to ask questions, speak without fear, and recognise their own strength.

What once felt like shame has become the reason I do this work. The question that once unsettled me now gives me direction and a deep sense of pride in who we are.





“हमारी पहचान हमें दूसरों से अलग करने के लिए नहीं होती, बल्कि गरिमा के साथ खड़े होना सिखाने के लिए होती है।”

आज भी मुझे वह दिन साफ़ याद है, जब मैं अपने हाथों में कुछ कागज़ लेकर ग्राम पंचायत के दफ़्तर के बाहर खड़ा था।

मैं केवल अपनी जाति और आय प्रमाण पत्र बनवाने गया था। यह मेरे लिए एक सामान्य प्रक्रिया होनी चाहिए थी। लेकिन उस दिन मैं कागज़ों से ज़्यादा अपने साथ अपमान लेकर लौटा। मदद मिलने के बजाय मुझे छुआछूत का सामना करना पड़ा और ऐसे शब्द सुनने पड़े, जिन्होंने मुझे यह महसूस कराया कि मानो मेरी पहचान ही शर्म की बात हो। उस घटना के बाद कई दिनों तक मैं स्कूल नहीं गया। मेरे मन में बार-बार एक ही सवाल उठता रहा—क्या आदिवासी होना मेरी कमजोरी है?

यह सवाल लंबे समय तक मेरे भीतर बना रहा। लेकिन धीरे-धीरे इसका अर्थ बदलने लगा।

अपने पिता, दोस्तों और समुदाय के बीच होने वाली बैठकों से जुड़ते हुए मुझे उन भावनाओं को समझने की नई भाषा मिली—समानता, गरिमा और न्याय। तब मुझे एहसास हुआ कि जो मेरे साथ हुआ, वह केवल मेरा व्यक्तिगत अनुभव नहीं था। यह उस व्यापक अन्याय का हिस्सा था, जिसका सामना आज भी हमारे समुदाय के अनेक लोग कर रहे हैं।

एकता परिषद के साथ काम करने और बाद में 'मेरी पहचान संविधान' फेलोशिप से जुड़ने के बाद मेरी यह समझ और गहरी हुई। मैंने जाना कि वनाधिकार, आवश्यक दस्तावेज़ों तक पहुँच, शिक्षा और स्वास्थ्य जैसी समस्याएँ केवल सुविधाओं का प्रश्न नहीं हैं; वे सम्मान, समान अवसर और संवैधानिक अधिकारों से गहराई से जुड़ी हुई हैं।

आज मैं बरेला, कोरकू और गोंड समुदायों के साथ काम करता हूँ। गाँवों और ग्राम पंचायतों में संवाद के माध्यम से लोगों को उनके अधिकारों, पहचान और संविधान से जोड़ने का प्रयास करता हूँ। मैं लोगों को सवाल पूछने, बिना डर अपनी बात रखने और अपनी सामूहिक शक्ति को पहचानने के लिए प्रेरित करता हूँ।

जिस पहचान को कभी मैं शर्म का कारण समझने लगा था, वही आज मेरे काम की सबसे बड़ी प्रेरणा है। जो सवाल कभी मुझे भीतर तक विचलित करता था, वही आज मुझे दिशा देता है और अपनी पहचान पर गर्व करना सिखाता है।



“Education, for me, was never only about learning to read. It was about learning to ask why.”

I grew up in a village in Panna district, Madhya Pradesh, with questions that stayed with me from an early age. Why were girls treated differently? Why did caste decide dignity? Why did some people get heard while others remained invisible? I did not always have the words for these questions, but they shaped how I saw the world.

Education became my first way of responding.

In 2014, I joined Samavesh Sanstha and began working with children who had dropped out of school, especially those from migrating families. I started an activity centre where learning could feel joyful again through stories, art, games, and simple experiments. Watching children return to learning with curiosity and confidence changed me deeply.

Over the years, my work expanded with women's groups, teachers, Anganwadi workers, and Panchayats. I worked closely on education, livelihoods, and creating spaces where women and children could participate with confidence. Through this journey, I saw clearly that real change is not built through infrastructure alone; it begins when people feel seen, heard, and included.

Through the Meri Pehchan Samvidhan Fellowship, my work became more deeply rooted in constitutional values of equality, liberty, and justice. Today, through dialogue, songs, theatre, and community meetings, I continue working with children and communities so that more people can recognise their rights, raise their voices, and imagine a future with dignity.

My hope is simple that no one's opportunities are limited by caste, gender, or circumstance, and that learning becomes a path to both freedom and fairness.





“मेरे लिए शिक्षा केवल पढ़ना-लिखना सीखने का माध्यम नहीं थी, बल्कि यह सीखने का अवसर थी कि सवाल कैसे पूछे जाएँ।”

मध्य प्रदेश के पन्ना जिले के एक छोटे से गाँव में मेरा बचपन ऐसे सवालों के साथ बीता, जिनके जवाब मुझे बहुत बाद में मिले। लड़कियों के साथ अलग व्यवहार क्यों होता है? किसी की गरिमा उसकी जाति से क्यों तय होती है? कुछ लोगों की बात सुनी जाती है, जबकि कुछ लोग हमेशा अनदेखे क्यों रह जाते हैं? उस समय मेरे पास इन सवालों को व्यक्त करने के लिए शब्द नहीं थे, लेकिन इन्हीं सवालों ने दुनिया को देखने का मेरा नज़रिया बनाया।

इन सवालों का पहला जवाब मुझे शिक्षा में मिला।

साल 2014 में मैंने समावेश संस्था के साथ काम शुरू किया। मेरा पहला काम उन बच्चों के साथ था जो पढ़ाई बीच में छोड़ चुके थे, विशेषकर प्रवासी परिवारों के बच्चे। मैंने एक गतिविधि केंद्र की शुरुआत की, जहाँ कहानियों, कला, खेलों और छोटे-छोटे प्रयोगों के माध्यम से सीखने को फिर से आनंददायक बनाया गया। बच्चों को दोबारा जिज्ञासा और आत्मविश्वास के साथ सीखते हुए देखना मेरे अपने जीवन का भी एक महत्वपूर्ण सीखने का अनुभव था।

समय के साथ मैंने महिलाओं के समूहों, शिक्षकों, आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं और ग्राम पंचायतों के साथ काम करना शुरू किया। मैंने शिक्षा, आजीविका और ऐसे सुरक्षित स्थान बनाने का काम किया, जहाँ महिलाएँ और बच्चे आत्मविश्वास के साथ अपनी बात रख सकें। यह काम करते हुए मैंने एक बात बहुत स्पष्ट रूप से समझी—परिवर्तन केवल भवन या सुविधाएँ बनाने से नहीं आता। बदलाव तब शुरू होता है जब लोगों को यह महसूस होता है की उनको सचमुच सुना, समझा और शामिल किया जा रहा है।

‘मेरी पहचान संविधान’ फेलोशिप ने मेरे काम को समानता, स्वतंत्रता और न्याय जैसे संवैधानिक मूल्यों से और गहराई से जोड़ा। आज मैं संवाद, गीत, नुक्कड़ नाटक और सामुदायिक बैठकों के माध्यम से बच्चों और समुदायों के साथ काम करती हूँ, ताकि अधिक से अधिक लोग अपने अधिकारों को समझें, अपनी आवाज़ बुलंद करें और गरिमा के साथ एक बेहतर भविष्य की कल्पना कर सकें।

मेरा सपना सरल है—किसी भी व्यक्ति के अवसर उसकी जाति, लिंग या परिस्थितियों से सीमित न हों, और शिक्षा हर व्यक्ति के लिए समानता, स्वतंत्रता और गरिमापूर्ण जीवन की राह बने।



“A heart that listens deeply can rebuild what fear has broken.”

For many years, I have worked closely with women, children, and communities in Khargone. My work has taken me into homes, lanes, bastis, and conversations where people speak about their worries, their health, their children, and the everyday struggles of life. Over time, I realised that listening itself can be a powerful beginning.

But after the violence in Khargone in 2022, I felt a deeper change around me. Fear had entered everyday life. People who once spoke openly had become cautious. Neighbours who had lived close to one another now carried silence between them. What stayed with me most was not only what had happened, but what remained after it.

That is where my work found a new direction.

Through the Meri Pehchan Samvidhan Fellowship, I began working in riot-affected settlements with women and families around health, nutrition, mental wellbeing, and constitutional values. We started with small conversations. Slowly, those conversations became spaces of trust. Through discussions on dignity, equality, rights, and भाईचारा, I saw people begin to sit together again, listen again, and speak a little more freely.

The fellowship gave me language for something I had always felt deeply that dignity, justice, and belonging must be part of everyday life.

My hope is simple. I want communities to feel connected again. I want women to speak without fear, families to feel supported, and people to see themselves not through division, but through dignity. If my work can help rebuild even a little trust between people, I feel I am doing meaningful work.

A portrait of a woman with dark hair, a bindi, and a slight smile, wearing a patterned sari. The background is a soft, painterly wash of warm colors. The name 'Ranu' is written in large, red, stylized letters across the bottom right of the image.

रानू
Ranu



“जो हृदय सचमुच सुनना जानता है, वह भय से टूटी हुई चीज़ों को भी फिर से जोड़ सकता है।”

कई वर्षों से मैं खरगोन में महिलाओं, बच्चों और विभिन्न समुदायों के साथ काम कर रही हूँ। इस काम ने मुझे घरों, गलियों, बस्तियों और उन अनगिनत संवादों तक पहुँचाया है, जहाँ लोग अपनी चिंताओं, अपने स्वास्थ्य, अपने बच्चों और रोज़मर्रा की मुश्किलों के बारे में खुलकर बात करते हैं। समय के साथ मैंने महसूस किया कि कई बार बदलाव की शुरुआत केवल सुनने से होती है।

लेकिन वर्ष 2022 में खरगोन में हुई हिंसा के बाद मैंने अपने आसपास कुछ और गहरा बदलते हुए देखा। डर लोगों की रोज़मर्रा की ज़िंदगी का हिस्सा बन चुका था। जो लोग पहले खुलकर बात करते थे, वे अब संकोच करने लगे थे। जो पड़ोसी वर्षों से साथ रहते आए थे, उनके बीच अब एक खामोशी आ गई थी। मेरे मन में सबसे ज़्यादा वही बात रह गई—सिर्फ यह नहीं कि क्या हुआ, बल्कि उसके बाद लोगों के बीच क्या बचा।

यहीं से मेरे काम ने एक नई दिशा ली।

‘मेरी पहचान संविधान’ फेलोशिप के माध्यम से मैंने दंगा-प्रभावित बस्तियों में महिलाओं और परिवारों के साथ स्वास्थ्य, पोषण, मानसिक स्वास्थ्य और संवैधानिक मूल्यों पर काम करना शुरू किया। हमने छोटे-छोटे संवादों से शुरुआत की। धीरे-धीरे वही बातचीत भरोसे के सुरक्षित स्थानों में बदलने लगी। गरिमा, समानता, अधिकार और भाईचारे पर होने वाली चर्चाओं के बीच मैंने लोगों को फिर से एक साथ बैठते, एक-दूसरे को सुनते और पहले से अधिक खुलकर अपनी बात कहते देखा।

इस फेलोशिप ने मुझे उन भावनाओं को समझने और व्यक्त करने की भाषा दी, जिन्हें मैं हमेशा भीतर से महसूस करती थी—कि गरिमा, न्याय और अपनापन केवल आदर्श नहीं हैं; वे हर व्यक्ति के रोज़मर्रा के जीवन का हिस्सा होने चाहिए।

मेरा सपना बहुत सरल है। मैं चाहती हूँ कि समुदाय फिर से एक-दूसरे से जुड़ें, महिलाएँ बिना किसी डर के अपनी बात कह सकें, परिवार अपने आसपास सहारा महसूस करें, और लोग एक-दूसरे को विभाजन की नज़र से नहीं, बल्कि गरिमा और समानता की दृष्टि से देखें। यदि मेरा काम लोगों के बीच थोड़ा-सा भी विश्वास वापस ला सके, तो मुझे लगता है कि मेरी यह यात्रा सार्थक है।



“If everything around seems dark, look again, you may be the light.”

– Rumi

My story begins in Shaheed Nagar, in a workers’ settlement where life was built through labour, resilience, and people leaning on one another. Growing up there, I learned early that survival was rarely individual. People shared work, worries, celebrations, and grief. It was in those lanes that I first understood the community.

Later, life brought its own challenges. After my father passed away, everything changed at home. Along with grief came responsibility, financial pressure, and repeated expectations that I should marry and settle down. In that difficult time, my mother stood firmly beside me. Her support gave me the courage to continue my education and choose my own path.

I moved back home, became the sole earner for my family, and began teaching children in the same settlement where I had grown up. While teaching, learning, and standing beside my community, I slowly began to understand what I wanted to do with my life.

Working with children and women showed me that education is much more than literacy. It is confidence. It is questioning injustice. It is recognising one’s own dignity. Through conversations, classrooms, and community spaces, I saw how awareness can slowly become strength.

Today, constitutional values like equality, freedom, and dignity guide both my life and my work. I continue to work with children, women, and communities as a co-learner creating spaces for dialogue, learning, and collective change.

My journey has taught me that when education is rooted in lived realities, it can transform not just one life, but many.





“अगर तुम्हें हर ओर अँधेरा दिखाई दे, तो एक बार फिर देखो—हो सकता है, रोशनी तुम स्वयं हो।”

- रूमी

मेरी कहानी छत्तीसगढ़ के शाहीद नगर की एक मज़दूर बस्ती से शुरू होती है, जहाँ जीवन मेहनत, संघर्ष और एक-दूसरे के सहारे आगे बढ़ता था। वहीं मैंने बचपन में सीखा कि जीवन अकेले नहीं जिया जाता। लोग अपने काम, अपनी परेशानियाँ, अपनी खुशियाँ और अपने दुःख एक-दूसरे के साथ बाँटते थे। उन्हीं गलियों में मैंने पहली बार समुदाय का असली अर्थ समझा।

समय के साथ जीवन ने कई कठिन मोड़ भी दिखाए। पिता के निधन के बाद घर की पूरी परिस्थितियाँ बदल गईं। दुःख के साथ-साथ ज़िम्मेदारियाँ, आर्थिक चुनौतियाँ और जल्दी शादी कर लेने की सामाजिक अपेक्षाएँ भी मेरे सामने थीं। ऐसे समय में मेरी माँ मेरे साथ मजबूती से खड़ी रहीं। उनके विश्वास ने मुझे अपनी पढ़ाई जारी रखने और अपना रास्ता खुद चुनने का साहस दिया।



मैं वापस अपने मोहल्ले लौटी, परिवार की ज़िम्मेदारी संभाली और उसी बस्ती के बच्चों को पढ़ाना शुरू किया, जहाँ मेरा अपना बचपन बीता था। बच्चों के साथ सीखते-सिखाते और अपने समुदाय के साथ खड़े रहते हुए मुझे धीरे-धीरे समझ आने लगा कि मैं अपने जीवन को किस दिशा में ले जाना चाहती हूँ।

बच्चों और महिलाओं के साथ काम करते हुए मैंने जाना कि शिक्षा केवल पढ़ना-लिखना सीखने का नाम नहीं है। शिक्षा आत्मविश्वास देती है, अन्याय पर सवाल उठाना सिखाती है और व्यक्ति को अपनी गरिमा का एहसास कराती है। कक्षाओं, संवादों और सामुदायिक बैठकों के माध्यम से मैंने देखा कि जागरूकता किस तरह धीरे-धीरे लोगों की ताकत बन जाती है।

आज समानता, स्वतंत्रता और गरिमा जैसे संवैधानिक मूल्य मेरे जीवन और मेरे काम, दोनों का आधार हैं। मैं बच्चों, महिलाओं और समुदायों के साथ एक सहयात्री और सह-शिक्षार्थी के रूप में काम करती हूँ, ताकि संवाद, सीखने और सामूहिक बदलाव के लिए सुरक्षित और भरोसेमंद जगहें बन सकें।

मेरी यात्रा ने मुझे यह सिखाया है कि जब शिक्षा लोगों के वास्तविक जीवन और अनुभवों से जुड़ती है, तो वह केवल एक व्यक्ति का नहीं, बल्कि पूरे समुदाय का जीवन बदलने की क्षमता रखती है।

“Some conversations stay with you long after they end.”

In every city, there are people whose labour holds everything together, yet their lives often remain unnoticed.

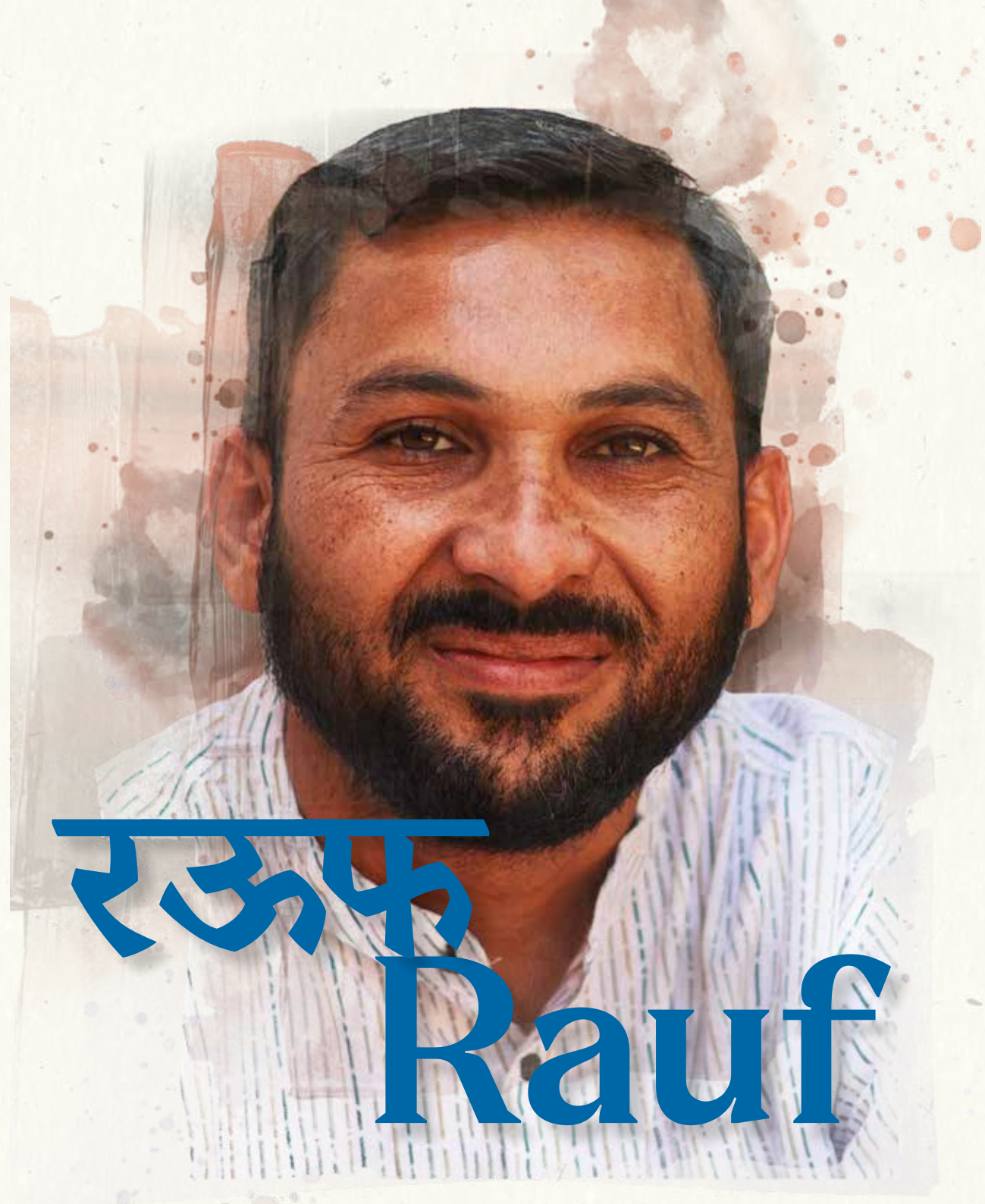
Over the past several years, working closely with domestic workers, construction labourers, and street vendors in Indore has made me see this truth more clearly. Their work is everywhere around us, in our homes, on our roads, in the markets we pass through every day, yet their struggles are rarely seen with the same attention.

I still remember sitting with a group of domestic workers during a meeting. One woman spoke about working for months without receiving wages, yet feeling unable to ask for payment because she feared losing her work. Another shared how she was called by her caste instead of her name. Their words were simple, but they carried years of silence. I came back from that conversation carrying something heavy within me.

From that point on, I began to understand that their struggle is not only about income or livelihood. It is about dignity, respect, and the right to be heard.

For many years, I have worked with workers' communities, trying to create spaces where people can come together, organise, and speak for their rights with confidence. The Meri Pehchan Samvidhan Fellowship gave deeper language to this work through the values of justice, equality, liberty, and fraternity. It helped me see the Constitution not just as a document, but as something people can draw strength from in everyday life.

Today, I continue to work in communities across Indore, building conversations around rights, dignity, and brotherhood. My hope is simple: that every worker feels seen with respect, every voice finds space to be heard, and communities grow stronger through solidarity rather than division.





“कुछ संवाद खत्म होने के बाद भी लंबे समय तक हमारे भीतर जीवित रहते हैं।”

हर शहर में कुछ ऐसे लोग होते हैं, जिनकी मेहनत पूरे शहर को चलाए रखती है, लेकिन उनका जीवन अक्सर लोगों की नज़रों से ओझल रह जाता है।

पिछले कई वर्षों से इंदौर में घरेलू कामगारों, निर्माण श्रमिकों और रेहड़ी-पटरी पर काम करने वाले लोगों के साथ काम करते हुए मैंने इस सच को बहुत करीब से देखा है। उनका श्रम हमारे घरों, सड़कों और बाज़ारों में हर जगह दिखाई देता है, लेकिन उनके संघर्षों पर शायद ही कभी उतना ध्यान दिया जाता है।

मुझे आज भी वह बैठक याद है, जहाँ मैं कुछ घरेलू कामगार महिलाओं के साथ बैठा था। एक महिला ने बताया कि उसने कई महीनों तक काम किया, लेकिन उसे उसकी मज़दूरी नहीं मिली। फिर भी वह अपनी मेहनताना माँगने की हिम्मत नहीं जुटा पाई, क्योंकि उसे डर था कि कहीं उसका काम ही न छिन जाए। दूसरी महिला ने बताया कि लोग उसे उसके नाम से नहीं, बल्कि उसकी जाति से पुकारते हैं। उनकी बातें बहुत साधारण थीं, लेकिन उनके भीतर वर्षों की चुप्पी और पीड़ा छिपी हुई थी। उस दिन मैं अपने साथ केवल उनकी कहानियाँ ही नहीं, बल्कि एक गहरी बेचैनी भी लेकर लौटा।

तभी मुझे समझ आया कि उनका संघर्ष केवल रोज़गार या आय का नहीं है। यह सम्मान, गरिमा और अपनी बात कहने के अधिकार का भी संघर्ष है।

कई वर्षों से मैं श्रमिक समुदायों के साथ काम कर रहा हूँ, ताकि ऐसे सुरक्षित और भरोसेमंद मंच बन सकें जहाँ लोग संगठित होकर अपने अधिकारों के लिए आत्मविश्वास के साथ आवाज़ उठा सकें। ‘मेरी पहचान संविधान’ फेलोशिप ने इस काम को एक नई दृष्टि दी। न्याय, समानता, स्वतंत्रता और बंधुत्व जैसे संवैधानिक मूल्यों ने मुझे यह समझने में मदद की कि संविधान केवल एक दस्तावेज़ नहीं है, बल्कि ऐसा आधार है जिससे लोग अपने रोज़मर्रा के जीवन में शक्ति और भरोसा प्राप्त कर सकते हैं।

आज भी मैं इंदौर के विभिन्न समुदायों के साथ अधिकारों, गरिमा और भाईचारे पर संवाद की प्रक्रिया को आगे बढ़ा रहा हूँ। मेरा सपना बहुत सरल है—हर श्रमिक को सम्मान के साथ देखा जाए, हर आवाज़ को सुना जाए, और हमारे समुदाय विभाजन नहीं, बल्कि एकजुटता और आपसी सम्मान के आधार पर आगे बढ़ें।



“I come from a place where survival itself was a daily act of strength”

My father's hands carried the weight of bonded labour. My mother carried bundles of firewood on her head for miles. I grew up in Nilgadh village in Harda district, in the Korku Adivasi community, watching both of them work with a strength that words cannot fully describe.

We had very little. But my parents held on to one belief that their children should live with dignity.

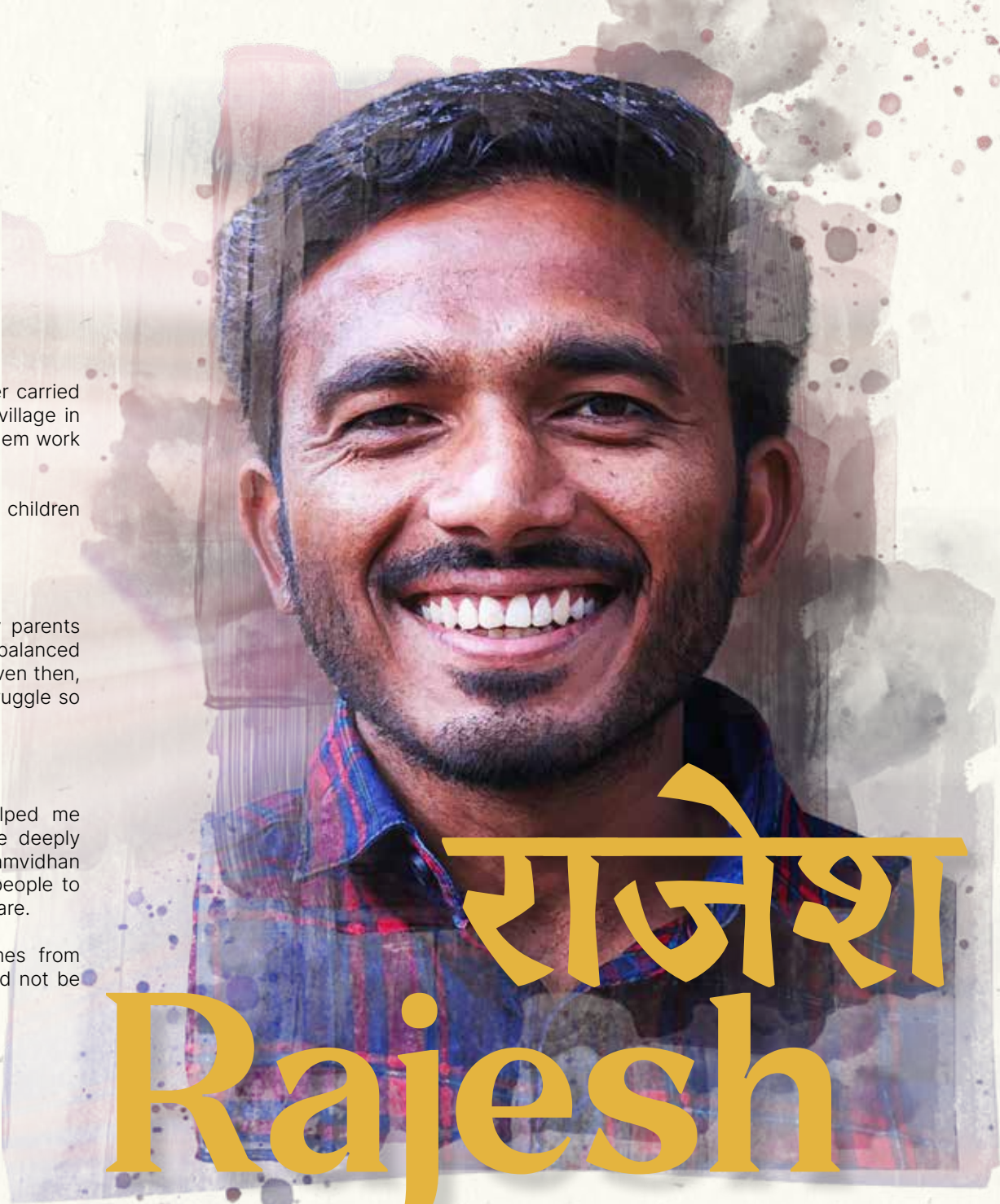
That belief changed the direction of my life.

To protect me and my brother from falling into child labour, my parents sent us away to continue studying. Those years were not easy. I balanced school with farming, household work, and caring for animals. But even then, a question stayed with me: why do some communities have to struggle so hard simply to be seen?

As I grew older, that question became my path.

My journey through education, field work, and fellowships helped me understand how land, identity, youth leadership, and dignity are deeply connected. Through Sajha Netrutva Manch, the Meri Pehchan Samvidhan Fellowship, and now the Dongor Foundation, I work with young people to build leadership rooted in Adivasi identity, equality, and collective care.

For me, this work is personal. It comes from memory. It comes from remembering where I come from, and believing that dignity should not be something people have to fight alone to claim.

A portrait of a smiling man with dark hair and a beard, wearing a blue and red plaid shirt. The background is a light, textured surface with some reddish-brown splatters. The name 'Rajesh' is written in large, bold, yellow Devanagari script over the right side of the portrait.

राजेश
Rajesh



“मैं ऐसी दुनिया से आता हूँ, जहाँ हर दिन जिंदा रहना ही एक साहस का काम था।”

मेरे पिता के हाथों में बंधुआ मज़दूरी का बोझ था और मेरी माँ रोज़ कई किलोमीटर तक सिर पर लकड़ियों के गट्टर ढोकर उन्हें बेचने जाती थीं। मेरा बचपन मध्य प्रदेश के हरदा जिले के नीलगढ़ गाँव में कोरकू आदिवासी समुदाय के बीच बीता। मैंने अपने माता-पिता को दिन-रात मेहनत करते देखा है—इतनी मेहनत, जिसे शब्दों में पूरी तरह बयान करना मुश्किल है। हमारे पास गुज़ारे लायक भी बहुत कम था, लेकिन मेरे माता-पिता के पास एक सपना था—उनके बच्चे सम्मान के साथ जीवन जिएं।

शायद उसी विश्वास ने मेरे जीवन की दिशा बदल दी।

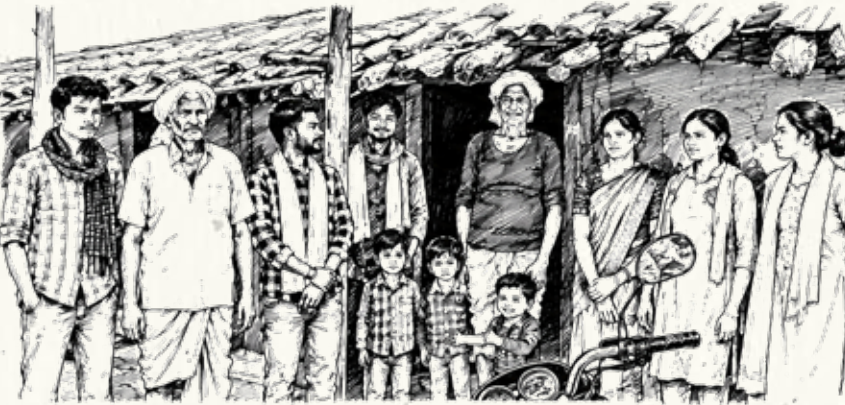
मुझे और मेरे भाई को बाल मज़दूरी के चक्र में फँसने से बचाने के लिए मेरे माता-पिता ने हमें घर से दूर पढ़ने भेज दिया। वे साल आसान नहीं थे। पढ़ाई के साथ खेतों में काम करना, घर के काम संभालना और पशुओं की देखभाल करना मेरी दिनचर्या का हिस्सा था। लेकिन इन सबके बीच एक सवाल हमेशा मेरे भीतर बना रहा—आखिर कुछ समुदायों को केवल अपनी पहचान और अस्तित्व को स्वीकार करवाने के लिए इतना संघर्ष क्यों करना पड़ता है?

समय के साथ यही सवाल मेरे जीवन की दिशा बन गया।

शिक्षा, सामुदायिक काम और विभिन्न फेलोशिप के साथ सफ़र करते समय मैंने समझा कि ज़मीन, पहचान, युवाओं का नेतृत्व और गरिमा—ये सभी एक-दूसरे से गहराई से जुड़े हुए हैं।

साझा नेतृत्व मंच, 'मेरी पहचान संविधान' फेलोशिप और आज डॉगर फाउंडेशन के माध्यम से मैं युवाओं के साथ काम करता हूँ, ताकि वे अपनी आदिवासी पहचान पर गर्व करते हुए समानता, सामूहिकता और संवैधानिक मूल्यों पर आधारित नेतृत्व विकसित कर सकें।

मेरे लिए यह काम केवल एक पेशा नहीं है, बल्कि मेरी अपनी जीवन-यात्रा का विस्तार है। यह उन यादों से जन्मा है, जिनके साथ मैं बड़ा हुआ हूँ। यह उस विश्वास से जुड़ा है कि किसी व्यक्ति या समुदाय को गरिमा पाने के लिए अकेले संघर्ष ना करना पड़े, बल्कि वह हर किसी का स्वाभाविक अधिकार हो।



“Where a path disappears, hope must learn to build another”

In my village, the school stands on the other side of a river. For much of the year, crossing it is simply part of a child's everyday journey. But when the rains arrive, the river rises, the path disappears, and reaching school becomes difficult. What begins as a temporary distance often becomes much more. Children miss school for days, then weeks, and slowly their connection with learning starts to fade. For some, school begins to feel far away not just in distance, but in possibility.

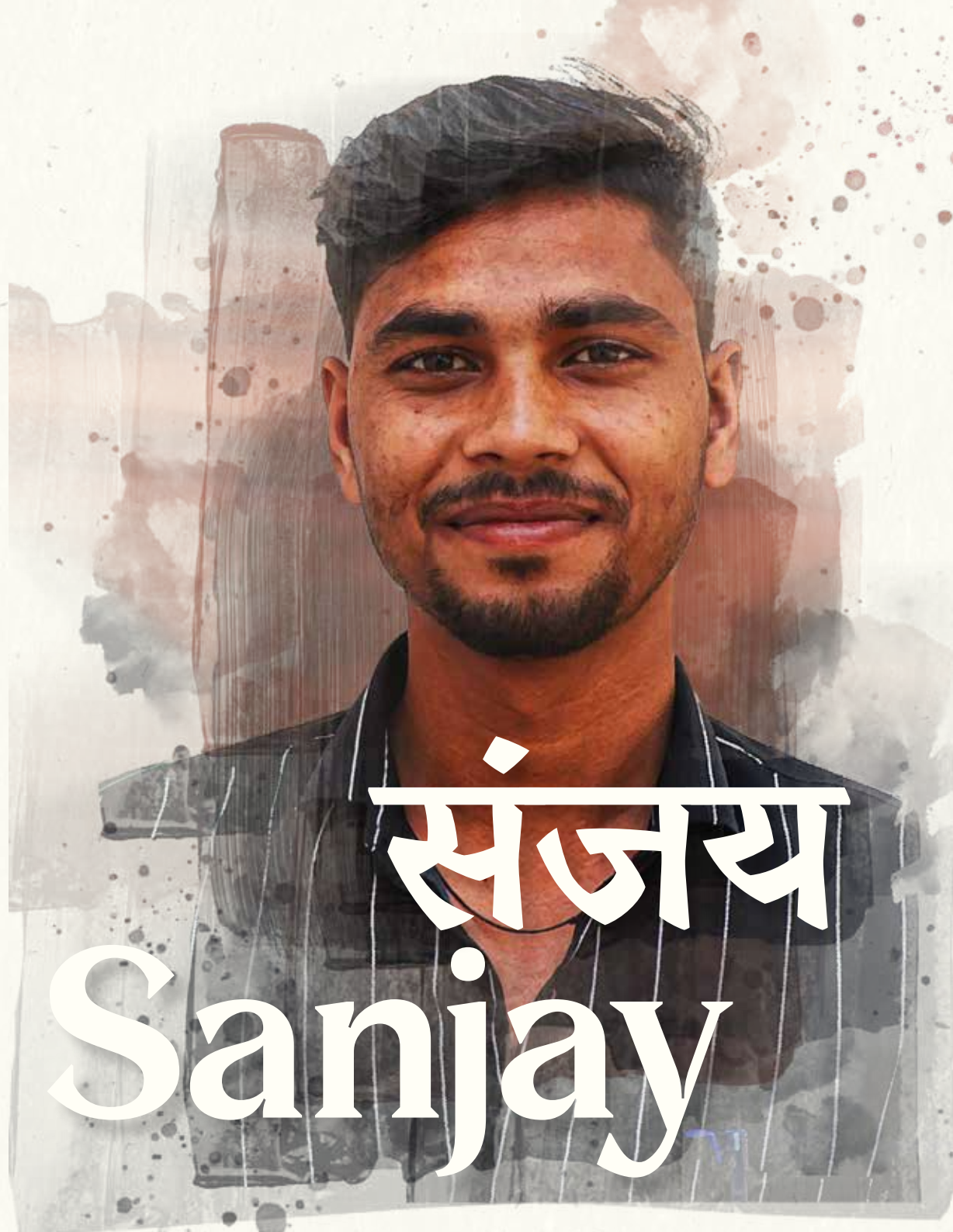
Growing up in Khedakhada Gram Panchayat in Sehore district, I saw this closely. I also saw many families being left out of government schemes, not because they were unwilling, but because they did not have the right information. These realities stayed with me.

Education, for me, has never been only about earning a degree. It has always felt like a way to open doors that often remain closed in our villages.

Through the fellowship, I began spending more time with families in the village, listening to their concerns and sitting with children who had never entered a classroom. That is how Jugnu Pathshala began small learning sessions within the village itself. Slowly, children started coming together. Some appeared for exams for the first time. Others who had never been enrolled in school were registered the following year. Watching them carry school bags across the river fills me with quiet hope.

The fellowship also brought me closer to the Constitution and to the values of equality, dignity, and rights. Alongside working with children, I began supporting elderly villagers with pension applications and speaking about rights in community meetings.

My hope is simple: that no child feels separated from education by a river, and no family feels separated from their rights by lack of awareness.





“जहाँ कोई राह दिखाई नहीं देती, वहाँ उम्मीद अपनी राह स्वयं बना लेती है।”

मेरे गाँव में स्कूल नदी के उस पार है। साल के अधिकांश समय बच्चों के लिए नदी पार करके स्कूल जाना उनकी रोज़मर्रा की जिंदगी का हिस्सा होता है। लेकिन जैसे ही बारिश आती है, नदी का पानी बढ़ जाता है, रास्ता गायब हो जाता है और स्कूल पहुँचना मुश्किल हो जाता है। जो दूरी शुरुआत में कुछ दिनों की होती है, वह धीरे-धीरे बहुत बड़ी बन जाती है। बच्चे पहले कुछ दिन, फिर कई हफ्तों तक स्कूल नहीं जा पाते, और धीरे-धीरे पढ़ाई से उनका जुड़ाव कम होने लगता है। कुछ बच्चों के लिए स्कूल केवल दूरी में ही नहीं, बल्कि एक संभावना के रूप में भी दूर होता चला जाता है।

सीहोर जिले की खेड़ाखाड़ा ग्राम पंचायत में पला-बढ़ा हूँ और मैंने यह सब बहुत करीब से देखा है। मैंने यह भी देखा कि हमारे गाँव के कई परिवार केवल सही जानकारी के अभाव में सरकारी योजनाओं से वंचित रह जाते हैं। यही अनुभव मेरे साथ हमेशा बने रहे।

मेरे लिए शिक्षा कभी केवल डिग्री हासिल करने का माध्यम नहीं रही। यह हमेशा उन दरवाज़ों को खोलने का रास्ता रही है, जो हमारे गाँवों में अक्सर बंद रह जाते हैं।

‘मेरी पहचान संविधान’ फेलोशिप से जुड़ने के बाद मैंने गाँव के परिवारों के साथ अधिक समय बिताना शुरू किया। उनकी बातें सुनीं, उनकी चिंताओं को समझा और उन बच्चों के साथ बैठना शुरू किया जिन्होंने कभी स्कूल का दरवाज़ा तक नहीं देखा था। इसी से जुगनू पाठशाला की शुरुआत हुई—गाँव के भीतर ही छोटे-छोटे सीख सत्रों के रूप में। धीरे-धीरे बच्चे जुड़ने लगे। कुछ ने पहली बार परीक्षा दी, तो कुछ ऐसे बच्चे, जिनका कभी स्कूल में नामांकन ही नहीं हुआ था, अगले वर्ष विद्यालय से जुड़ सके। आज जब मैं उन बच्चों को स्कूल का बस्ता लेकर नदी पार करते देखता हूँ, तो मन में एक शांत-सी उम्मीद जागती है।

इस फेलोशिप ने मुझे संविधान और उसके मूल्यों—समानता, गरिमा और अधिकारों—को और गहराई से समझने का अवसर दिया। बच्चों के साथ काम करने के साथ-साथ मैंने बुजुर्गों को पेंशन जैसी योजनाओं तक पहुँच बनाने में सहयोग देना शुरू किया और सामुदायिक बैठकों में अधिकारों पर संवाद भी शुरू किया।

मेरा सपना बहुत सरल है—कोई भी बच्चा केवल एक नदी की वजह से शिक्षा से दूर न रह जाए, और कोई भी परिवार केवल जानकारी के अभाव में अपने अधिकारों से वंचित न रहे।



“I have spent a lifetime walking with people, and that journey continues to be my deepest source of learning.”

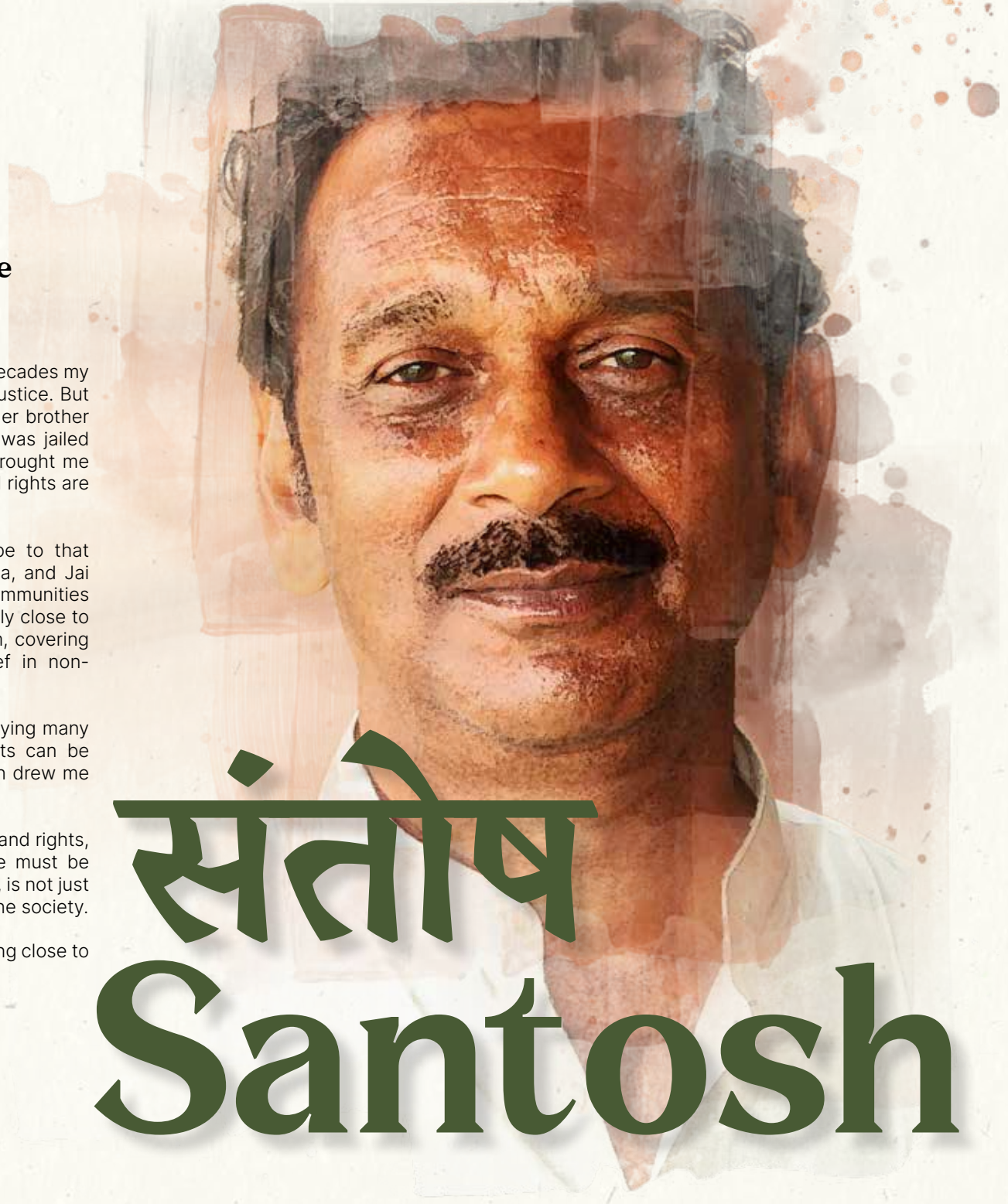
I come from Maihar in Madhya Pradesh, and for more than three decades my work has been rooted in movements for land, forest, water, and justice. But my journey began much earlier, as a young man watching my elder brother participate in farmers’ movements. I still remember the time he was jailed during a protest. Seeing my family go through that experience brought me face to face with injustice very early. It taught me that dignity and rights are not simply given. They are claimed together.

Over the years, my association with Ekta Parishad gave shape to that understanding. Through campaigns like Janadesh, Jansatyagraha, and Jai Jagat, I travelled, organised, listened, and learned alongside communities across the country. The 2019 Jai Jagat padyatra remains especially close to me. Walking from India toward Geneva with an international team, covering thousands of kilometres across countries, deepened my belief in non-violence, solidarity, and collective action.

When the lockdown brought that journey to a halt, I returned carrying many questions. In those years, I saw how easily constitutional rights can be weakened when people are distanced from them. That realization drew me closer to working explicitly around the Constitution.

Today, my work continues through dialogue with communities on land rights, forest rights, equality, justice, and dignity. I believe real change must be social, economic, and political all at once. The Constitution, for me, is not just a legal text. It is a living guide for building a more equal and humane society.

Even now, I continue to learn through study, dialogue, and by staying close to people’s lived realities. That remains my longest journey.



संतोष Santosh



“मैंने जीवन का लंबा समय लोगों के साथ चलते हुए बिताया है, और यही यात्रा आज भी मेरी सबसे गहरी सीख का स्रोत है।”

मैं मध्य प्रदेश के मैहर से आता हूँ। पिछले तीन दशकों से अधिक समय से मेरा काम भूमि, जंगल, पानी और न्याय से जुड़े जन आंदोलनों के साथ गहराई से जुड़ा रहा है। लेकिन मेरी यात्रा किसी औपचारिक भूमिका से बहुत पहले शुरू हुई थी, जब एक युवा के रूप में मैंने अपने बड़े भाई को किसान आंदोलनों में सक्रिय रूप से भाग लेते देखा था। मुझे आज भी वह समय याद है, जब एक आंदोलन के दौरान उन्हें जेल जाना पड़ा। उस अनुभव ने हमारे पूरे परिवार को अन्याय की कठोर सच्चाई से

समय के साथ एकता परिषद से जुड़ाव ने मेरी इस समझ को दिशा दी। जनादेश, जनसत्याग्रह और जय जगत जैसे अभियानों के माध्यम से मैंने देशभर के समुदायों के साथ यात्रा की, लोगों को संगठित किया, उनकी बातें सुनीं और उनसे सीखा। वर्ष 2019 की जय जगत पदयात्रा मेरे लिए विशेष रूप से महत्वपूर्ण रही। भारत से जिनेवा की ओर अंतरराष्ट्रीय टीम के साथ हजारों किलोमीटर की यात्रा ने अहिंसा, एकजुटता और सामूहिक कार्रवाई में मेरे विश्वास को और मजबूत किया।

जब लॉकडाउन ने उस यात्रा को अचानक रोक दिया, तब मैं कई सवालियों के साथ लौटा। उन वर्षों में मैंने देखा कि जब लोग अपने संवैधानिक अधिकारों से दूर हो जाते हैं, तो वे अधिकार कितनी आसानी से कमजोर पड़ सकते हैं। इसी अनुभव ने मुझे संविधान पर केंद्रित होकर काम करने की ओर और गहराई से प्रेरित किया।

आज मेरा काम समुदायों के साथ भूमि अधिकार, वन अधिकार, समानता, न्याय और गरिमा पर संवाद के रूप में जारी है। मेरा मानना है कि वास्तविक बदलाव सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक—तीनों स्तरों पर एक साथ होना चाहिए। मेरे लिए संविधान केवल एक कानूनी दस्तावेज़ नहीं है, बल्कि अधिक समान और मानवीय समाज के निर्माण का जीवंत मार्गदर्शक है।

आज भी मैं अध्ययन, संवाद और लोगों के जीवन अनुभवों के करीब रहकर सीखता रहता हूँ। यही मेरी सबसे लंबी और सबसे सार्थक यात्रा है।

“Before change becomes visible, it often begins quietly—with conversation, courage, and someone choosing to speak.”

For many years, I have worked with women in settlements, adolescent Muslim children, domestic workers, and laboring communities. Conversations were happening and awareness was spreading, yet I often felt that people could speak about their struggles, but not about their rights and dignity.

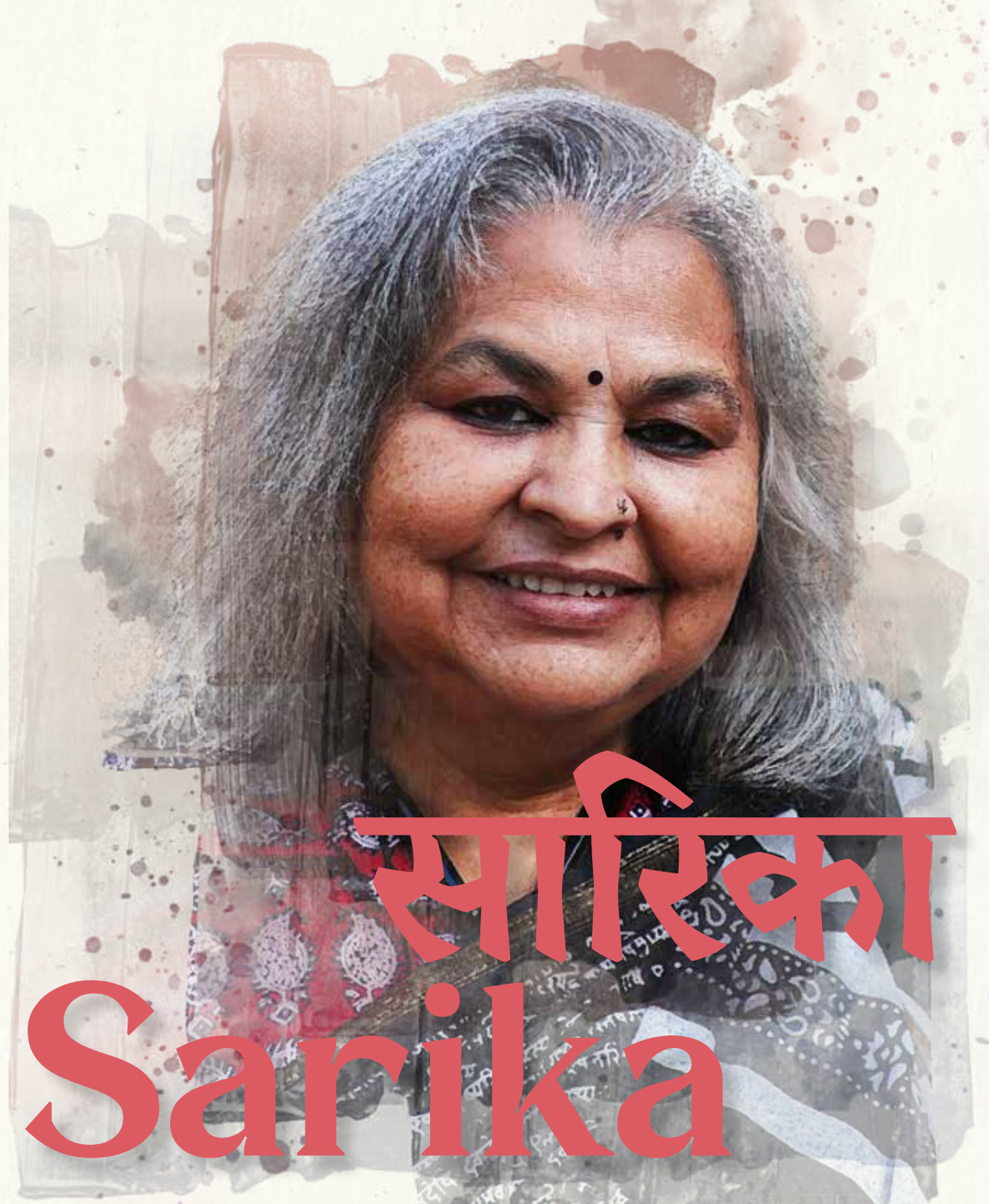
The years of social uncertainty and the COVID-19 pandemic deepened this feeling. Listening to communities speak about fear, survival, and exclusion made me realize that people needed more than support, they needed a sense of voice and belonging.

During the Meri Pehchan Samvidhan Fellowship, I began understanding the Constitution in a deeper way. I realized that constitutional values become meaningful only when people can connect them to their everyday lives.

That understanding changed my work.

Since 2004, I have continued working with communities, often without stable institutional support. The fellowship through PHIA Foundation brought both recognition and continuity to this journey. Through theatre, stories, songs, and conversations, I now work with women and young people to make ideas of equality, dignity, justice, and fraternity more accessible.

Over time, I have seen small but important changes, women speaking with more confidence, young people asking questions more openly, and communities beginning to see themselves as equal citizens.





“बदलाव दिखाई देने से पहले अक्सर बहुत शांत रूप में शुरू होता है— संवाद से, साहस से और किसी एक व्यक्ति के बोलने का निर्णय लेने से।”

कई वर्षों से मैं बस्तियों में रहने वाली महिलाओं, किशोर मुस्लिम बच्चों, घरेलू कामगारों और श्रमिक समुदायों के साथ काम कर रही हूँ। बातचीत होती थी, जागरूकता भी फैल रही थी, फिर भी मुझे अक्सर लगता था कि लोग अपनी परेशानियों के बारे में तो बोल पा रहे हैं, लेकिन अपने अधिकारों और गरिमा की भाषा में बात नहीं कर पा रहे।

सामाजिक अनिश्चितता के वर्षों और कोविड-19 महामारी ने इस एहसास को और गहरा किया। जब समुदायों ने डर, जीवन-यापन और बहिष्कार के अपने अनुभव साझा किए, तब मैंने समझा कि लोगों को केवल सहयोग की नहीं, बल्कि अपनी बात कहने का आत्मविश्वास और अपनेपन की भी ज़रूरत है।

‘मेरी पहचान संविधान’ फेलोशिप के दौरान मैंने संविधान को और गहराई से समझना शुरू किया। मुझे एहसास हुआ कि संवैधानिक मूल्य तभी सचमुच अर्थपूर्ण बनते हैं, जब लोग उन्हें अपने रोज़मर्रा के जीवन से जोड़ पाते हैं। इसी समझ ने मेरे काम की दिशा बदल दी।

साल 2004 से मैं समुदायों के साथ लगातार काम कर रही हूँ, अक्सर बिना किसी स्थायी संस्थागत सहयोग के। फिया फाउंडेशन के माध्यम से मिली इस फेलोशिप ने मेरी इस यात्रा को पहचान और निरंतरता दोनों दी। अब मैं नाटक, कहानियों, गीतों और संवादों के माध्यम से महिलाओं और युवाओं के साथ समानता, गरिमा, न्याय और बंधुत्व जैसे विचारों को सरल और सुलभ बनाने का प्रयास करती हूँ।

समय के साथ मैंने छोटे लेकिन महत्वपूर्ण बदलाव देखे हैं — महिलाएँ अधिक आत्मविश्वास से बोलने लगी हैं, युवा अधिक खुलकर सवाल पूछने लगे हैं, और समुदाय स्वयं को बराबरी के नागरिकों के रूप में देखने लगे हैं।



**“Education does not only change one life,
it slowly changes the thinking of an entire
community”**

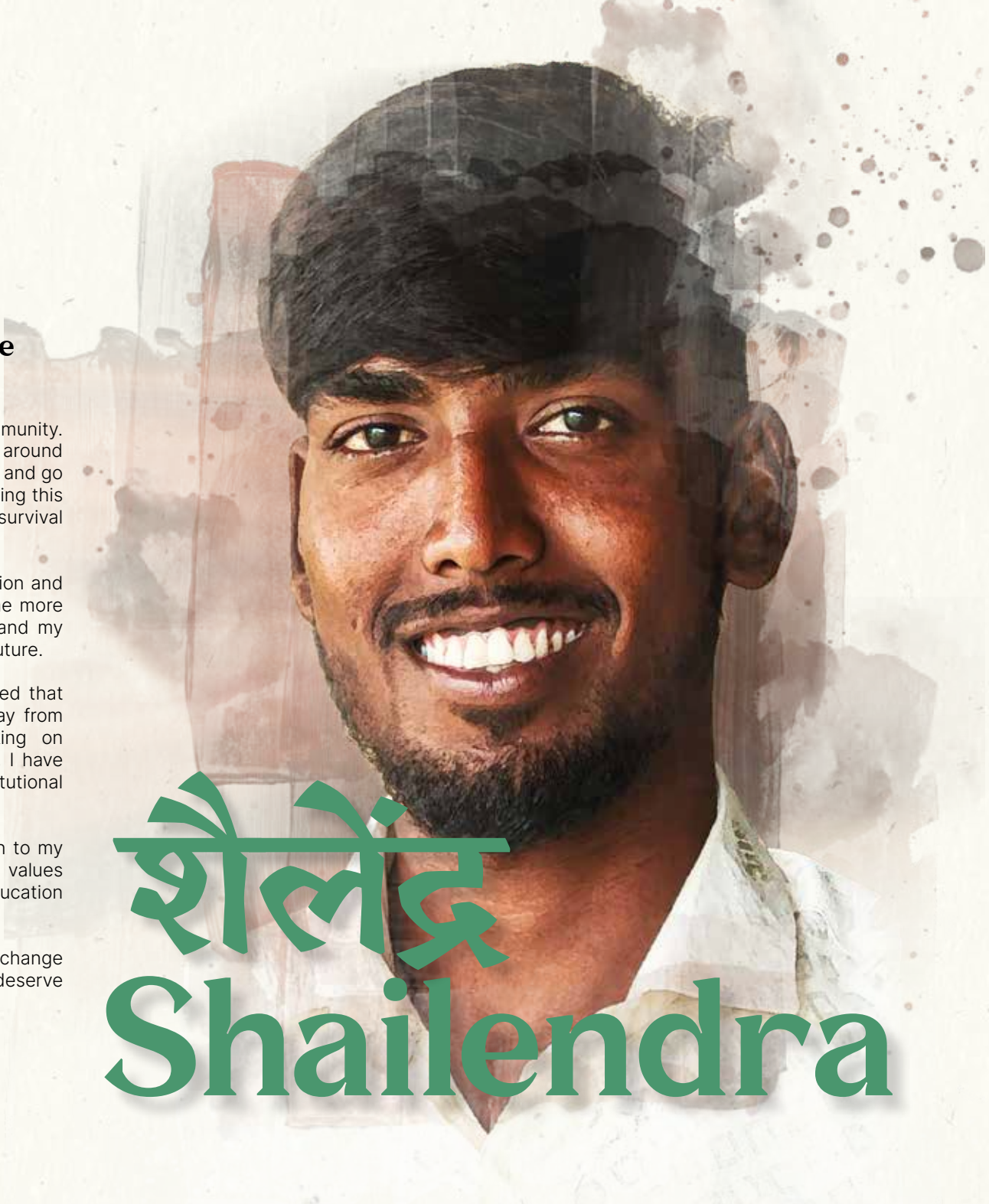
I come from Kumtha Post, Bhilkhedi, and belong to the Pardhi community. Growing up, I saw how difficult education was for many young people around me. Every year, several boys from the community would leave school and go for labor work because their families had very limited options. Watching this closely made me realize how easily education gets left behind when survival becomes more important than dreams.

Despite these challenges, I completed my higher secondary education and later pursued a Bachelor's degree. For me, education slowly became more than just a way to earn a livelihood. It became a way to understand my community, our struggles, and the possibility of building a different future.

As I spent more time with young people in my community, I realized that poverty, insecurity, and lack of awareness often pushed them away from education. This understanding encouraged me to begin working on education-related social issues. For the past one and a half years, I have been creating conversations with youth around education, constitutional values, and future opportunities.

Joining the Meri Pehchan Samvidhan Fellowship gave new direction to my work. Through the fellowship, I began understanding constitutional values like equality, justice, and dignity more deeply. It helped me connect education with confidence, self-respect, and community awareness.

Today, I try to practice these values in my own life and work. I believe change begins slowly, when young people begin believing that they too deserve opportunities, dignity, and a better future.

A portrait of a young man with dark hair and a beard, smiling. The background is a light, textured wash with some darker, abstract shapes. The name 'Shailendra' is written in large, green, stylized Devanagari and Latin script across the bottom right of the image.

शैलेंद्र
Shailendra



“शिक्षा केवल एक व्यक्ति का जीवन नहीं बदलती, वह धीरे-धीरे पूरे समुदाय की सोच बदलती है।”

मैं कुमठा पोस्ट, भीलखेड़ी से आता हूँ और पारधी समुदाय से हूँ। बचपन से ही मैंने अपने आसपास युवाओं के लिए शिक्षा की राह को कठिन होते देखा। हर साल समुदाय के कई लड़के स्कूल छोड़कर मज़दूरी के लिए चले जाते थे, क्योंकि उनके परिवारों के पास विकल्प बहुत सीमित थे। यह सब देखते हुए मुझे समझ आया कि जब जीवन-यापन सपनों से बड़ा हो जाता है, तो शिक्षा कितनी आसानी से पीछे छूट जाती है।

इन चुनौतियों के बावजूद मैंने अपनी हायर सेकेंडरी शिक्षा पूरी की और आगे चलकर स्नातक की पढ़ाई की। मेरे लिए शिक्षा धीरे-धीरे केवल रोज़गार पाने का रास्ता नहीं रही। यह अपने समुदाय, उसकी चुनौतियों और एक बेहतर भविष्य की संभावना को समझने का माध्यम बन गई।

समुदाय के युवाओं के साथ समय बिताते हुए मैंने महसूस किया कि गरीबी, असुरक्षा और जागरूकता की कमी अक्सर उन्हें शिक्षा से दूर कर देती है। इसी समझ ने मुझे शिक्षा से जुड़े सामाजिक मुद्दों पर काम करने के लिए प्रेरित किया। पिछले डेढ़ वर्ष से मैं युवाओं के साथ शिक्षा, संवैधानिक मूल्यों और भविष्य के अवसरों पर संवाद कर रहा हूँ।

‘मेरी पहचान संविधान’ फेलोशिप ने मेरे काम को नई दिशा दी। इस फेलोशिप के माध्यम से मैंने समानता, न्याय और गरिमा जैसे संवैधानिक मूल्यों को और गहराई से समझना शुरू किया। इससे मुझे शिक्षा को आत्मविश्वास, आत्मसम्मान और सामुदायिक जागरूकता से जोड़कर देखने की दृष्टि मिली।

आज मैं अपने जीवन और काम में इन्हीं मूल्यों को अपनाने की कोशिश करता हूँ। मेरा विश्वास है कि बदलाव धीरे-धीरे शुरू होता है, जब युवा यह मानने लगते हैं कि वे भी अवसर, गरिमा और बेहतर भविष्य के हकदार हैं।

“What I could not find inside classrooms. I slowly found through people, communities, and lived experiences.”

For a long time, I felt that leaving college meant failing in life. Growing up in Seoni, Madhya Pradesh, in a middle-class family with two academically successful elder brothers, I was constantly surrounded by expectations. School slowly became a place of pressure instead of curiosity.

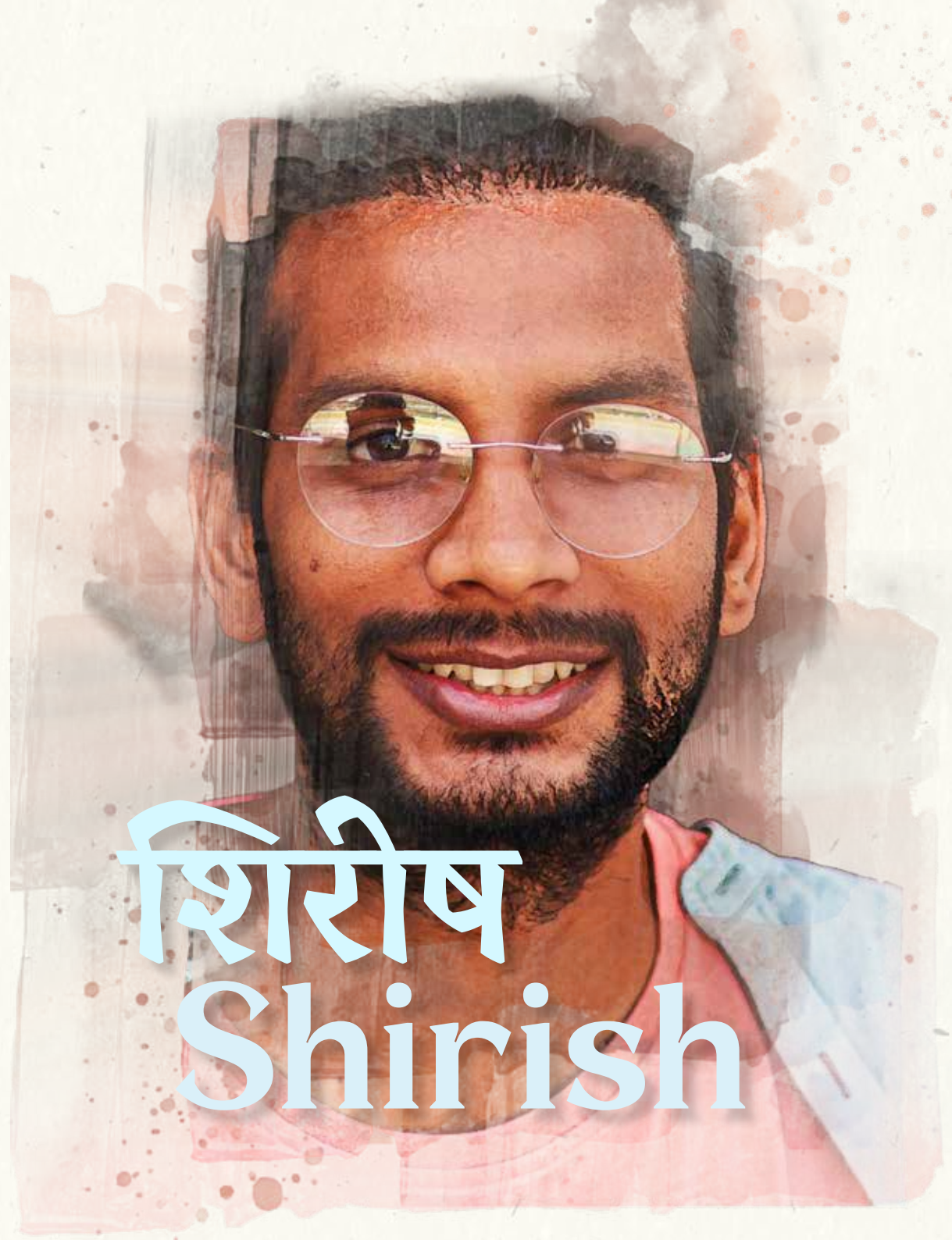
After Class 12, I enrolled in a Bachelor of Computer Applications course, hoping things would improve. But within months, I realized I was attending classes without truly learning. Dropping out became one of the most difficult phases of my life. Conversations at home turned silent and heavy, and it often felt like people had stopped believing in me.

Yet, my desire to learn never disappeared.

I began exploring learning outside classrooms through workshops, social organizations, and community programs. A major shift came when I joined an international rural exposure program in Rajasthan. Working closely with communities and young people helped me understand that learning can also come through lived experiences, dialogue, and reflection.

Later, through organizations like Agrani and programs such as Samvidhan Live, I started working with students and teachers on experiential learning and constitutional values. The fellowship deepened my understanding of justice, equality, liberty, and fraternity, and gave me the confidence to shape my own path.

Today, I work with young people and educators on leadership building through education and constitutional values. I have realized that sometimes stepping away from one system helps us discover a deeper way of learning.





“जो सीख मुझे कक्षाओं के भीतर नहीं मिली, वह धीरे-धीरे लोगों, समुदायों और जीवन के अनुभवों से मिली।”

लंबे समय तक मुझे लगता रहा कि कॉलेज छोड़ देना जीवन में असफल हो जाना है। मध्य प्रदेश के सिवनी में एक मध्यमवर्गीय परिवार में मेरा बचपन बीता, जहाँ मेरे दोनों बड़े भाई पढ़ाई में अच्छे थे। ऐसे में मेरे आसपास हमेशा अपेक्षाएँ बनी रहीं। धीरे-धीरे स्कूल मेरे लिए जिज्ञासा की जगह दबाव का स्थान बन गया।

कक्षा 12 के बाद मैंने बैचलर ऑफ कंप्यूटर एप्लिकेशन में प्रवेश लिया, इस उम्मीद में कि शायद अब चीजें बेहतर होंगी। लेकिन कुछ ही महीनों में मुझे समझ आने लगा कि मैं कक्षाओं में जा तो रहा हूँ, पर सच में सीख नहीं पा रहा। कॉलेज छोड़ना मेरे जीवन के सबसे कठिन निर्णयों में से एक था। घर की बातचीत भारी और खामोश हो गई थी, और कई बार लगता था जैसे लोगों ने मुझ पर विश्वास करना छोड़ दिया है।

फिर भी, सीखने की मेरी इच्छा कभी खत्म नहीं हुई।

मैंने कक्षाओं के बाहर सीखने के रास्ते तलाशने शुरू किए—वर्कशॉप, सामाजिक संस्थाओं और सामुदायिक कार्यक्रमों के माध्यम से। राजस्थान में एक अंतरराष्ट्रीय ग्रामीण एक्सपोजर कार्यक्रम से जुड़ना मेरे जीवन का एक महत्वपूर्ण मोड़ रहा। समुदायों और युवाओं के साथ नज़दीक से काम करते हुए मैंने समझा कि सीखना केवल किताबों या डिग्री से नहीं, बल्कि अनुभवों, संवाद और आत्ममंथन से भी आता है।

बाद में अग्रणी जैसी संस्थाओं और संविधान लाइव जैसे कार्यक्रमों के माध्यम से मैंने विद्यार्थियों और शिक्षकों के साथ अनुभवात्मक शिक्षा और संवैधानिक मूल्यों पर काम करना शुरू किया। फेलोशिप ने न्याय, समानता, स्वतंत्रता और बंधुत्व की मेरी समझ को और गहरा किया और मुझे अपना रास्ता स्वयं गढ़ने का आत्मविश्वास दिया।

आज मैं युवाओं और शिक्षकों के साथ शिक्षा और संवैधानिक मूल्यों के माध्यम से नेतृत्व निर्माण पर काम करता हूँ। मैंने जाना है कि कई बार किसी एक व्यवस्था से बाहर आना, सीखने की एक और गहरी राह खोजने की शुरुआत बन जाता है।

“Sometimes direction does not arrive all at once; it reveals itself while walking with others”

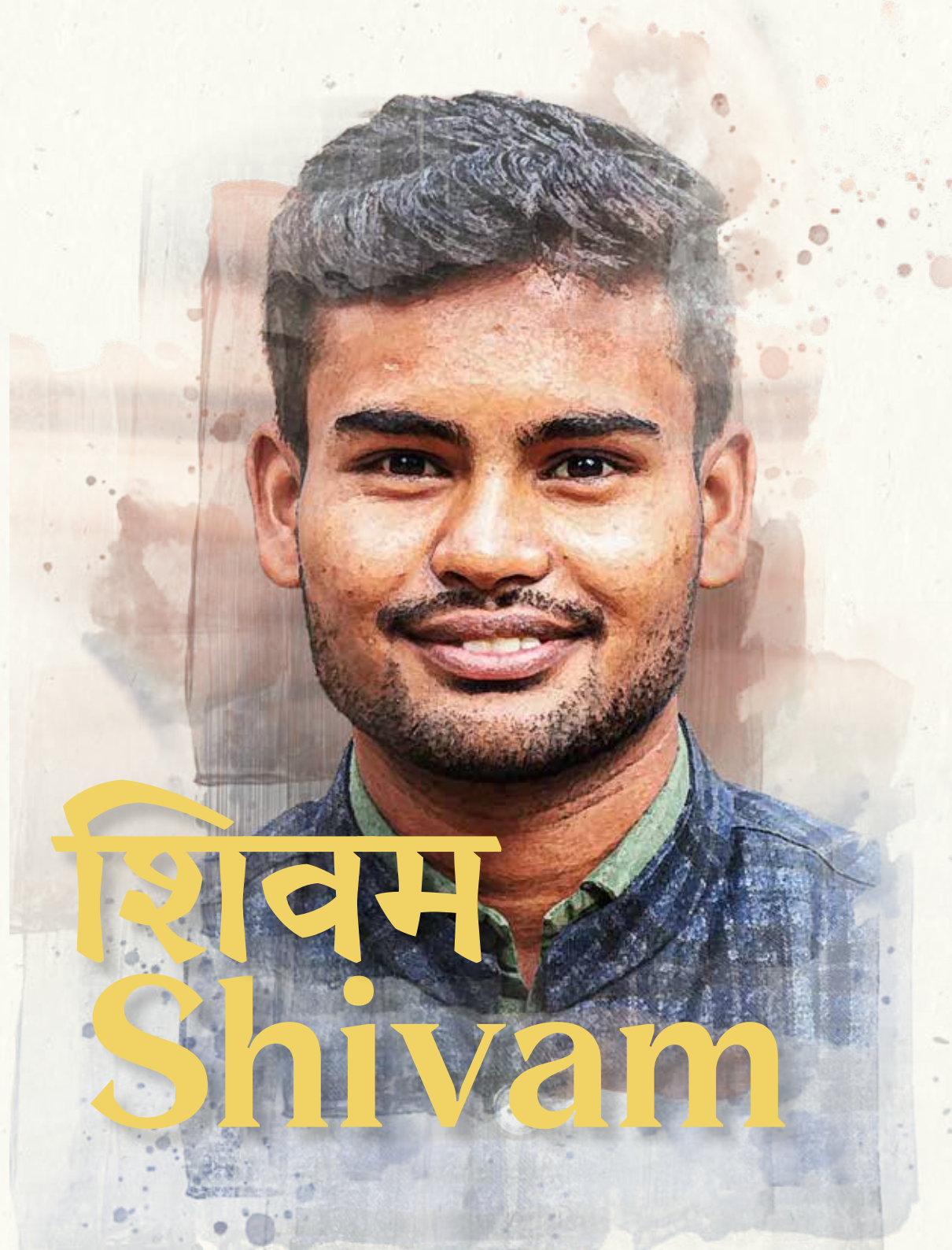
In our small village of Kamtada in Madhya Pradesh, life moved between a tiny barber shop, unfinished walls, and the everyday effort of survival. My father worked hard to support the family through our traditional occupation, while my mother served as an ASHA worker. Growing up with limited resources taught me responsibility very early in life.

After Class 12, financial pressure pushed me into different kinds of work. I worked as a salesman, distributed newspapers, and tried learning my family's traditional occupation. Those years were emotionally difficult. There were moments when uncertainty and pressure felt heavier than hope itself. But somewhere through those struggles, I began understanding people more deeply.

During the COVID-19 period, I entered the development sector as an intern. Working with communities during that time changed the direction of my life. Through youth groups, women's collectives, and community dialogue, I saw how dignity, trust, and support can slowly transform people's confidence.

Later, through Yuvalaya and the PHIA Fellowship, I began working with young people around constitutional values, leadership, and active citizenship. The fellowship helped me connect ideas like justice, equality, liberty, and fraternity with everyday life and community experiences.

Today, I continue working with youth and communities, creating spaces for dialogue, learning, and collective growth. My journey still carries struggles, but it also carries hope.





“दिशा हमेशा एक साथ नहीं मिलती; कई बार वह लोगों के साथ चलते-चलते धीरे-धीरे सामने आती है।”

मध्य प्रदेश के छोटे से गाँव कमताडा में मेरा जीवन एक छोटी-सी नाई की दुकान, अधूरी दीवारों और रोज़मर्रा के संघर्षों के बीच बीता। मेरे पिता ने परिवार को संभालने के लिए हमारे पारंपरिक काम में बहुत मेहनत की, जबकि मेरी माँ आशा कार्यकर्ता के रूप में सेवा देती रहीं। सीमित संसाधनों के बीच बड़े होते हुए मैंने बहुत छोटी उम्र में जिम्मेदारी निभाना सीख लिया।

कक्षा 12 के बाद आर्थिक दबाव ने मुझे अलग-अलग कामों की ओर धकेल दिया। मैंने सेल्समैन का काम किया, अखबार बाँटे और अपने परिवार के पारंपरिक काम को सीखने की कोशिश की। वे साल भावनात्मक रूप से कठिन थे। कई बार अनिश्चितता और दबाव उम्मीद से भी ज़्यादा भारी लगते थे।

लेकिन उन्हीं संघर्षों के बीच मैंने लोगों को और गहराई से समझना शुरू किया।

कोविड-19 के समय मैं एक इंटरन के रूप में विकास क्षेत्र से जुड़ा। उस दौर में समुदायों के साथ काम करने ने मेरे जीवन की दिशा बदल दी। युवा समूहों, महिलाओं के समूहों और सामुदायिक संवादों के माध्यम से मैंने देखा कि गरिमा, भरोसा और सहयोग किस तरह धीरे-धीरे लोगों के आत्मविश्वास को बदल सकते हैं।

बाद में युवालय और फिया फेलोशिप के माध्यम से मैंने युवाओं के साथ संवैधानिक मूल्यों, नेतृत्व और सक्रिय नागरिकता पर काम करना शुरू किया। फेलोशिप ने मुझे न्याय, समानता, स्वतंत्रता और बंधुत्व जैसे विचारों को लोगों के रोज़मर्रा के जीवन और सामुदायिक अनुभवों से जोड़ना सिखाया।

आज मैं युवाओं और समुदायों के साथ संवाद, सीखने और सामूहिक विकास के लिए जगहें बनाने का काम जारी रखे हुए हूँ। मेरी यात्रा में संघर्ष आज भी हैं, लेकिन उन्हीं के साथ उम्मीद भी है।

“Sometimes awareness itself becomes the first step toward justice.”

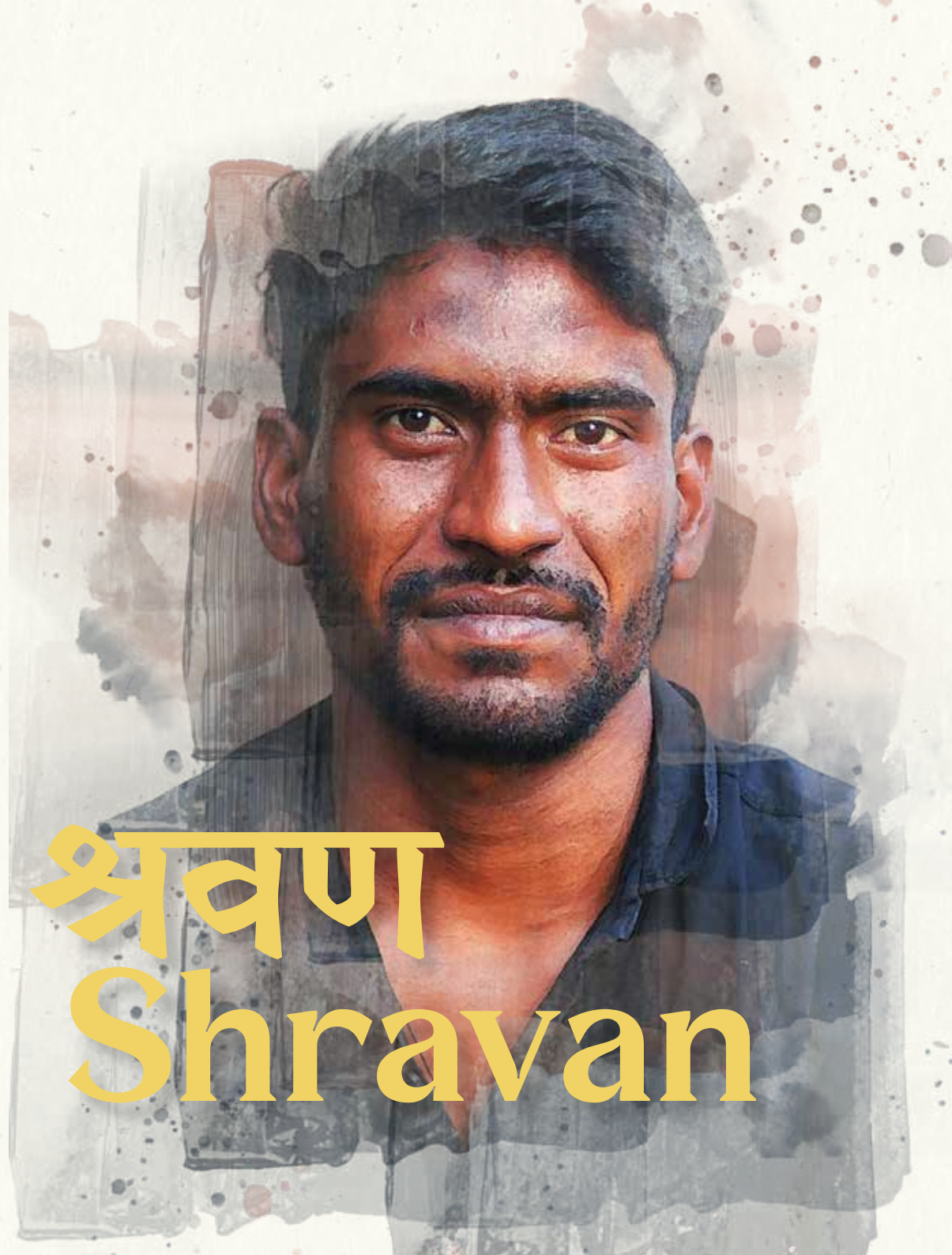
I come from Balondiya village in Sehore district of Madhya Pradesh and belong to the Korku Adivasi community. My father works as a daily wage laborer, and like many families around us, we grew up understanding the value of hard work from an early age. While pursuing my studies in ITI, BSW, and B.Sc., I also began working closely with Adivasi communities in nearby villages.

For a long time, I saw people struggling for rights and government schemes that were meant for them, but the moment that truly changed me came during a village discussion through the fellowship. I learned that more than 50 approved forest rights claims of Adivasi families had been cancelled without explanation. The confusion and helplessness in the community stayed with me for a long time. I realized then that many people are not deprived because they lack rights, but because they lack access to information and support.

That experience pushed me to raise these issues in Gram Sabha and Panchayat meetings and stand with the community in demanding accountability.

Through the Meri Pehchan samvidhan, I began understanding constitutional values not just as words, but as something deeply connected to people's everyday lives. The fellowship helped me work with youth and communities around dignity, equality, and awareness, while also giving me the confidence to continue this journey.

Today, I work with Adivasi families on forest rights, access to government schemes, and constitutional awareness. For me, real change begins when people start believing that their voices and rights matter.





“कई बार न्याय की शुरुआत केवल इस बात से होती है कि लोग अपने अधिकारों के प्रति जागरूक हो जाएँ।”

मैं मध्य प्रदेश के सीहोर जिले के बलौडिया गाँव से हूँ और कोरकू आदिवासी समुदाय से आता हूँ। मेरे पिता दिहाड़ी मज़दूर हैं। हमारे परिवार की तरह आसपास के अधिकांश परिवारों में भी मेहनत ही जीवन का आधार रही है। मैं आईटीआई, बी.एस. डब्ल्यू. और बी.एससी. की पढ़ाई कर रहा था इसी दौरान आसपास के गाँवों में आदिवासी समुदायों के साथ काम करना भी शुरू किया।

लंबे समय तक मैंने लोगों को उन अधिकारों और सरकारी योजनाओं के लिए संघर्ष करते देखा, जो वास्तव में उनके ही लिए बनी थीं। लेकिन मेरे जीवन का सबसे महत्वपूर्ण मोड़ तब आया, जब फेलोशिप के दौरान एक गाँव की बैठक में मुझे पता चला कि आदिवासी परिवारों के 50 से अधिक स्वीकृत वनाधिकार दावों को बिना किसी स्पष्ट कारण के निरस्त कर दिया गया है। समुदाय के लोगों की उलझन, निराशा और बेबसी ने मुझे भीतर तक प्रभावित किया। तभी मुझे समझ आया कि कई बार लोग इसलिए वंचित नहीं रह जाते क्योंकि उनके पास अधिकार नहीं होते, बल्कि इसलिए क्योंकि उन्हें सही जानकारी, सहयोग और न्याय तक पहुँच नहीं मिल पाती।

उस घटना ने मुझे ग्राम सभा और पंचायत की बैठकों में इन मुद्दों को उठाने के लिए प्रेरित किया। मैंने समुदाय के साथ मिलकर जवाबदेही की माँग की और उनके अधिकारों की आवाज़ बनने का प्रयास शुरू किया।

‘मेरी पहचान संविधान’ फेलोशिप से जुड़ने के बाद मैंने संवैधानिक मूल्यों को केवल किताबों की बातें नहीं, बल्कि लोगों के रोज़मर्रा के जीवन से जुड़े हुए सच के रूप में समझना शुरू किया। इस फेलोशिप ने मुझे युवाओं और समुदायों के साथ गरिमा, समानता और अधिकारों पर काम करने की नई दृष्टि दी और इस राह पर आगे बढ़ने का आत्मविश्वास भी।

आज मैं आदिवासी परिवारों के साथ वनाधिकार, सरकारी योजनाओं तक पहुँच और संवैधानिक जागरूकता पर काम कर रहा हूँ। मेरा विश्वास है कि वास्तविक बदलाव वहीं से शुरू होता है, जहाँ लोग अपने अधिकारों को पहचानते हैं और यह विश्वास करने लगते हैं कि उनकी आवाज़ भी मान्य रखती है।

“Dignity is not given to us by the world. It begins the day we choose to stand in it, no matter who we are or where we come from.”

I grew up in a house where care had a routine and sacrifice had no name. My mother's day began before sunrise and ended long after everyone else had slept. As a child, I did not have the words for what I was seeing, but I could feel that something was unequal.

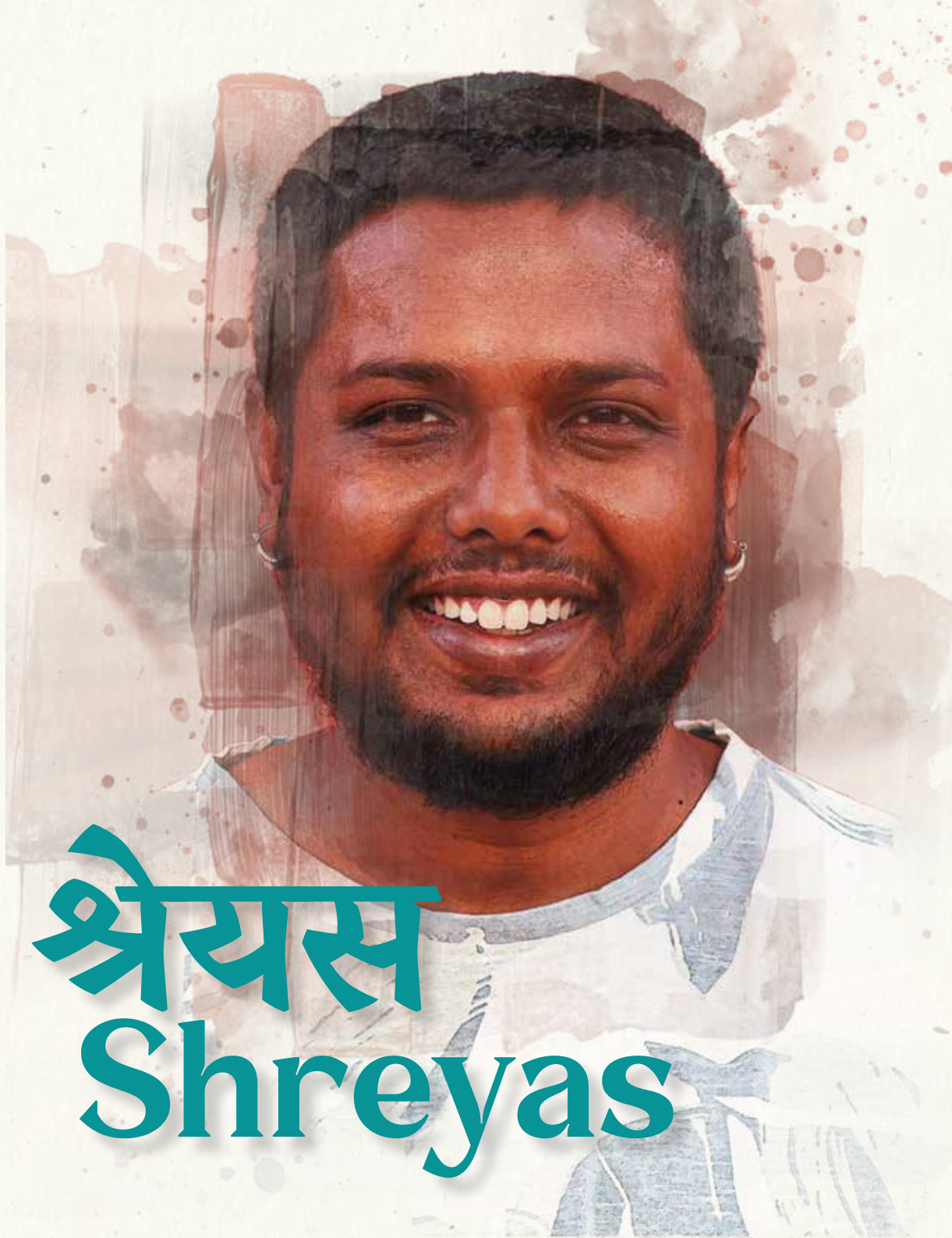
School was not always kind. I was often teased for how I looked, and over time, that feeling of being singled out stayed with me. It was uncomfortable, sometimes isolating, but it also made me more aware of how easily people are made to feel small.

Years later, when I moved to the United States for my studies, that feeling returned in a different form. This time it was in the way people looked at me, the distance they kept, the assumptions they made. Experiencing life as someone seen as “other” changed me. It also brought me closer to people from different backgrounds, each carrying their own stories of exclusion and resilience. That is where my understanding of dignity truly began.

When I returned to India, life slowed down in an unexpected way. I moved to Indore to care for my partner's mother during her illness. In that time, I began to understand care not just as responsibility, but as a choice rooted in equality and respect.

In Bhopal, through my association with Muskaan, I met young people from denotified tribal communities. Listening to their stories, the barriers they faced, and their strength made one thing clear to me: inequality is not distant, it is lived every day.

Today, through the Meri Pehchan samvidhan Fellowship, I work with youth from these communities, helping them think critically, tell their stories, and see their own worth.





“दुनिया हमें गरिमा नहीं दे सकती। उसकी शुरुआत तब होती है, जब हम यह चुनते हैं कि हम गरिमा के साथ जिएँगे—चाहे हमारी पहचान कुछ भी हो या कहीं से भी आते हों।”

मैं ऐसे घर में बड़ा हुआ जहाँ देखभाल एक रोज़ की दिनचर्या थी और त्याग का कोई नाम नहीं था। मेरी माँ का दिन सूरज उगने से पहले शुरू होता था और सबके सो जाने के बहुत बाद खत्म होता था। बचपन में मेरे पास यह समझने के लिए शब्द नहीं थे कि मैं क्या देख रहा हूँ, लेकिन इतना महसूस होता था कि कुछ असमानता है।

स्कूल का सफ़र हमेशा आसान नहीं था। मेरे रंग-रूप को लेकर अक्सर मेरा मज़ाक उड़ाया जाता था। धीरे-धीरे अलग कर दिए जाने का वह एहसास मेरे भीतर रह गया। वह अनुभव कठिन था, कई बार अकेला कर देने वाला भी, लेकिन उसने मुझे यह समझने में मदद की कि लोग कितनी आसानी से किसी को छोटा महसूस करा सकते हैं।

कई साल बाद, जब मैं पढ़ाई के लिए अमेरिका गया, तो वही एहसास एक नए रूप में लौट आया। इस बार वह लोगों की नज़रों में था, वे मुझसे जिस तरह दूरी बनाए रखते थे उस में था, और मेरे बारे में उनकी पूर्वधारणा में था। किसी “दूसरे” की तरह देखे जाने के अनुभव ने मुझे भीतर से बदला। इसी दौरान अलग-अलग पृष्ठभूमि के लोगों से मेरा करीबी रिश्ता बना - ऐसे लोग जिनके पास बहिष्कार और संघर्ष की अपनी-अपनी कहानियाँ थीं। वहीं से गरिमा के बारे में मेरी समझ सचमुच गहरी होने लगी।

भारत लौटने के बाद जीवन ने एक अप्रत्याशित मोड़ लिया। मैं अपनी साथी की माँ की बीमारी के दौरान उनकी देखभाल करने के लिए इंदौर चला गया। उस समय मैंने देखभाल को केवल जिम्मेदारी नहीं, बल्कि समानता और सम्मान से जन्मे एक सचेत चुनाव के रूप में समझा।

भोपाल में, मुस्कान संस्था से जुड़ाव के दौरान, मेरी मुलाकात विमुक्त जनजातीय समुदायों के युवाओं से हुई। उनकी कहानियाँ, उनके सामने आने वाली बाधाएँ और उनकी ताकत के बारे में सुनकर मेरे भीतर एक बात स्पष्ट हुई—असमानता कोई दूर की चीज़ नहीं है; वह लोगों के रोज़मर्रा के जीवन में मौजूद है।

आज ‘मेरी पहचान संविधान’ फेलोशिप के माध्यम से मैं इन्हीं समुदायों के युवाओं के साथ काम करता हूँ। मैं उन्हें आलोचनात्मक सोच विकसित करने, अपनी कहानियाँ कहने और अपने भीतर की गरिमा व क्षमता को पहचानने में सहयोग करता हूँ।

“There was a time when people called me by my caste. Today, I speak my name with pride.”

My name is Sheshraj Sisodiya. I grew up in a community where many children learn early that survival comes before schooling. I watched friends leave classrooms for marriage, labour, and family responsibilities. I stayed, not because the path was easy, but because something within me refused to let go of education.

As I moved into secondary school, I began to understand discrimination more personally. I was often called by my caste instead of my name. Each time it happened, it felt as though my identity was being narrowed to something I had not chosen. There were days of silence and doubt, yet there was also a quiet determination growing inside me. When I performed well in Class 11, the behaviour of teachers began to change. By the time I completed Class 12 with 74 percent, I had learned that perseverance can reshape how others see you, but more importantly, how you see yourself.

Studying law deepened that understanding. With the support of Muskaan Sanstha, I completed my BALLB degree and began looking at social issues through a legal lens. In 2018, during a workshop on the Pardhi community, I saw how closely my experiences were connected to larger patterns of injustice. Lack of education, limited access to legal rights, child marriage, and caste discrimination were not isolated events. They were part of a system. I realized that remaining silent would only allow these patterns to continue.

Since 2020, I have been working within the Pardhi community on issues of education, legal awareness, child marriage, and caste discrimination. I use theatre as a way to open conversations. When people watch their own stories unfold on stage, reflection begins. Dialogue follows.

Through the fellowship, I anchored my work more consciously in constitutional values of equality, justice, and dignity. For me, the Constitution is not distant or abstract. It is a guide to living with self respect.

Once, I was called by my caste. Today, I speak my name with confidence, and I hope every child in my community learns to do the same.





**“एक समय था जब लोग मुझे मेरे नाम से नहीं, मेरी जाति से पुकारते थे।
आज मैं अपना नाम गर्व से कहता हूँ।”**

मेरा नाम शेषराज सिसोदिया है। मैं ऐसे समुदाय में बड़ा हुआ, जहाँ कई बच्चे बहुत जल्दी सीख जाते हैं कि जीवन-यापन अक्सर पढ़ाई से पहले आ जाता है। मैंने अपने दोस्तों को विवाह, मजदूरी और पारिवारिक जिम्मेदारियों के कारण स्कूल छोड़ते देखा। मैं रुका रहा, इसलिए नहीं कि रास्ता आसान था, बल्कि इसलिए कि मेरे भीतर कुछ था जो शिक्षा को छोड़ना नहीं चाहता था।

माध्यमिक कक्षाओं में पहुँचते-पहुँचते मैंने भेदभाव को और व्यक्तिगत रूप से महसूस करना शुरू किया। कई बार मुझे मेरे नाम की जगह मेरी जाति से पुकारा जाता था। हर बार ऐसा लगता था, जैसे मेरी पूरी पहचान को एक ऐसी चीज़ तक सीमित किया जा रहा हो, जिसे मैंने चुना नहीं था। कई दिन चुप्पी और संदेह में बीते, लेकिन उसी के साथ भीतर एक शांत दृढ़ता भी बनती गई। जब कक्षा 11 में मैंने अच्छे अंक प्राप्त किए, तो शिक्षकों का व्यवहार बदलने लगा। कक्षा 12 में 74 प्रतिशत अंकों के साथ पढ़ाई पूरी करते हुए मैंने सीखा कि लगातार प्रयास लोगों की नज़र तो बदल सकता है, लेकिन उससे भी अधिक, वह व्यक्ति का अपने प्रति नज़रिया बदल देता है।

कानून की पढ़ाई ने मेरी इस समझ को और गहरा किया। मुस्कान संस्था के सहयोग से मैंने BALLB की डिग्री पूरी की और सामाजिक मुद्दों को कानूनी दृष्टि से समझना शुरू किया। वर्ष 2018 में पारधी समुदाय पर आयोजित एक कार्यशाला के दौरान मुझे एहसास हुआ कि मेरे अपने अनुभव अन्याय के एक बड़े ढाँचे से जुड़े हुए हैं। शिक्षा की कमी, कानूनी अधिकारों तक सीमित पहुँच, बाल विवाह और जातिगत भेदभाव अलग-अलग घटनाएँ नहीं थीं। वे एक व्यवस्था का हिस्सा थीं। तब मैंने समझा कि चुप रहना इन स्थितियों को जारी रहने देना है।

वर्ष 2020 से मैं पारधी समुदाय के भीतर शिक्षा, कानूनी जागरूकता, बाल विवाह और जातिगत भेदभाव के मुद्दों पर काम कर रहा हूँ। संवाद शुरू करने के लिए मैं नाटक को माध्यम बनाता हूँ। जब लोग मंच पर अपनी ही कहानियाँ देखते हैं, तो सोचने की प्रक्रिया शुरू होती है, और फिर बातचीत आगे बढ़ती है।

**“Where the heart feels safe, the voice
begins to open.”**

– Shams Tabrizi

There was a time when I thought life had to follow a fixed path: study engineering, get a stable job, settle down. But somewhere along the way, I realized I was searching for something more meaningful. Dropping out of engineering was not an easy decision. For many people around me, it looked like failure. For me, it became the beginning of a different kind of learning.

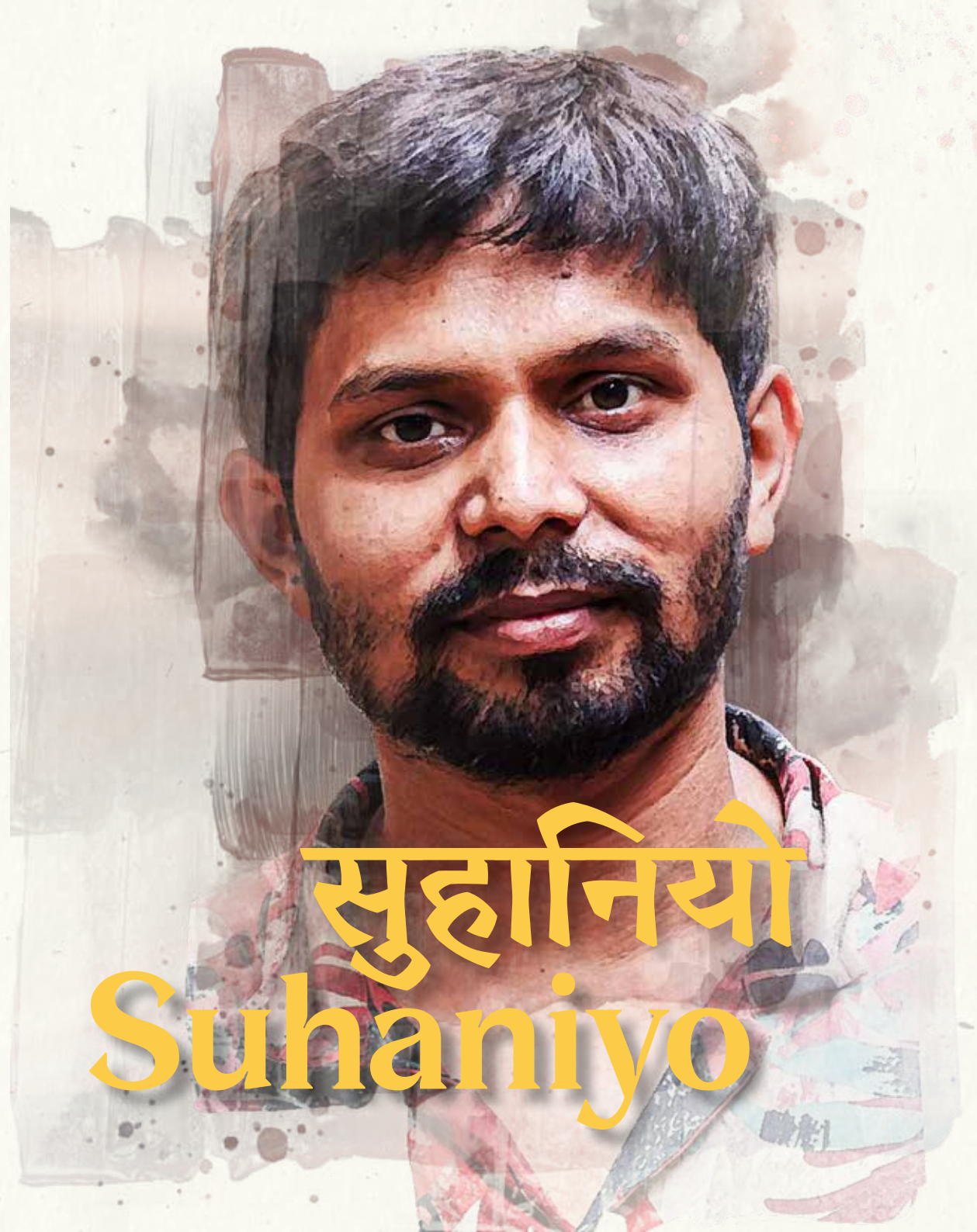
Since childhood, I was deeply affected by the way people treated each other. I still remember feeling restless when classmates were humiliated for scoring less marks. Maybe that is where my journey really began with the feeling that people deserve dignity, no matter who they are.

Over the years, I kept learning outside classrooms through travel, friendships, music, social campaigns, volunteering, and conversations with people from different walks of life. I wrote, performed, organized youth spaces, worked on relief efforts during COVID, and spent years creating communities where young people could speak openly about love, identity, fear, dreams, and society.

Art slowly became my language. Whether through rap, humour, storytelling, workshops, or conversations, I started exploring how creativity can help people feel less alone and more connected to themselves and others. Through initiatives like Project Ishq, Fungat, and now RoohRaah Foundation, I have tried creating spaces where young people can think freely and engage with constitutional values like freedom, equality, dignity, and fraternity in everyday life.

The Meri Pehchan Fellowship helped me give deeper direction to this work. It helped me understand that social change is not only about resistance or awareness, it is also about creating warmth, trust, belonging, and imagination within communities.

Today, I continue working with young people in Indore through creative gatherings and dialogue spaces, carrying the belief that meaningful change often begins with honest human connection.





“जहाँ दिल खुद को सुरक्षित महसूस करता है, वहीं से आवाज़ खुलनी शुरू होती है।”

- शम्स तबरीज़

एक समय था जब मुझे लगता था कि जीवन का एक तय रास्ता होता है—इंजीनियरिंग की पढ़ाई, एक अच्छी नौकरी और फिर एक स्थिर जीवन। लेकिन कहीं न कहीं मुझे महसूस होने लगा कि मैं किसी और चीज़ की तलाश में हूँ। इंजीनियरिंग छोड़ने का फैसला आसान नहीं था। आसपास के बहुत से लोगों को वह मेरी असफलता लगी लगा, लेकिन मेरे लिए वही इंजीनियरिंग की पढ़ाई छोड़ना एक अलग तरह की सीख की शुरुआत थी।

बचपन से ही लोगों के एक-दूसरे के साथ व्यवहार ने मुझे गहराई से प्रभावित किया। आज भी मुझे याद है कि जब कम अंक आने पर मेरे सहपाठियों को सबके सामने अपमानित किया जाता था, तो मैं भीतर से बेचैन हो जाता था। शायद मेरी यात्रा वहीं से शुरू हुई—इस एहसास के साथ कि हर इंसान सम्मान का हकदार है, चाहे वह कोई भी हो।

समय के साथ मेरी सीख कक्षा की चारदीवारी से बाहर होने लगी। यात्राओं, दोस्तियों, संगीत, सामाजिक अभियानों, स्वयंसेवी कार्यों और अलग-अलग लोगों से हुई बातचीत ने मुझे लगातार नया दृष्टिकोण दिया। मैंने लिखा, मंचों पर अपनी बात रखी, युवाओं के लिए संवाद के सुरक्षित स्थान बनाए, कोविड के दौरान राहत कार्यों में भाग लिया और कई वर्षों तक ऐसे समुदायों के निर्माण में जुड़ा रहा जहाँ युवा प्रेम, पहचान, डर, सपनों और समाज जैसे विषयों पर खुलकर बात कर सकें।

धीरे-धीरे कला मेरी भाषा बन गई। रैप, हास्य, कहानी, कार्यशालाओं और संवादों के माध्यम से मैंने यह समझने की कोशिश की कि रचनात्मकता किस तरह लोगों को अकेलेपन से बाहर निकाल सकती है और उन्हें स्वयं से तथा एक-दूसरे से जोड़ सकती है। प्रोजेक्ट इश्क, फुंगत और अब रूहराह फ़ाउंडेशन जैसी पहलों के माध्यम से मेरा प्रयास रहा है कि ऐसे खुले और भरोसेमंद मंच बनें, जहाँ युवा स्वतंत्रता, समानता, गरिमा और बंधुत्व जैसे संवैधानिक मूल्यों को अपने रोज़मर्रा के जीवन से जोड़कर समझ सकें।

‘मेरी पहचान संविधान’ फेलोशिप ने मेरे इस काम को और गहरी दिशा दी। इसने मुझे यह समझाया कि सामाजिक परिवर्तन केवल विरोध या जागरूकता से नहीं आता, बल्कि समुदायों के भीतर विश्वास, अपनापन, संवेदना और कल्पना की जगहें बनाने से भी आता है।

आज मैं इंदौर में युवाओं के साथ रचनात्मक संवाद, सामूहिक बैठकों और सीखने के ऐसे ही मंच तैयार करने का काम कर रहा हूँ। मेरा विश्वास है कि अर्थपूर्ण बदलाव की शुरुआत अक्सर वहीं से होती है, जहाँ लोग बिना किसी डर के अपने मन की बात कह पाते हैं और एक-दूसरे से सच्चे मानवीय रिश्ते बना पाते हैं।



“Leadership becomes meaningful when communities begin to see their own strength in one another.”

I come from Guthaniya, a small Adivasi village in Harda district of Madhya Pradesh. I grew up in a farming family where life was shaped by the land, community, and struggle. Opportunities were limited, but the village taught me something important very early that people survive through collective strength.

For a long time, my world was small and familiar. Then, in 2016, I stepped outside my village for the first time through an internship with Pravah and Manthan. Suddenly, I was meeting new people, hearing different ideas, and experiencing spaces built on empathy, dialogue, and equality. That journey changed me deeply. It made me curious not only about society, but also about myself.

Over the years, I worked closely with young people, especially girls and youth facing structural barriers helping create safe spaces where they could speak freely, question things, and dream beyond the limits placed around them. During this time, I also began understanding how power, gender, and exclusion quietly shape everyday life.

One experience that stayed with me deeply was being part of a land rights movement in Ratamati village, where nearly 300 acres of land was restored back to the community. Watching people reclaim land that carried both livelihood and dignity taught me the meaning of collective leadership.

That understanding continues to guide my work today. Through *Sajha Netrutva Manch*, I now work with communities to nurture leadership rooted in justice, equality, fraternity, and dignity. Through the Meri Pehchan Fellowship and Khoj Yatras, we encourage young people to reflect, connect, and lead with empathy rather than power.

I have learned that lasting change does not come from standing above people. It begins by walking beside them.





“नेतृत्व तभी सार्थक होता है, जब समुदाय एक-दूसरे में अपनी सामूहिक ताकत को पहचानने लगते हैं।”

मैं मध्य प्रदेश के हरदा जिले के छोटे से आदिवासी गाँव गुठानिया से आता हूँ। मेरा बचपन एक किसान परिवार में बीता, जहाँ मेरा जीवन ज़मीन, समुदाय और संघर्षों से गहराई से जुड़ा था। अवसर सीमित थे, लेकिन गाँव ने मुझे बहुत जल्दी एक बात सिखा दी थी कि लोग अपनी सामूहिक ताकत से ही कठिन समय पार करते हैं।

लंबे समय तक मेरी दुनिया छोटी और परिचितों से घिरी परिचित थी। फिर वर्ष 2016 में प्रवाह और मंथन के साथ इंटरशिप के माध्यम से पहली बार मैं अपने गाँव से बाहर निकला। अचानक मैं नए लोगों से मिल रहा था, नए विचारों को सुन रहा था और ऐसे स्थानों को अनुभव कर रहा था, जो संवाद, समानुभूति और समानता पर बने थे। उस यात्रा ने मुझे भीतर से बदल दिया। उसने मेरे भीतर समाज को समझने के साथ-साथ खुद को जानने की जिज्ञासा भी पैदा की।

समय के साथ मुझे युवाओं विशेषकर लड़कियों और सामाजिक संरचनात्मक बाधाओं का सामना कर रहे किशोरों एवं युवाओं—के साथ गहराई से काम करने का अवसर मिला। हमने मिलकर ऐसे सुरक्षित और भरोसेमंद स्थान बनाए, जहाँ वे बिना डर अपनी बात रख सकें, स्थापित मान्यताओं पर सवाल उठा सकें और समाज द्वारा निर्धारित सीमाओं से परे अपने सपनों की कल्पना कर सकें।”

समय के साथ मैंने युवाओं, विशेषकर लड़कियों और सामाजिक ढांचागत बाधाओं का सामना कर रहे युवाओं के साथ काम किया। मेरा प्रयास रहा कि ऐसे सुरक्षित स्थान बनें जहाँ वे खुलकर अपनी बात कह सकें, सवाल पूछ सकें और अपने आसपास खींची गई सीमाओं से आगे सपने देख सकें। इसी दौरान मैंने समझना शुरू किया कि सत्ता, जेंडर और बहिष्कार किस तरह रोज़मर्रा के जीवन को चुपचाप प्रभावित करते हैं।

मेरे जीवन का एक गहरा अनुभव रातामाटी गाँव के भूमि अधिकार आंदोलन से जुड़ना रहा, जहाँ लगभग 300 एकड़ ज़मीन समुदाय को वापस मिली। लोगों को उस ज़मीन पर पुनः हक़ प्राप्त होते देखना, जो उनकी आजीविका और गरिमा दोनों से जुड़ी थी, मेरे लिए सामूहिक नेतृत्व की ताकत को समझने का बड़ा अवसर था।

आज यही समझ मेरे काम का आधार है। साझा नेतृत्व मंच के माध्यम से मैं समुदायों के साथ न्याय, समानता, बंधुत्व और गरिमा पर आधारित नेतृत्व निर्माण की प्रक्रिया में काम कर रहा हूँ। ‘मेरी पहचान’ फेलोशिप और खोज यात्राओं के जरिए हम युवाओं को सोचने, जुड़ने और सत्ता या प्रभुत्व शक्ति के बजाय संवेदना के साथ नेतृत्व करने के लिए प्रेरित करते हैं।

मैंने सीखा है कि स्थायी बदलाव लोगों से ऊपर खड़े होकर नहीं आता। वह लोगों के साथ चलने से शुरू होता है।

“Every community deserves the right to name itself beyond history’s wounds.”

I heard this sentence so many times while growing up that, for a long time, I even began believing it myself.

I belong to the Vimukt Ghumakkad Pardhi community, one of the many Denotified Tribes in India that continue to live with the burden of historical stigma. My childhood was shaped by constant movement, uncertainty, and survival. To support the family, I often went scrap collecting with my mother while trying to continue school. Studying itself felt like a struggle against circumstances. I changed six schools during my education, and every stage came with new challenges — no money for fees, no caste certificate, illness at home, lack of food, police harassment, and humiliation from teachers and classmates.

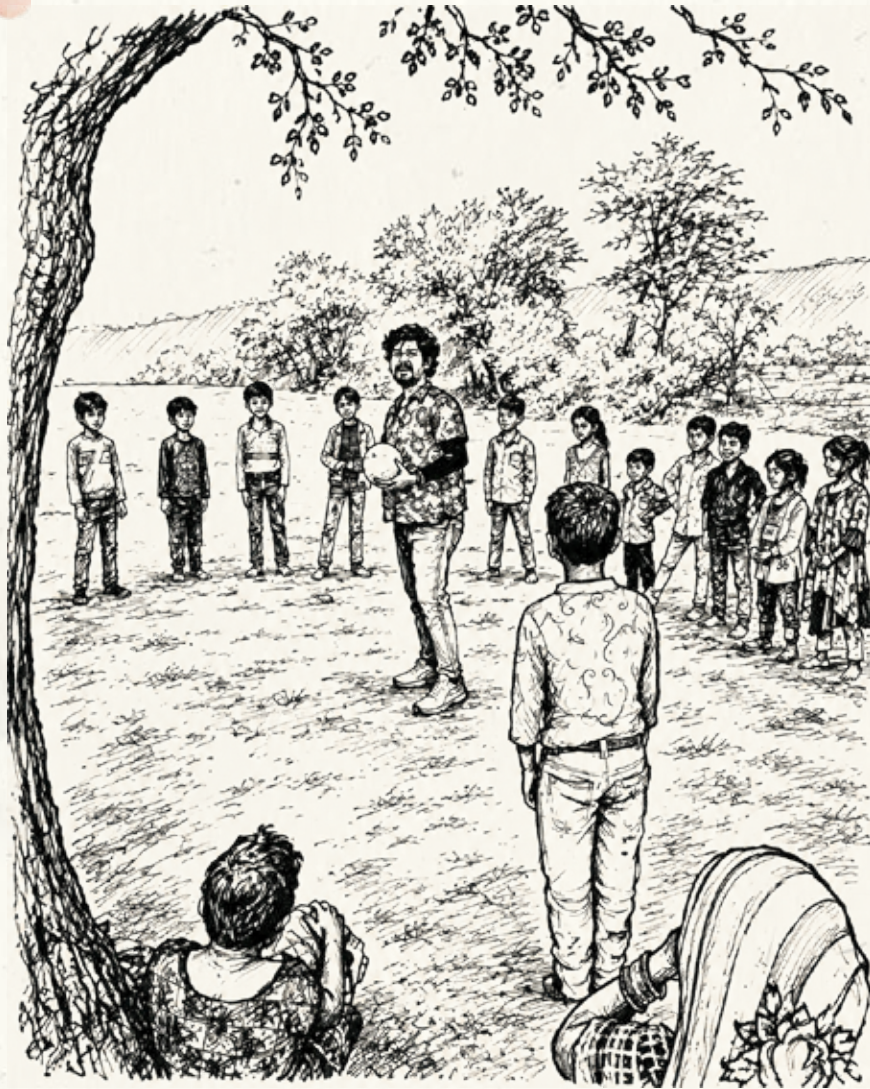
One incident has stayed with me deeply. When I was around eight years old, some people accused my mother of theft while she was collecting scrap and assaulted her. When we went to the police station seeking help, instead of listening to us, they told us, “You Pardhis can never change,” and forced us to leave.

That sentence slowly turned into a question inside me: Why should an entire community live under inherited suspicion?

Completing my graduation in Political Science became more than personal achievement; it became a way of reclaiming dignity. Through the PHIA Fellowship, I began understanding constitutional values like equality and justice more deeply. Today, I work within my community to strengthen children’s connection with education, support access to entitlements, and challenge the stigma that Denotified Tribes continue to face.

I want the next generation of Pardhi children to grow up with a different sentence about themselves.





“हर समुदाय को यह अधिकार है कि वह अपनी पहचान इतिहास के घावों से नहीं, बल्कि अपने आत्मसम्मान से तय करे।”

बचपन में मैंने एक वाक्य इतनी बार सुना कि धीरे-धीरे मुझे भी उस पर विश्वास होने लगा।

मैं विमुक्त घुमक्कड़ पारधी समुदाय से हूँ—भारत की उन अनेक विमुक्त जनजातियों में से एक, जो आज भी इतिहास से मिले कलंक का बोझ ढो रही हैं। मेरा बचपन लगातार असुरक्षा, संघर्ष और जीवन-यापन की जद्दोजहद के बीच बीता। परिवार का साथ देने के लिए मैं अक्सर अपनी माँ के साथ कबाड़ बीनने जाता था और उसी के बीच अपनी पढ़ाई जारी रखने की कोशिश करता था। पढ़ाई करना अपने आप में परिस्थितियों से लड़ने जैसा था। कभी फीस के पैसे नहीं होते थे, कभी जाति प्रमाण पत्र नहीं बन पाता था, कभी घर में बीमारी या खाने की चिंता होती थी। पुलिस की प्रताड़ना, शिक्षकों और सहपाठियों के द्वारा अपमान—इन सबके बीच मैंने अपनी पढ़ाई पूरी करने की कोशिश की। इस दौरान मुझे छह बार स्कूल बदलने पड़े।

एक घटना आज भी मेरे भीतर ज़िंदा है। मैं लगभग आठ साल का था, जब कबाड़ बीनते समय कुछ लोगों ने मेरी माँ पर चोरी का आरोप लगाया और उनके साथ मारपीट की। जब हम मदद की उम्मीद लेकर पुलिस थाने पहुँचे, तो हमारी बात सुनने के बजाय हमें यही कहा गया—“तुम पारधी कभी नहीं सुधरोगे।” हमें वहाँ से भगा दिया गया।

वह एक वाक्य धीरे-धीरे मेरे भीतर एक सवाल बन गया—आखिर पूरे के पूरे समुदाय को जन्म से ही शक की निगाह से क्यों देखा जाए?

राजनीति विज्ञान में स्नातक की पढ़ाई पूरी करना मेरे लिए केवल एक शैक्षणिक उपलब्धि नहीं थी। यह अपने सम्मान और पहचान को फिर से हासिल करने की शुरुआत थी। PHIA फेलोशिप से जुड़ने के बाद मैंने समानता, न्याय और संवैधानिक मूल्यों को और गहराई से समझा। आज मैं अपने समुदाय के भीतर बच्चों को शिक्षा से जोड़ने, लोगों को उनके अधिकारों और सरकारी योजनाओं तक पहुँच दिलाने तथा विमुक्त जनजातियों से जुड़े सामाजिक कलंक को चुनौती देने के लिए काम कर रहा हूँ।

मेरा सपना है कि आने वाली पारधी पीढ़ी अपने बारे में वही पुराना वाक्य कभी न सुने। उनकी पहचान उनके सपनों, उनकी क्षमताओं और उनके आत्मसम्मान से बने—न कि इतिहास के किसी अन्यायपूर्ण बोझ से।

“The smallest conversations can open the doors that silence kept closed for years.”

Before joining the fellowship, I never imagined that simply sitting with people and listening to their lives could change the way I saw the world.

I come from Veerpura village in Sehore district of Madhya Pradesh and belong to the Gond Adivasi community. In my family, life has always revolved around farming, labor, and managing everyday struggles with whatever resources we had. Like many girls in villages, I grew up quietly observing the lives of women around me, their hard work, their silence, and the many things they accepted simply because nobody had ever told them they deserved more.

When I became part of the Meri Pehchan Samvidhan Fellowship, I began travelling, participating in cross-learning spaces, and attending Constitution Jamghats. For the first time, I started understanding constitutional values not as difficult ideas, but as something deeply connected to people's everyday dignity and lives.

What affected me most was realizing how many families in our villages were left behind simply because they lacked information. Women did not know about schemes meant for them. Young girls rarely got spaces to speak openly. Slowly, I began sitting with women and adolescent girls in the community, listening to their experiences, discussing rights, and talking about confidence, identity, and opportunity.

These conversations changed me as much as they changed others.

Today, I continue working with Adivasi communities around awareness, entitlements, and constitutional values. I still feel I am learning every day, but now I carry a stronger belief that even small conversations can create meaningful change.





“छोटी-छोटी बातचीत भी उन दरवाज़ों को खोल सकती है, जिन्हें वर्षों की चुप्पी ने बंद कर रखा हो।”

फेलोशिप से जुड़ने से पहले मैंने कभी नहीं सोचा था कि लोगों के साथ बैठना और उनकी ज़िंदगियों को सुनना, मेरे दुनिया को देखने के तरीके को इतना बदल देगा।

मैं मध्य प्रदेश के सीहोर जिले के वीरपुरा गाँव से आती हूँ और गोंड आदिवासी समुदाय से हूँ। मेरे परिवार में जीवन हमेशा खेती, मजदूरी और सीमित संसाधनों के साथ रोज़मर्रा की ज़रूरतों को पूरा करने के इर्द-गिर्द घूमता रहा है। गाँव की कई लड़कियों की तरह मैं भी अपने आसपास की महिलाओं को चुपचाप देखती हुई बड़ी हुई—उनकी मेहनत, उनकी चुप्पी और वे बातें जिन्हें वे केवल इसलिए स्वीकार कर लेती थीं, क्योंकि किसी ने कभी उन्हें यह नहीं बताया कि वे इससे अधिक की हकदार हैं।

जब मैं ‘मेरी पहचान संविधान’ फेलोशिप से जुड़ी, तो मुझे यात्रा करने, क्रॉस-लर्निंग में भाग लेने और संविधान जमघट जैसे मंचों से सीखने का अवसर मिला। पहली बार मैंने संवैधानिक मूल्यों को कठिन शब्दों की तरह नहीं, बल्कि लोगों के रोज़मर्रा के जीवन और गरिमा से जुड़े सच के रूप में समझना शुरू किया।

मुझे सबसे अधिक यह बात प्रभावित करती थी कि हमारे गाँवों में कई परिवार केवल जानकारी के अभाव में पीछे छूट जाते हैं। महिलाओं को उन योजनाओं की जानकारी नहीं थी, जो उनके लिए बनी थीं। किशोरी लड़कियों को खुलकर अपनी बात कहने की जगह शायद ही मिलती थी। धीरे-धीरे मैंने समुदाय की महिलाओं और किशोरी लड़कियों के साथ बैठना शुरू किया—उनके अनुभव सुनना, अधिकारों पर चर्चा करना और आत्मविश्वास, पहचान तथा अवसरों के बारे में बातचीत करने से अपने सफ़र की शुरुवात करी।

इन संवादों ने मुझे भी उतना ही बदला, जितना दूसरों को।

आज मैं आदिवासी समुदायों के साथ जागरूकता, अधिकारों, सरकारी योजनाओं तक पहुँच और संवैधानिक मूल्यों पर काम कर रही हूँ। मुझे आज भी लगता है कि मैं हर दिन सीख रही हूँ, लेकिन अब मेरे भीतर यह विश्वास और गहरा हो गया है कि छोटे-छोटे संवाद भी बड़े बदलाव की शुरुआत कर सकते हैं।

“The future I once had to fight for, is the future I now want every girl to inherit.”

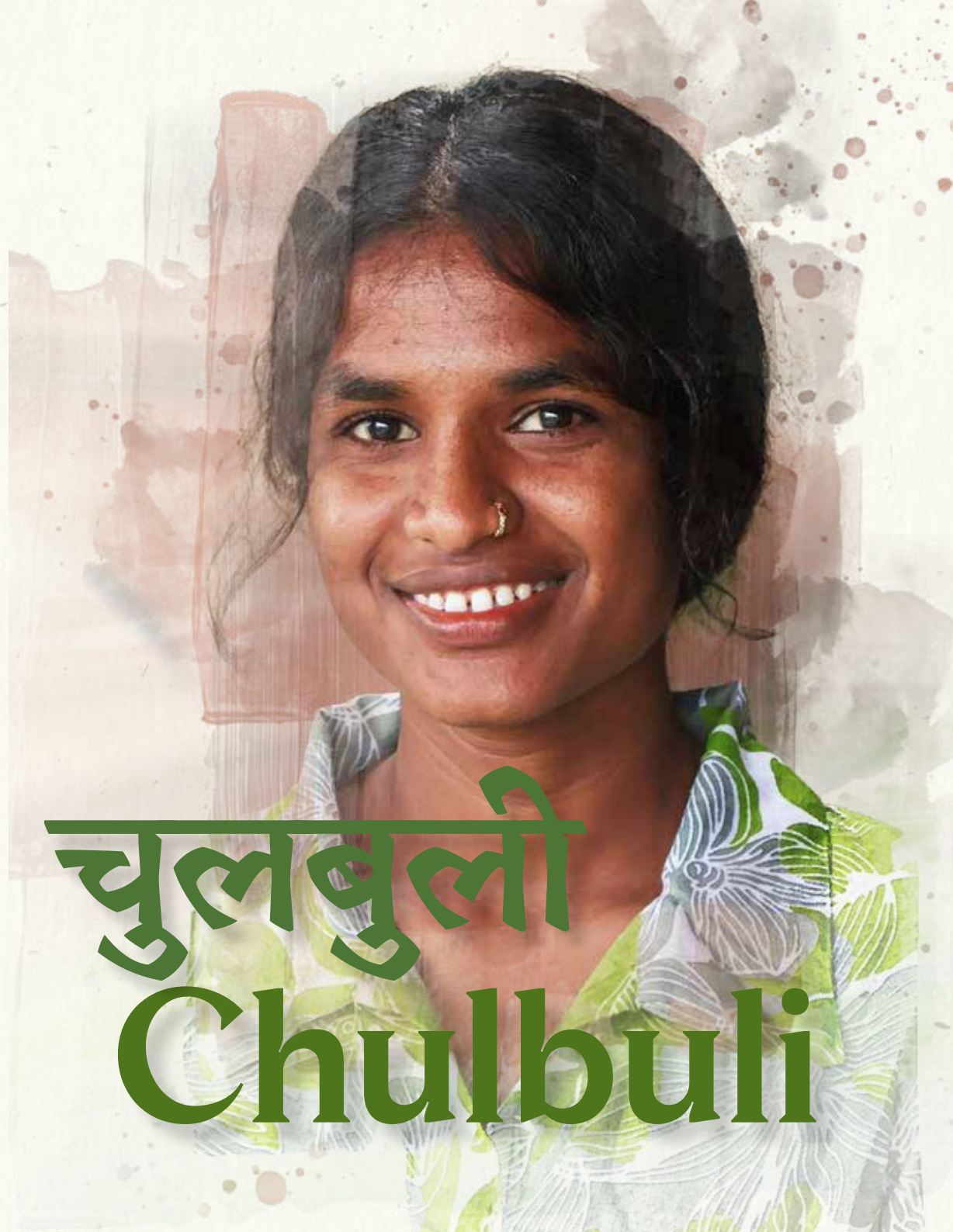
There was a time when I believed my dreams were asking for too much.

I come from a small village in Harda district and belong to a community where many children leave school long before they have the chance to imagine a different future. Girls, especially, grow up with expectations that their lives will follow a familiar path—help at home, work when needed, marry early, and quietly accept whatever comes next. For a while, I believed that would be my story too. Every year I stayed in school felt like a struggle.

My family questioned why I wanted to study. I worked as a daily wage labourer to pay my school fees. Sometimes my father managed to buy me books. Many times he couldn't. There was pressure to leave school and get married, and the constant feeling that my education did not matter. The weight of it all became so overwhelming that, at one point, I even tried to end my life. My father stopped that marriage. More than that, he refused to let me stop believing in myself.

Looking back, I realise that one person's faith can change the course of another person's life. Joining the Meri Pehchan Samvidhan Fellowship helped me understand that what I had lived through was not only my personal struggle. It reflected the reality of many girls around me. I began working with children, women, and families in my community, speaking about education, equality, constitutional rights, and the confidence to dream differently.

Through conversations, theatre, and community meetings, I encouraged parents to see education as a right rather than a privilege, and girls to believe that their future could be larger than what they had inherited.





“जिस भविष्य के लिए मुझे कभी लड़ना पड़ा, वही भविष्य आज मैं हर लड़की की विरासत बनते देखना चाहती हूँ।”

एक समय था, जब मुझे लगता था कि मेरे सपने शायद बहुत बड़े हैं।

मैं हरदा जिले के एक छोटे से गाँव से आती हूँ और ऐसे समुदाय से हूँ, जहाँ कई बच्चे एक अलग भविष्य की कल्पना करने से पहले ही स्कूल छोड़ देते हैं। लड़कियों से तो अक्सर यह अपेक्षा की जाती है कि वे घर के काम में हाथ बँटाएँ, ज़रूरत पड़ने पर मज़दूरी करें, जल्दी शादी कर लें और जो भी जीवन सामने आए, उसे चुपचाप स्वीकार कर लें। कुछ समय तक मुझे भी लगा कि शायद मेरी कहानी भी ऐसी ही होगी।

स्कूल में टिके रहना हर साल एक संघर्ष जैसा था। मेरा परिवार पूछता था कि मैं पढ़ना क्यों चाहती हूँ। अपनी फीस भरने के लिए मैंने दिहाड़ी मज़दूरी की। कभी-कभी पिताजी किताबें खरीदने में मदद कर पाते थे, कई बार नहीं कर पाते थे। पढ़ाई छोड़ने और शादी करने का दबाव लगातार बना रहता था। बार-बार यह महसूस कराया जाता था कि मेरी शिक्षा का कोई महत्व नहीं है। यह बोझ एक समय इतना भारी हो गया कि मैंने अपना जीवन समाप्त करने की कोशिश भी की।

लेकिन मेरे पिता ने वह शादी रुकवा दी। उससे भी अधिक, उन्होंने मुझे खुद पर विश्वास खोने नहीं दिया।

आज पीछे मुड़कर देखती हूँ, तो समझती हूँ कि एक व्यक्ति का विश्वास किसी दूसरे व्यक्ति के जीवन की दिशा बदल सकता है। ‘मेरी पहचान संविधान’ फेलोशिप से जुड़ने के बाद मुझे यह समझ आया कि जो मैंने जिया, वह केवल मेरी व्यक्तिगत लड़ाई नहीं थी। यह मेरे आसपास की कई लड़कियों की सच्चाई थी। मैंने अपने समुदाय में बच्चों, महिलाओं और परिवारों के साथ काम करना शुरू किया—शिक्षा, समानता, संवैधानिक अधिकारों और अलग भविष्य का सपना देखने के साहस पर बातचीत करते हुए।

संवाद, नाटक और सामुदायिक बैठकों के माध्यम से मैंने माता-पिता को यह समझाने की कोशिश की कि शिक्षा कोई सुविधा नहीं, बल्कि हर बच्चे का अधिकार है। और लड़कियों को यह भरोसा दिलाने की कोशिश की कि उनका भविष्य केवल वही नहीं है जो उन्हें विरासत में मिला है; वे अपने लिए एक नया रास्ता भी बना सकती हैं।



The journey to dignity begins not when the world accepts us, but when we stop turning away from ourselves.”

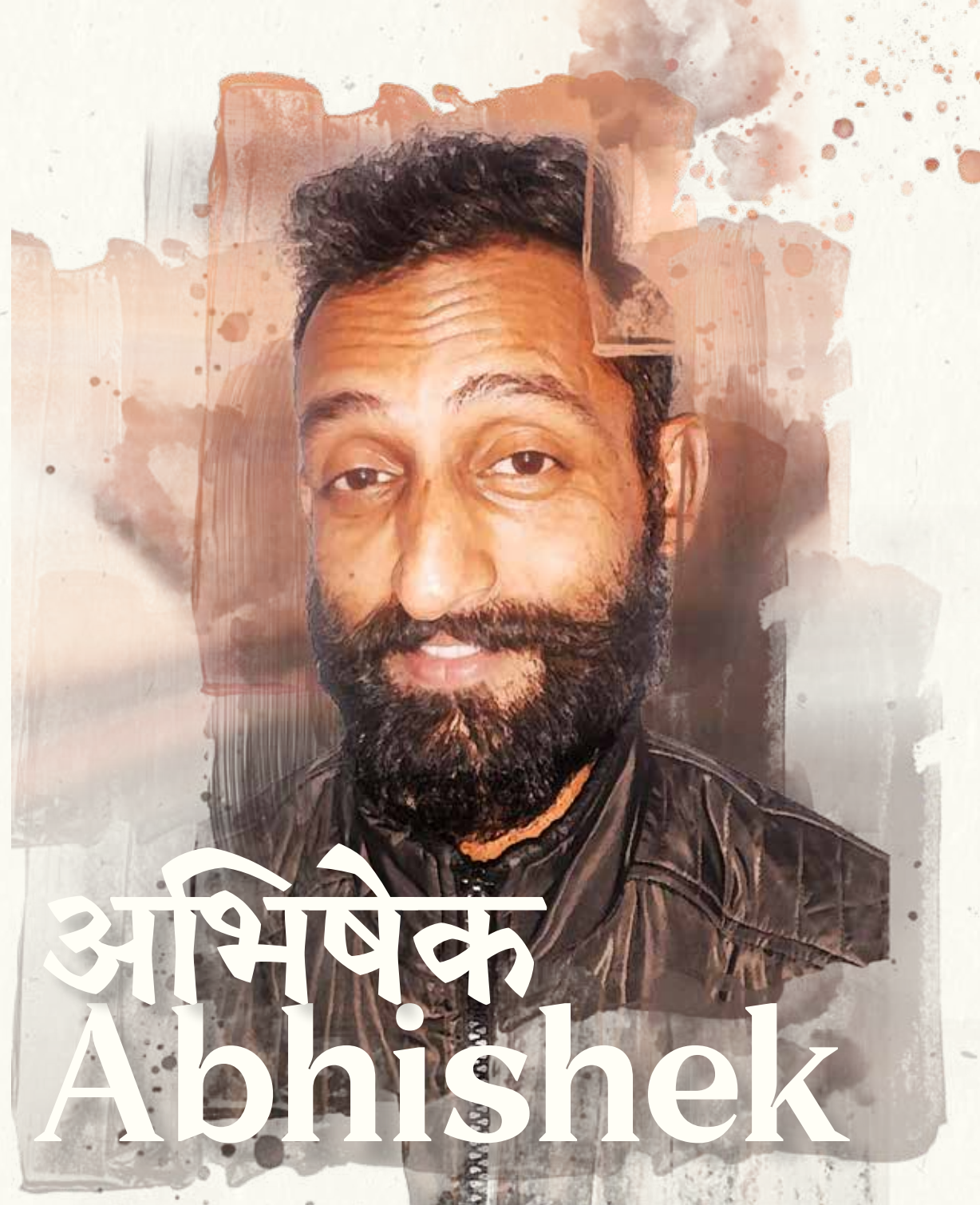
My story is a journey of courage, resilience, and self-acceptance. I was born in Akola, Maharashtra, and raised in Indore as the fourth of five children in a financially struggling family. I was born into the Buddhist Mahar community, the same community as Dr. B. R. Ambedkar. Despite this background, I have always felt a personal spiritual inclination toward Islam and Christianity. Even in the face of criticism and allegations of conversion, I continue to follow the teachings of Christianity.

My father was a mill worker. After the mill shut down and he later met with an accident, our family's financial situation became even more difficult. Amid these challenges, I worked in different jobs, as a catering waiter, hotel room service staff, and call center employee, while continuing my education. I once dreamed of becoming a doctor, but financial constraints made that impossible. Still, I did not give up and completed my graduation.

Alongside these economic struggles, I was also navigating a deeply personal journey of understanding my sexual identity. As a young man, I lived with confusion and fear, feeling different from what society expected of me. Over time, I embraced my truth and found strength in community and, eventually, acceptance within my family, even though the outside world was not always kind.

From 2011 to 2020, I worked with various social organizations on LGBTQI rights, as well as issues affecting women and children. During the fellowship, I explored constitutional values of equality and dignity, and strengthened my work through community dialogues, counselling, awareness workshops, and creating safe spaces.

I believe change begins with empathy and conversation. I find purpose in listening, guiding, and helping others rediscover hope.





“जिस भविष्य के लिए मुझे कभी लड़ना पड़ा, वही भविष्य आज मैं हर लड़की की विरासत बनते देखना चाहती हूँ।”

मेरी कहानी साहस, संघर्ष और स्वयं को स्वीकार करने की यात्रा है। मेरा जन्म महाराष्ट्र के अकोला में हुआ और मेरा पालन-पोषण इंदौर में एक आर्थिक रूप से संघर्षरत परिवार में हुआ। हम पाँच भाई-बहनों में मैं चौथे स्थान पर हूँ। मेरा जन्म बौद्ध महार समुदाय में हुआ, वही समुदाय जिससे डॉ. भीमराव आंबेडकर भी जुड़े थे। इस पृष्ठभूमि के बावजूद, बचपन से ही मेरा आध्यात्मिक झुकाव इस्लाम और ईसाई धर्म की शिक्षाओं की ओर रहा। धर्म परिवर्तन के आरोपों और आलोचनाओं के बावजूद, मैंने ईसाई धर्म की शिक्षाओं में अपना विश्वास बनाए रखा।

मेरे पिता एक मिल में काम करते थे। मिल बंद होने और बाद में मेरे पिता का एक दुर्घटना का शिकार होने के कारण बाद हमारे परिवार की आर्थिक स्थिति और कठिन हो गई। इन परिस्थितियों में मैंने पढ़ाई जारी रखते हुए अलग-अलग तरह के काम किए—कैटरिंग में वेटर, होटल में रूम सर्विस कर्मचारी और कॉल सेंटर में भी काम किया। मेरा सपना डॉक्टर बनने का था, लेकिन आर्थिक सीमाओं ने वह सपना पूरा नहीं होने दिया। फिर भी मैंने हार नहीं मानी और अपनी स्नातक की पढ़ाई पूरी की।

इन आर्थिक संघर्षों के साथ-साथ मैं अपनी यौनिक पहचान को समझने की एक गहरी व्यक्तिगत यात्रा से भी गुजर रहा था। एक युवा के रूप में मैं लंबे समय तक उलझन, डर और अकेलेपन के साथ जीता रहा। मुझे हमेशा लगता था कि मैं समाज की अपेक्षाओं से अलग हूँ। धीरे-धीरे मैंने स्वयं को स्वीकार करना सीखा। अपने समुदाय में मुझे सहारा मिला और समय के साथ मेरे परिवार ने भी मुझे स्वीकार किया, भले ही समाज हमेशा इतना सहज नहीं रहा।

वर्ष 2011 से 2020 तक मैंने विभिन्न सामाजिक संस्थाओं के साथ मिलकर LGBTQ+ समुदाय, महिलाओं और बच्चों के अधिकारों पर काम किया। ‘मेरी पहचान संविधान’ फेलोशिप के दौरान मैंने समानता और गरिमा जैसे संवैधानिक मूल्यों को और गहराई से समझा। इस कार्यक्रम ने सामुदायिक संवाद, परामर्श, जागरूकता कार्यशालाओं और सुरक्षित एवं समावेशी स्थानों के निर्माण के माध्यम से मेरे काम को नई दिशा दी।

मेरा विश्वास है कि बदलाव की शुरुआत सहानुभूति और संवाद से होती है। आज मुझे सबसे अधिक अर्थ इस बात में मिलता है कि मैं लोगों की बात सुन सकूँ, उनका साथ दे सकूँ और उन्हें अपने भीतर फिर से उम्मीद तलाशने में सहयोग कर सकूँ।

“Cultivation of mind should be the ultimate aim of human existence.”

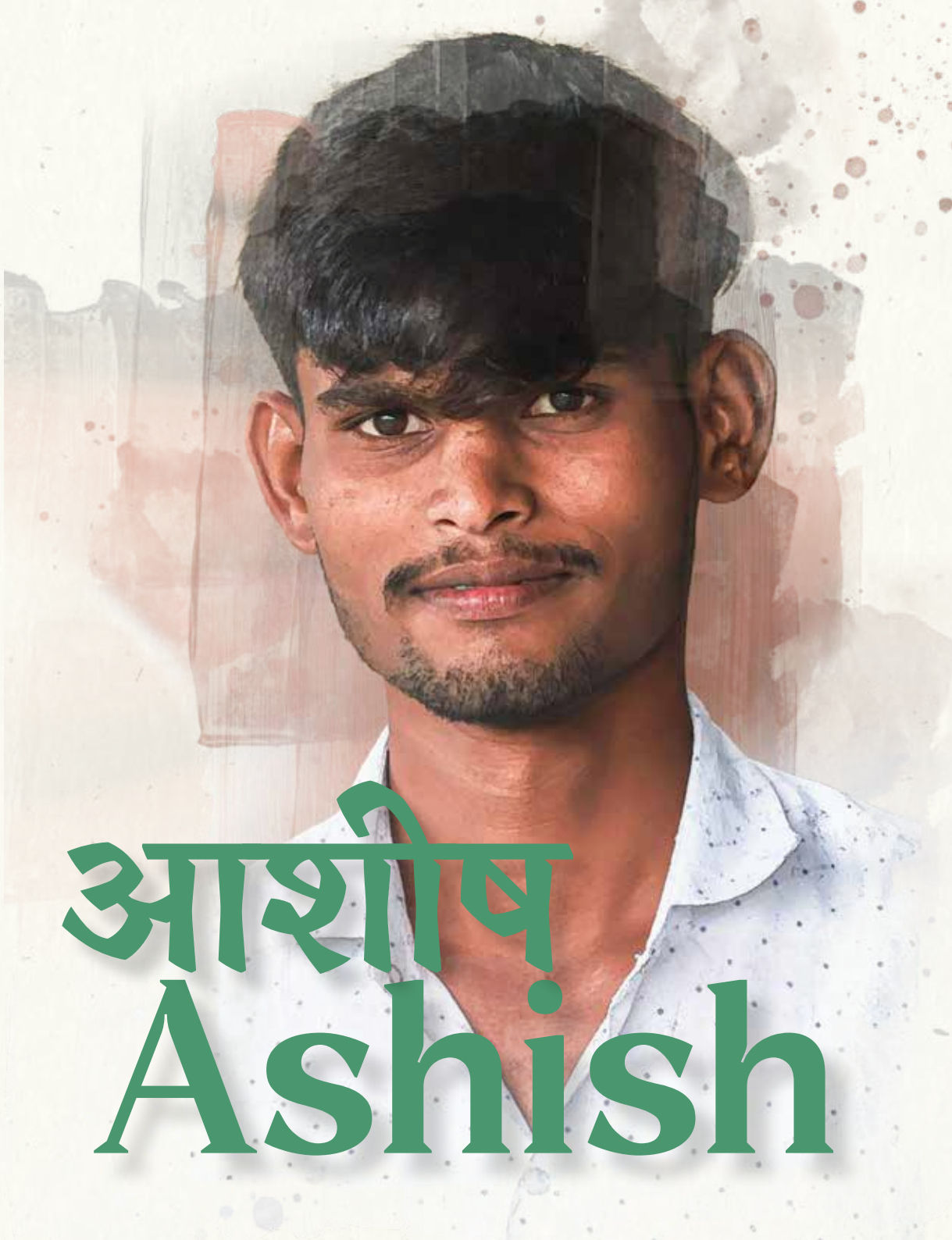
— Dr. B. R. Ambedkar

I come from Bhilkhedi village in Khandwa district and belong to the Pardhi community, one of the de-notified tribes. My journey has been shaped by resilience, reflection, and a deep commitment to social change. I am currently pursuing my Class 12 education, but my path has not been linear.

My entry into school began with hesitation as well as hope. However, severe financial hardship forced me to drop out and join my family in daily wage labour and small business activities. For four years, I faced many struggles. These years taught me the harsh realities of economic vulnerability and helped me understand the true value of education.

Determined to return to studies, I completed Class 10 privately while also beginning to engage with social issues in my community. Today, my work focuses on child marriage, caste panchayats, access to education, gender equality, and menstrual awareness. Since I have personally experienced the pain of dropping out, I understand how illiteracy can lead to exploitation, violence, and loss of dignity, especially among marginalized youth.

The fellowship became a turning point in my life. It gave me financial support, but more importantly, it helped me engage deeply with the constitutional values of equality, liberty, fraternity, and justice. Today, I try to live these values in my personal life and community work. Through dialogue and example, I work to challenge discrimination and promote awareness in my community.

A portrait of a young man with dark hair and a light beard, wearing a white shirt. The background is a soft, painterly style with warm tones. The name 'Ashish' is written in large green letters at the bottom right, with the Hindi name 'आशीष' above it.

आशीष
Ashish



“मन का विकास ही मानव जीवन का अंतिम लक्ष्य होना चाहिए।”

— डॉ. भीमराव आंबेडकर

मैं खंडवा जिले के भीलखेड़ी गाँव से हूँ और पारधी समुदाय से आता हूँ, जो भारत की विमुक्त जनजातियों में से एक है। मेरी यात्रा संघर्ष, आत्मचिंतन और सामाजिक परिवर्तन के प्रति गहरी प्रतिबद्धता से बनी है। वर्तमान में मैं कक्षा 12 की पढ़ाई कर रहा हूँ, लेकिन यहाँ तक पहुँचने का मेरा सफर सीधा या आसान नहीं रहा।

स्कूल की मेरी शुरुआत उम्मीद और संकोच, दोनों के साथ हुई थी। लेकिन परिवार की गंभीर आर्थिक परिस्थितियों ने मुझे पढ़ाई बीच में छोड़ने के लिए मजबूर कर दिया। मुझे अपने परिवार के साथ दिहाड़ी मजदूरी और छोटे-मोटे व्यवसाय में हाथ बँटाना पड़ा। लगभग चार वर्षों तक मैंने अनेक कठिनाइयों का सामना किया। उन वर्षों ने मुझे आर्थिक असुरक्षा की कठोर सच्चाइयों से परिचित कराया और शिक्षा के वास्तविक महत्व को समझाया।



पढ़ाई दोबारा शुरू करने के दृढ़ संकल्प के साथ मैंने मुक्त स्कूल के माध्यम से कक्षा 10वी की परीक्षा पूरी की। इसी दौरान मैंने अपने समुदाय के सामाजिक मुद्दों पर भी काम करना शुरू किया। आज मेरा काम बाल विवाह, जाति पंचायतों, शिक्षा तक पहुँच, लैंगिक समानता और मासिक धर्म से जुड़ी जागरूकता जैसे विषयों पर केंद्रित है। क्योंकि मैंने स्वयं पढ़ाई छूटने का दर्द महसूस किया है, इसलिए मैं अच्छी तरह समझता हूँ कि अशिक्षा किस तरह, विशेषकर हाशिए पर रहने वाले युवाओं को शोषण, हिंसा और गरिमा के नुकसान की ओर धकेल सकती है।

‘मेरी पहचान संविधान’ फेलोशिप मेरे जीवन का एक महत्वपूर्ण मोड़ साबित हुई। इसने मुझे आर्थिक सहयोग तो दिया ही, उससे भी अधिक इसके माध्यम से मुझे समानता, स्वतंत्रता, बंधुत्व और न्याय जैसे संवैधानिक मूल्यों को गहराई से समझने का अवसर दिया। आज मैं इन मूल्यों को अपने व्यक्तिगत जीवन और सामुदायिक कार्य, दोनों में जीने का प्रयास करता हूँ। संवाद, जागरूकता और अपने व्यवहार के माध्यम से मैं अपने समुदाय में भेदभाव को चुनौती देने और समानता की समझ विकसित करने की दिशा में लगातार काम कर रहा हूँ।

**“The road to the Truth is a labor of the heart,
not of the mind.”**

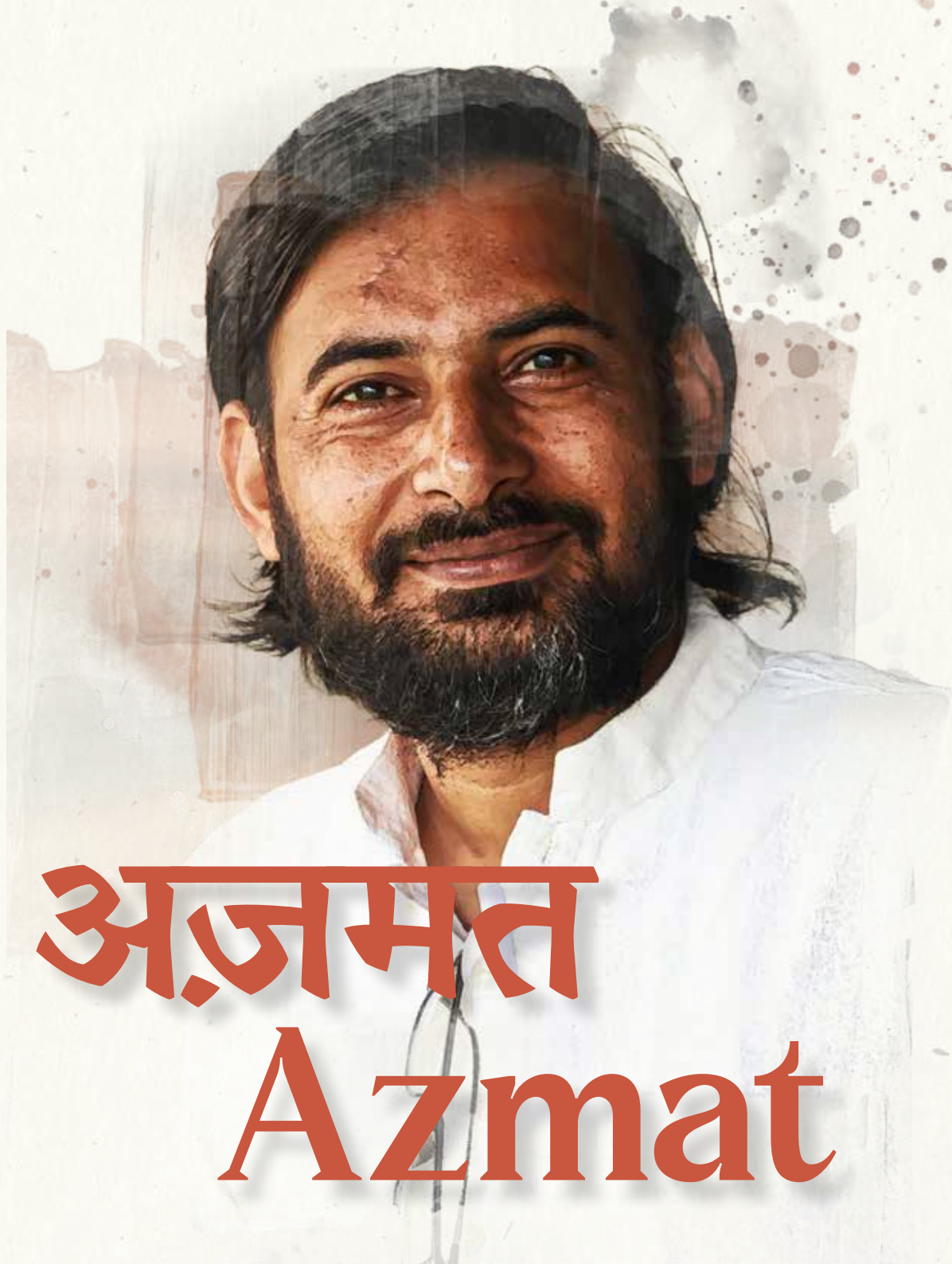
— Shams Tabrizi

My journey has been one of reflection, social awakening, and ethical growth. I was born in 1987 in Shahdol district into a modest Muslim family. My early educational path was marked by struggle. After failing my Class 10 examination, I drifted away from formal schooling. Yet, my curiosity to learn from life never faded. Determined to continue, I later completed my secondary and higher secondary education through open schooling, giving myself a second chance.

A turning point came in 2003, when I participated in a National Youth Camp. Conversations around Gandhian values, truth, non-violence, and love deeply influenced me and sowed the seeds of social consciousness. In 2005, spending eight days with an Adivasi community exposed me to stark inequalities and strengthened my resolve to dedicate my life to challenging injustice.

Through the Constitution Fellowship, I have focused on leadership development among women and youth. Using dialogue and participatory engagement, I work to help communities not only understand but also live the constitutional values of equality, justice, and fraternity.

For me, this journey is not only about social change. It is also an ongoing process of personal, ideological, and moral transformation.





“सत्य तक पहुँचने का मार्ग बुद्धि से नहीं, हृदय की साधना से बनता है।”

— शम्स तबरीज़

मेरी यात्रा आत्मचिंतन, सामाजिक चेतना और नैतिक विकास की यात्रा रही है। मेरा जन्म वर्ष 1987 में मध्य प्रदेश के शहडोल ज़िले में एक साधारण मुस्लिम परिवार में हुआ। मेरी प्रारंभिक शिक्षा आसान नहीं रही। कक्षा 10 की परीक्षा में असफल होने के बाद मेरी औपचारिक पढ़ाई छूट गई। लेकिन सीखने की मेरी जिज्ञासा कभी समाप्त नहीं हुई। मैंने स्वयं को एक और अवसर देने का निर्णय लिया और मुक्त विद्यालय के माध्यम से माध्यमिक तथा उच्च माध्यमिक शिक्षा पूरी की।

मेरे जीवन का एक महत्वपूर्ण मोड़ वर्ष 2003 में आया, जब मुझे एक राष्ट्रीय युवा शिविर में भाग लेने का अवसर मिला। वहाँ गांधीवादी विचारों—सत्य, अहिंसा और प्रेम—पर हुए संवादों ने मुझे गहराई से प्रभावित किया। इन्हीं अनुभवों ने मेरे भीतर सामाजिक चेतना के बीज बोए। इसके बाद वर्ष 2005 में एक आदिवासी समुदाय के साथ आठ दिन बिताने का अवसर मिला, वहाँ मैंने असमानताओं को बहुत करीब से देखा। इस अनुभव ने मेरे भीतर यह संकल्प और मजबूत किया कि मैं अपना जीवन अन्याय को चुनौती देने और समाज में समानता के लिए काम करने को समर्पित करूँ।

‘मेरी पहचान संविधान’ फेलोशिप के माध्यम से मेरा काम महिलाओं और युवाओं के नेतृत्व विकास पर केंद्रित रहा है। संवाद और सहभागी प्रक्रियाओं के ज़रिए मैं समुदायों के साथ काम करता हूँ, ताकि वे केवल संविधान के मूल्यों को समझें ही नहीं, बल्कि समानता, न्याय और बंधुत्व जैसे मूल्यों को अपने रोज़मर्रा के जीवन में भी जी सकें।

मेरे लिए यह यात्रा केवल सामाजिक परिवर्तन की नहीं है। यह स्वयं को लगातार समझने, अपने विचारों को परिष्कृत करने और नैतिक रूप से बेहतर इंसान बनने की भी एक निरंतर प्रक्रिया है।

“The purpose of art is to lay bare the questions that have been hidden by the answers.”

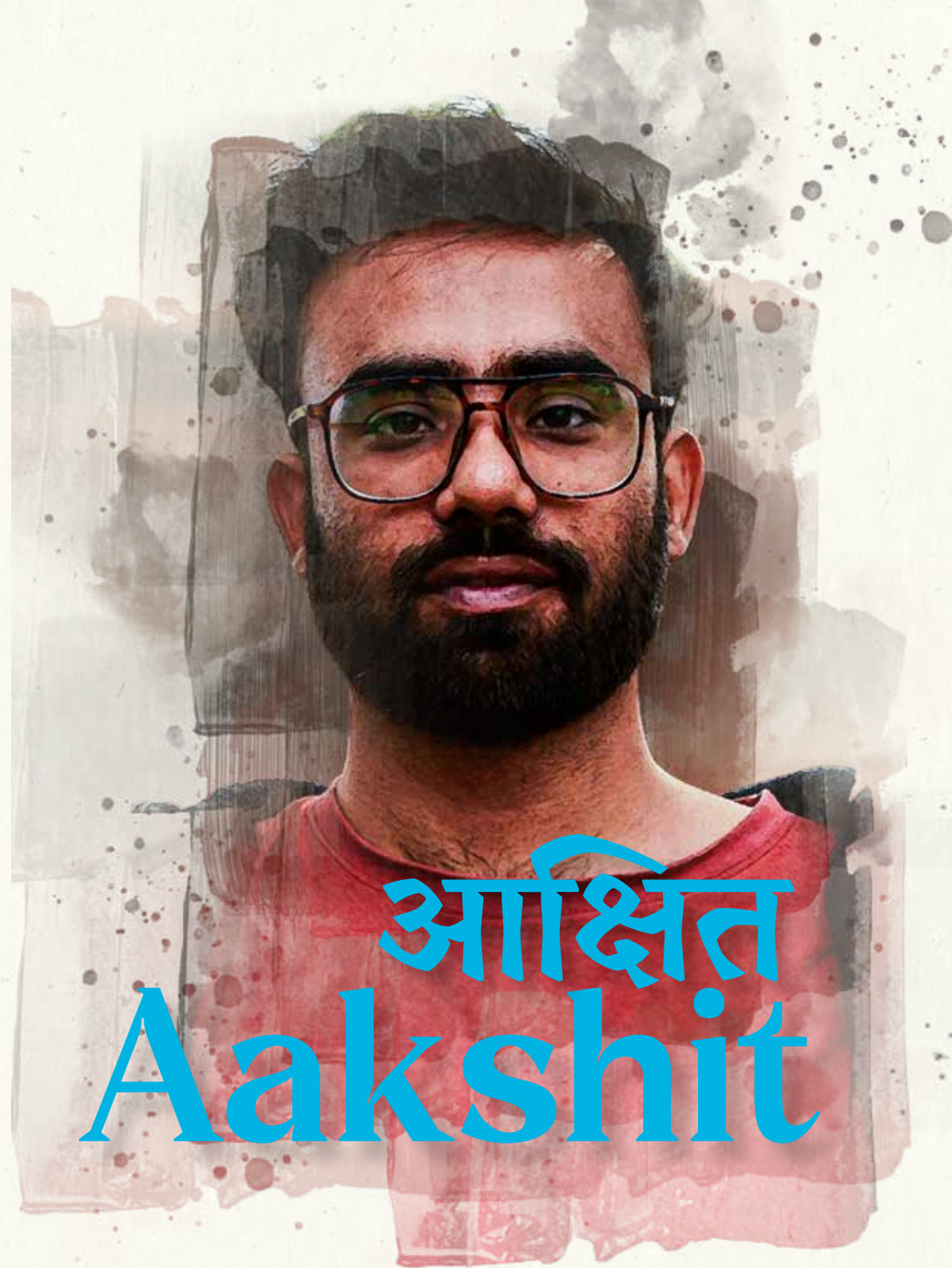
— James Baldwin

I am originally from Chandigarh and now based in Bhopal. I am a theatre artist and musician, and I use performance as a tool for social change. Growing up in a culturally vibrant environment, I developed a deep belief in the power of art to question social norms and reflect lived realities. A few years ago, I moved to Bhopal to engage more closely with grassroots communities and work on pressing social concerns.

A defining moment in my journey was a theatre production on gender-based discrimination. The performance sparked powerful conversations with audiences. Listening to real stories of inequality and silence strengthened my resolve to focus on gender justice and dignity.

Since then, I have conducted theatre and music workshops with youth, women, and community groups. I encourage participants to perform, share their stories, and engage in dialogue. Post-performance discussions and Q&A sessions are a core part of my work, as they create safe spaces for reflection, empathy, and honest conversations.

Through the Fellowship, I have deepened my understanding of equality, justice, and human dignity. My intervention integrates theatre, music, and constitutional values to foster awareness and empowerment. For me, art is not just expression. It is a pathway to dialogue, solidarity, and a more just society.





“कला का उद्देश्य उन प्रश्नों को उजागर करना है, जिन्हें तैयार उत्तरों ने वर्षों से छिपा रखा है।”

— जेम्स बाल्डविन

मैं मूल रूप से चंडीगढ़ का रहने वाला हूँ और वर्तमान में भोपाल में कार्यरत हूँ। मैं एक रंगकर्मी और संगीतकार हूँ, और मेरे लिए कला सामाजिक परिवर्तन का एक माध्यम है। सांस्कृतिक रूप से समृद्ध वातावरण में बड़े होने के कारण बचपन से ही मेरा विश्वास रहा कि कला समाज की स्थापित धारणाओं पर सवाल उठा सकती है और लोगों के जीवन की वास्तविकताओं को सामने ला सकती है। कुछ वर्ष पहले मैं भोपाल आया ताकि जमीनी स्तर पर समुदायों के साथ काम कर सकूँ और सामाजिक सरोकारों से अधिक गहराई से जुड़ सकूँ।

मेरी यात्रा का एक महत्वपूर्ण मोड़ वह नाटक था, जो लैंगिक भेदभाव पर आधारित था। उस प्रस्तुति ने दर्शकों के बीच गहरे और ईमानदार संवादों को जन्म दिया। लोगों की असमानता, भेदभाव और लंबे समय से दबे हुए अनुभवों को सुनते हुए मेरे भीतर यह संकल्प और मजबूत हुआ कि मैं लैंगिक न्याय और मानवीय गरिमा के मुद्दों पर सक्रिय एवं लगातार काम करूँ।

तब से मैं युवाओं, महिलाओं और विभिन्न समुदायों के साथ रंगमंच और संगीत की कार्यशालाएँ आयोजित कर रहा हूँ। मेरा प्रयास रहता है कि लोग मंच पर आएँ, अपनी कहानियाँ साझा करें और एक-दूसरे से संवाद करें। हर प्रस्तुति के बाद होने वाली चर्चा और प्रश्नोत्तर मेरे काम का महत्वपूर्ण हिस्सा है, क्योंकि यही वे सुरक्षित स्थान हैं जहाँ आत्ममंथन, संवेदना और ईमानदार बातचीत संभव हो पाती है।

‘मेरी पहचान संविधान’ फेलोशिप के माध्यम से मैंने समानता, न्याय और मानवीय गरिमा जैसे संवैधानिक मूल्यों को और गहराई से समझा। आज मैं अपने काम में रंगमंच, संगीत और संवैधानिक मूल्यों को एक साथ जोड़कर जागरूकता, संवाद और सामुदायिक सशक्तिकरण की दिशा में काम कर रहा हूँ।

“The heart has its own language. The heart knows a hundred thousand ways to speak.”

— Shams Tabrizi

My journey is one of art, courage, and a deep commitment to equality. For me, colours and lines are not merely tools of creation, but a language to understand and transform society. During my training at Riyaz Academy for Illustrations, I learned that drawings are more than shapes and they have the potential to give voice to emotions, lived experiences, and untold stories.

At Swaraj University, I chose a path of learning from life beyond conventional academics. There, my artistic practice deepened through meaningful social engagement. The freedom to express my thoughts without inhibition nurtured my confidence and became the source of my creative energy.

Over the past year, I have been working with women in Mandwa Basti, using art and dialogue to bring forward everyday stories that often remain unheard. I realized that when people are silenced, art can speak.

Through the PHIA Fellowship, I have developed a stronger understanding of constitutional values, equality, dignity, and freedom, and how art, film, and photography can bring these values into public conversation. For me, the Constitution is not a distant document, but a living practice, an everyday light guiding my work toward a more humane and just society.

A portrait of a woman with short dark hair, wearing glasses and a bindi, smiling. The background is a light, textured wash of colors. The name 'Amrita' is written in large green Devanagari and Latin script over the bottom right of the portrait.

अमृता
Amrita



“हृदय की अपनी एक भाषा होती है। वह बोलने के हज़ारों रास्ते जानता है।”

— शम्स तबरीज़

मेरी यात्रा कला, साहस और समानता के प्रति गहरी प्रतिबद्धता की यात्रा है। मेरे लिए रंग और रेखाएँ केवल चित्र बनाने के साधन नहीं हैं, बल्कि समाज को समझने और उसमें बदलाव की संभावनाएँ खोजने की एक भाषा हैं। रियाज़ एकेडमी ऑफ़ इलस्ट्रेशन में प्रशिक्षण के दौरान मैंने जाना कि चित्र केवल आकृतियाँ नहीं होते; उनमें भावनाओं, जीवन के अनुभवों और अनकही कहानियों को आवाज़ देने की क्षमता होती है।

स्वराज विश्वविद्यालय में मैंने पारंपरिक शिक्षा से अलग जीवन से सीखने का रास्ता चुना। वहाँ समुदायों के साथ सार्थक जुड़ाव ने मेरी कला को नई गहराई दी। बिना किसी झिझक के अपने विचारों को व्यक्त करने की आज्ञादी ने मेरे भीतर आत्मविश्वास जगाया और वही मेरी रचनात्मक ऊर्जा का आधार बनी।

‘मेरी पहचान संविधान’ फेलोशिप के माध्यम से वर्तमान में, मैं पिछले एक वर्ष से मैं मंडवा बस्ती की महिलाओं के साथ काम कर रही हूँ। कला और संवाद के माध्यम से हम उन रोज़मर्रा की कहानियों को सामने लाने की कोशिश करते हैं, जो अक्सर अनसुनी रह जाती हैं। इसी प्रक्रिया में मैंने महसूस किया कि जब लोगों की आवाज़ दबा दी जाती है, तब कला उनके लिए बोल सकती है। ‘मेरी पहचान संविधान’ फेलोशिप के माध्यम से समानता, गरिमा और स्वतंत्रता जैसे संवैधानिक मूल्यों की मेरी समझ और गहरी हुई। इसने मुझे यह भी सिखाया कि कला, फ़िल्म और फ़ोटोग्राफी जैसे माध्यम इन मूल्यों को समाज के बीच जीवंत संवाद का हिस्सा बना सकते हैं।

मेरे लिए संविधान कोई दूर का या केवल कानूनी दस्तावेज़ नहीं है। वह एक जीवंत अभ्यास है—एक ऐसी रोशनी, जो हर दिन मेरे काम को अधिक मानवीय, न्यायपूर्ण और संवेदनशील समाज की ओर दिशा देती है।

“Some journeys of life go through you only”

My story is of a life that has travelled from tradition to questioning, and from lived experience to constitutional consciousness. Pursuing an M.A. in Political Science was a natural choice for me, shaped by early exposure to political discussions at home. Newspaper debates, critical essays, and conversations on public affairs nurtured in me a habit of connecting theory with lived realities.

I was raised in a family where religion and tradition held strong influence. My journey gradually shifted direction through my engagement with Adivasi communities during doctoral research. Fieldwork revealed to me that knowledge does not reside only in books. It thrives in lived experiences and in relationships with land and nature. It was here that questions of equality and dignity began to take deeper root in me.

My professional experiences with Manasi Health Institute, The Hunger Project, and journalism fellowships further strengthened my commitment to social justice. Whether administering the Preamble oath to elected women representatives or helping children relate constitutional values to their daily lives, my work has consistently centred on the values of equality, liberty, fraternity, and justice.

The fellowship deepened my path of reflection. For me, the Constitution is no longer merely a text. It is a way of living, a continuous effort to embody the spirit of “We, the People” in everyday practice.

A portrait of a woman with dark hair, wearing glasses and a red shawl over a blue patterned top. She is smiling and looking slightly to the right. The background is a soft, painterly wash of warm colors.

अंजना
Anjana



“जीवन की कुछ यात्राएँ बाहर नहीं, भीतर से होकर गुजरती हैं।”

मेरी यात्रा परंपरा से प्रश्न तक, और जीवन के अनुभवों से संवैधानिक चेतना तक पहुँचने की यात्रा रही है। राजनीति विज्ञान में स्नातकोत्तर करना मेरे लिए एक स्वाभाविक निर्णय था। बचपन से ही घर में राजनीति, समाज और सार्वजनिक जीवन पर होने वाली चर्चाओं ने मेरे सोचने का ढंग बनाया। अखबारों की बहसें, विचारोत्तेजक लेख और समसामयिक मुद्दों पर संवाद ने मुझे सिखाया कि सिद्धांतों को जीवन की वास्तविकताओं से जोड़कर समझना कितना ज़रूरी है।

मेरा पालन-पोषण ऐसे परिवार में हुआ, जहाँ धर्म और परंपराओं का गहरा प्रभाव था। लेकिन शोध के दौरान आदिवासी समुदायों के बीच काम करने का अवसर मिला, जिसने मेरी सोच की दिशा बदल दी। वहाँ मैंने जाना कि ज्ञान केवल पुस्तकों में नहीं होता; वह लोगों के जीवन, उनके अनुभवों और प्रकृति के साथ उनके रिश्तों में भी बसता है। यहीं से समानता, गरिमा और न्याय जैसे प्रश्न मेरे भीतर और गहराई से उतरने लगे।

मानसी हेल्थ इंस्टीट्यूट, द हंगर प्रोजेक्ट और पत्रकारिता से जुड़े विभिन्न फेलोशिप अनुभवों ने सामाजिक न्याय के प्रति मेरी प्रतिबद्धता को और मजबूत किया। चाहे निर्वाचित महिला जनप्रतिनिधियों को संविधान की प्रस्तावना की शपथ दिलाना हो या बच्चों को संवैधानिक मूल्यों को उनके रोज़मर्रा के जीवन से जोड़कर समझाना—मेरे काम का केंद्र हमेशा समानता, स्वतंत्रता, बंधुत्व और न्याय जैसे मूल्य रहे हैं।

‘मेरी पहचान संविधान’ फेलोशिप ने इस आत्ममंथन की यात्रा को और गहरा किया। आज मेरे लिए संविधान केवल एक दस्तावेज़ नहीं है। यह जीवन जीने का एक तरीका है—हर दिन “हम भारत के लोग” की भावना को अपने विचारों, व्यवहार और काम में साकार करने का निरंतर प्रयास।



“The heart that has been broken open can hold the whole world.”
— Shams Tabrizi

I come from a small village in Panna district of Madhya Pradesh. I was born into a Dalit family where poverty, caste discrimination and patriarchy shaped everyday life. Ours was a large family with eight sisters and two brothers, and I grew up watching my mother struggle against both economic hardship and the social prejudice of raising so many daughters. Despite limited means, my parents believed that education could change our future and ensured that all of us studied, largely through government residential schools. Those early years taught me resilience, self-reliance and the importance of dignity.

Sports, education and community service became the foundations of my life. I pursued postgraduate studies in Sociology, represented my university in kabaddi, earned NCC certifications, and actively participated in the National Service Scheme. These experiences strengthened my confidence, leadership and commitment to public service.

One of the most defining moments of my life came when I survived sexual violence. Choosing to pursue justice was not easy. I faced intimidation, social stigma and pressure to remain silent, but I refused to withdraw. Fighting the case transformed my understanding of dignity, equality and justice. It made me realise that constitutional rights have meaning only when ordinary people have the courage and support to claim them. That experience continues to shape both my personal convictions and my work with women and marginalised communities.

The Constitutional Fellowship gave deeper direction to this journey. It strengthened my understanding of equality, liberty, justice and fraternity, and helped me translate these values into community action.

Today, I work to ensure that women, Dalits and other marginalised communities recognise their rights, raise their voices without fear, and participate confidently in shaping their own futures. I believe that real social transformation begins when people stop accepting injustice as their destiny and begin to see themselves as equal citizens under the Constitution.

A portrait of a woman with dark hair, wearing a pink patterned top and a necklace. She has a bindi on her forehead and is looking directly at the camera with a slight smile. The background is a soft, painterly style with warm tones and some abstract shapes.

भानु
Bhanu

“जिस हृदय को टूटकर खुलना आया है, वह पूरे संसार को अपने भीतर समेट सकता है।”

— शम्स तबरीज़

मैं मध्य प्रदेश के पन्ना जिले के एक छोटे से गाँव से आती हूँ। मेरा जन्म एक दलित परिवार में हुआ, जहाँ गरीबी, जातिगत भेदभाव और पितृसत्ता रोजमर्रा के जीवन का हिस्सा थे। हमारे परिवार में आठ बहनों और दो भाइयों का बड़ा परिवार था। बचपन से मैंने अपनी माँ को आर्थिक कठिनाइयों के साथ-साथ इतनी बेटियों की माँ होने के कारण समाज के पूर्वाग्रहों का सामना करते देखा। सीमित संसाधनों के बावजूद मेरे माता-पिता का विश्वास था कि शिक्षा ही हमारे भविष्य को बदल सकती है। उन्होंने हम सभी भाई-बहनों की पढ़ाई सुनिश्चित की, जिसका बड़ा आधार सरकारी आवासीय विद्यालय बने। उन्हीं वर्षों ने मुझे संघर्ष करना, आत्मनिर्भर बनना और गरिमा के साथ जीना सिखाया।

खेल, शिक्षा और सामुदायिक सेवा धीरे-धीरे मेरे जीवन की आधारशिला बन गए। मैंने समाजशास्त्र में स्नातकोत्तर की पढ़ाई की, विश्वविद्यालय की ओर से कबड्डी प्रतियोगिताओं में भाग लिया, एनसीसी के प्रमाणपत्र प्राप्त किए और राष्ट्रीय सेवा योजना (एनएसएस) से सक्रिय रूप से जुड़ी रही। इन अनुभवों ने मेरे भीतर आत्मविश्वास, नेतृत्व क्षमता और समाज के प्रति जिम्मेदारी की भावना को और मजबूत किया।

मेरे जीवन का सबसे निर्णायक मोड़ तब आया, जब मैं यौन हिंसा की एक घटना से गुजरी। न्याय के लिए लड़ना आसान नहीं था। मुझे डराया गया, सामाजिक कलंक का सामना करना पड़ा और बार-बार चुप रहने का दबाव बनाया गया। लेकिन मैंने पीछे हटने से इनकार कर दिया। न्याय की उस लड़ाई ने गरिमा, समानता और न्याय के अर्थ को मेरे भीतर हमेशा के लिए बदल दिया। मैंने समझा कि संवैधानिक अधिकारों का वास्तविक महत्व तभी है, जब साधारण लोगों में उन्हें पाने का साहस हो और समाज उनके साथ खड़ा हो। वही अनुभव आज भी मेरे व्यक्तिगत विश्वासों और महिलाओं तथा हाशिए पर रह रहे समुदायों के साथ किए जा रहे मेरे काम की दिशा तय करता है।

‘मेरी पहचान संविधान’ फेलोशिप ने इस यात्रा को और गहराई दी। इसने समानता, स्वतंत्रता, न्याय और बंधुत्व जैसे संवैधानिक मूल्यों की मेरी समझ को मजबूत किया और मुझे इन्हें सामुदायिक कार्यों के माध्यम से जीवन में उतारने की दृष्टि दी। आज मैं महिलाओं, दलितों और अन्य वंचित समुदायों के साथ काम करती हूँ, ताकि वे अपने अधिकारों को पहचानें, बिना किसी भय के अपनी आवाज़ उठाएँ और अपने भविष्य के निर्माण में आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ सकें।

मेरा विश्वास है कि वास्तविक सामाजिक परिवर्तन तब शुरू होता है, जब लोग अन्याय को अपनी नियति मानना छोड़ देते हैं और स्वयं को संविधान के तहत समान अधिकारों वाले नागरिक के रूप में देखना शुरू करते हैं।



“The soul has been given its own ears to hear things the mind does not understand.”

– Shams Tabrizi

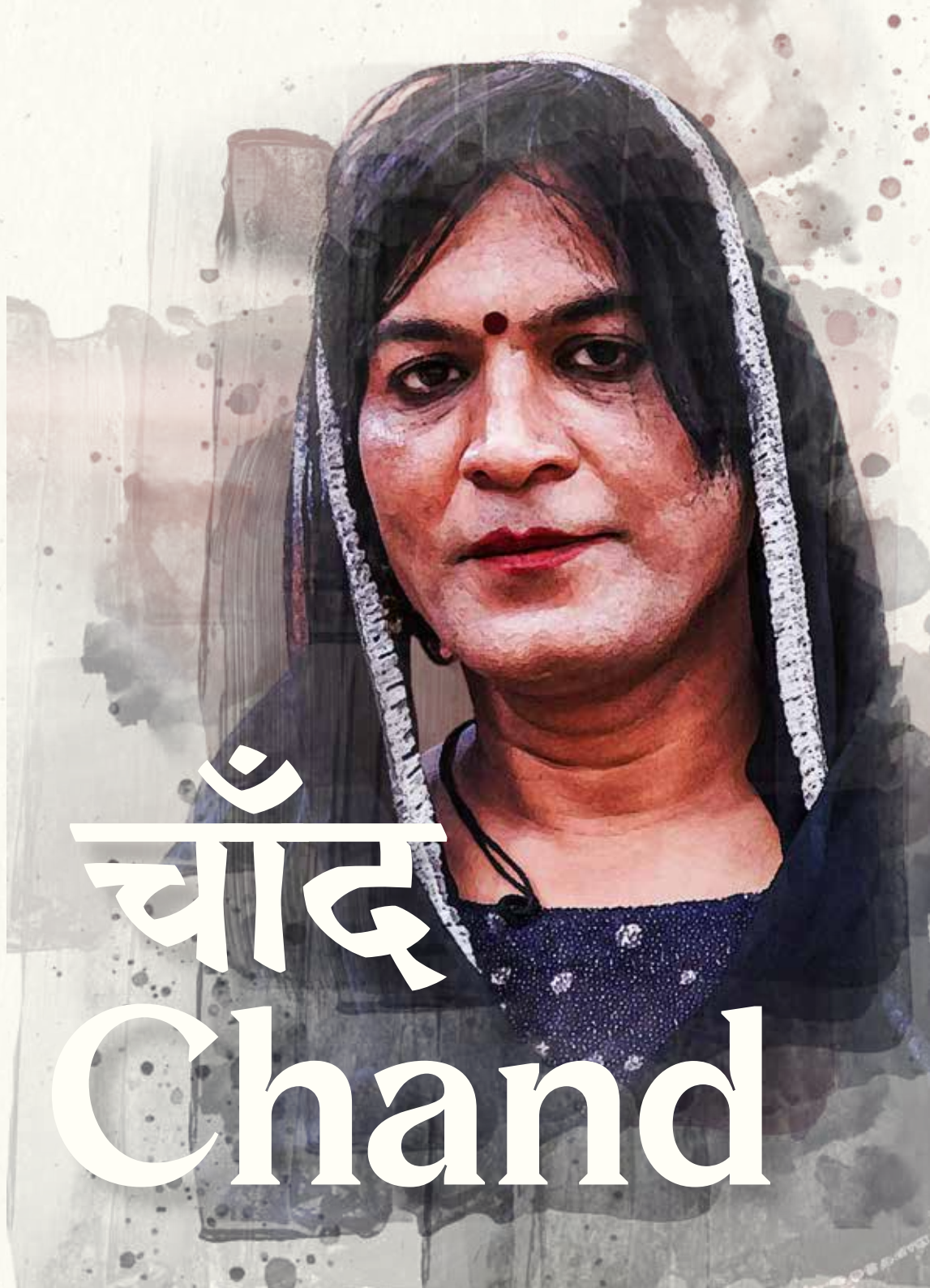
My life has been shaped by struggle, resilience and the determination to live with dignity. I lost both my parents when I was just five years old and was raised with the support of my elder sister. From childhood, I felt different from other boys and naturally gravitated towards girls, although I did not then understand my identity. As I grew older, that difference became the basis for relentless ridicule, discrimination and violence. Throughout school and college, I faced abusive remarks, physical harassment and social exclusion simply because I did not conform to society's expectations of gender. There were moments when the humiliation became so overwhelming that I questioned whether life was worth living. Yet, with my sister's encouragement, I chose education over despair and completed my graduation followed by a Master's in Social Work.

During this journey, I came to understand and embrace my identity as a transgender person. Economic hardship and discrimination made it almost impossible to find employment, eventually leading me to spend some years within the Kinnar community. Living there allowed me to understand not only my own struggles but also the systemic exclusion, lack of opportunities and everyday indignities experienced by the community. I realised that my purpose was not only to survive but also to work for the dignity and rights of others. Leaving the Dera despite considerable resistance, I joined a civil society organisation working on the health and rights of transgender persons and women sex workers, marking the beginning of my journey as a community leader.

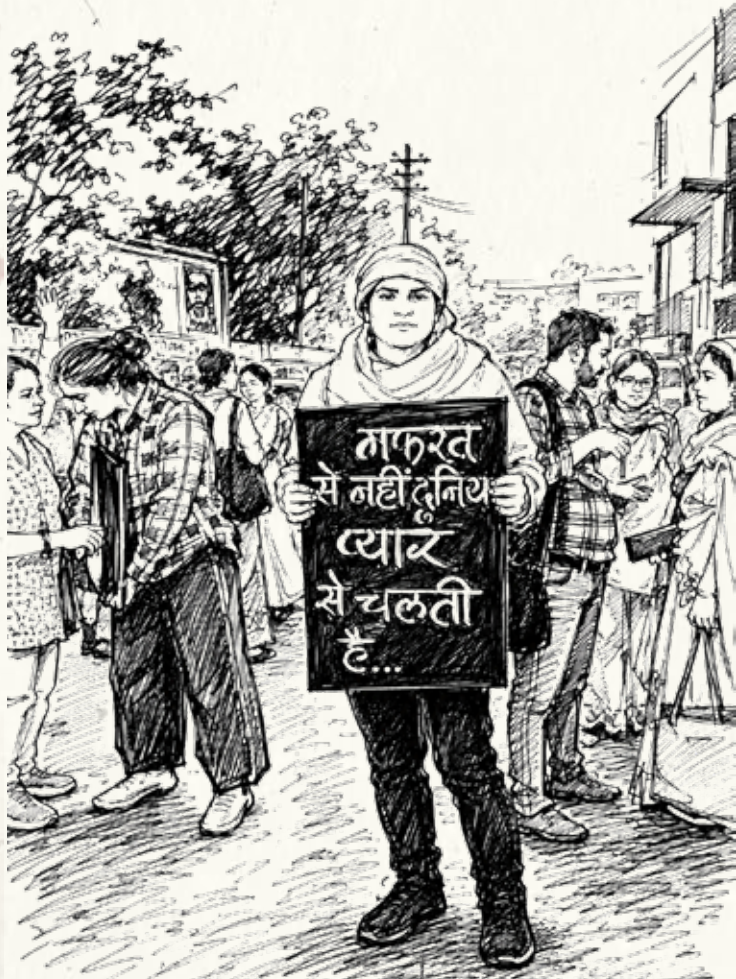
For nearly two decades, I have worked across Madhya Pradesh on issues of health, social protection, legal rights and empowerment of transgender persons and women sex workers. I have consistently encouraged members of the community to pursue education, access government entitlements and assert their constitutional rights. My work is driven by lived experience and by the conviction that meaningful change can only happen when communities themselves become informed, organised and confident in claiming their rights.

The Constitutional Fellowship has given renewed purpose to this journey. It has strengthened my understanding of constitutional values and provided a platform to take conversations on equality, dignity, justice and rights directly to communities that have historically remained excluded. The fellowship has also reinforced my belief that constitutional values are not abstract ideals but they are essential tools for enabling transgender persons and other marginalised communities to live with dignity, equality and self-respect.

Today, I continue to believe that society will not change its perception on its own. Change comes when we refuse to surrender, continue to educate ourselves, stand up against injustice, and inspire others to believe that every individual deserves equal rights, equal opportunities and an equal place in society.

A portrait of a person with dark hair, wearing a white headscarf with a black border and a dark blue patterned top. They have a bindi on their forehead and are looking directly at the camera with a slight smile. The background is a light, textured grey with some faint, darker spots.

चौद
Chand



“आत्मा को ऐसे सत्य सुनने के लिए अपने कान दिए गए हैं, जिन्हें मन हमेशा समझ नहीं पाता।” — शम्स तबरीज़

मेरा जीवन संघर्ष, साहस और गरिमा के साथ जीने के संकल्प से बना है। मैंने पाँच वर्ष की उम्र में ही अपने माता-पिता को खो दिया। उसके बाद मेरी बड़ी बहन ने मुझे संभाला और उसी के सहारे मेरा बचपन बीता। हालांकि मेरा जन्म एक लड़के के रूप में हुआ, पर बचपन से ही मुझे महसूस होता था कि मैं दूसरे लड़कों से अलग हूँ। मेरा स्वभाव लड़कियों के साथ अधिक सहज था, लेकिन उस समय मैं अपनी पहचान को समझ नहीं पाता था। जैसे-जैसे मैं बड़ा हुआ, यही अलग होना मेरे लिए लगातार उपहास, भेदभाव और हिंसा का कारण बन गया। स्कूल और कॉलेज के वर्षों में मुझे केवल इसलिए अपमान, शारीरिक प्रताड़ना और सामाजिक बहिष्कार का सामना करना पड़ा क्योंकि मैं समाज की तय की हुई लैंगिक अपेक्षाओं में फिट नहीं बैठता था। कई बार यह अपमान इतना गहरा हो जाता था कि मुझे अपना जीवन ही निरर्थक लगने लगता था। लेकिन मेरी बड़ी बहन के विश्वास और सहयोग ने मुझे टूटने नहीं दिया। मैंने हार मानने के बजाय शिक्षा का रास्ता चुना, स्नातक की पढ़ाई पूरी की और आगे चलकर सामाजिक कार्य (एम.एस.डब्ल्यू.) में स्नातकोत्तर की डिग्री प्राप्त की।

इसी यात्रा के दौरान मैंने स्वयं को एक ट्रांसजेंडर व्यक्ति के रूप में समझा और स्वीकार किया। आर्थिक कठिनाइयों और भेदभाव के कारण रोजगार पाना लगभग असंभव हो गया, जिसके चलते मुझे कुछ समय तक किन्नर समुदाय के साथ रहना पड़ा। वहाँ रहकर मैंने केवल अपने संघर्षों को ही नहीं, बल्कि पूरे समुदाय के सामने मौजूद अवसरों की कमी, सामाजिक बहिष्कार और रोजमर्रा के अपमान को भी बहुत करीब से देखा। तभी मुझे यह एहसास हुआ कि मेरा उद्देश्य केवल अपना जीवन जी लेना नहीं है, बल्कि अपने समुदाय के लोगों की गरिमा और अधिकारों के लिए भी काम करना है। काफी विरोध के बावजूद मैंने डेरा छोड़ने का निर्णय लिया और एक नागरिक समाज संगठन से जुड़कर ट्रांसजेंडर समुदाय और महिला यौनकर्मियों के स्वास्थ्य, अधिकारों और सम्मान के लिए काम करना शुरू किया। वहीं से मेरी सामुदायिक नेतृत्व की यात्रा की शुरुआत हुई।

पिछले लगभग दो दशकों से मैं मध्य प्रदेश के विभिन्न हिस्सों में ट्रांसजेंडर समुदाय और महिला यौनकर्मियों के स्वास्थ्य, सामाजिक सुरक्षा, कानूनी अधिकारों और सशक्तिकरण के मुद्दों पर करना मेरे मुख्य उद्देश्य मैं से एक रहा है। इसी के साथ मेरा लगातार प्रयास रहा है कि समुदाय के लोग शिक्षा प्राप्त करें, सरकारी योजनाओं और अधिकारों तक पहुँच बनाएँ और संविधान द्वारा दिए गए अपने अधिकारों को आत्मविश्वास के साथ प्राप्त करें। मेरा काम मेरे अपने जीवन के अनुभवों से प्रेरित है और इस विश्वास पर आधारित है कि वास्तविक परिवर्तन तभी संभव है, जब समुदाय स्वयं जागरूक, संगठित और अपने अधिकारों के लिए आवाज़ उठाने में सक्षम बने।

‘मेरी पहचान संविधान’ फेलोशिप ने मेरी इस यात्रा को नई दिशा और नया उद्देश्य दिया। इसने संवैधानिक मूल्यों के प्रति मेरी समझ को और गहरा किया तथा मुझे समानता, गरिमा, न्याय और अधिकारों पर उन समुदायों के साथ सीधे संवाद करने का अवसर दिया, जिन्हें लंबे समय तक समाज की मुख्यधारा से बाहर रखा गया है। इस फेलोशिप ने मेरे इस विश्वास को भी और मजबूत किया कि संविधान के मूल्य केवल आदर्श नहीं हैं, बल्कि वे ऐसे जीवंत साधन हैं, जो ट्रांसजेंडर समुदाय और अन्य वंचित समूहों को गरिमा, समानता और आत्मसम्मान के साथ जीवन जीने की शक्ति देते हैं।

आज भी मेरा विश्वास है कि समाज की सोच अपने आप नहीं बदलती। बदलाव तब आता है जब हम हार मानने से इनकार करते हैं, सीखते रहते हैं, अन्याय के विरुद्ध खड़े होते हैं और दूसरों को भी यह विश्वास दिलाते हैं कि हर व्यक्ति समान अधिकारों, समान अवसरों और समाज में समान सम्मान का अधिकारी है।

“When you seek Love with all your heart, you shall find its echo in the universe.”

— Shams Tabrizi

My name is Durga Solanki, and I come from Harda district in Madhya Pradesh. I am currently pursuing my Bachelor's degree while continuing my journey as a fellow in the Meri Pehchan Samvidhan Fellowship. Growing up in a farming family, I always believed that every person deserves equal respect and opportunity. My school years remain some of my happiest memories, where I experienced friendship, trust, and the freedom to express myself without fear. Those experiences shaped my belief in the importance of dignity and belonging.

A defining moment in my life came when I was in Class 12. During a visit to a temple, I was stopped from touching the aarti because of my caste. That incident made me question the deep-rooted inequalities that continue to exist in society. It was then that I resolved to work towards building a society based on equality and mutual respect. The PHIA Fellowship gave me the opportunity to turn this resolve into meaningful action. Through workshops, mentoring, and continuous learning, I have developed a deeper understanding of constitutional values and how they can be translated into everyday life.

Today, I work with young people to promote the values of equality and dignity while challenging discrimination in everyday spaces. I believe that change begins with our own behaviour. Treating everyone equally, listening with respect, and refusing to discriminate on the basis of caste, religion, gender, or appearance are values I consciously practice in my own life.

I aspire to join the police service one day, not merely as a profession but as a platform to work against child labour and ensure that every child has the opportunity to study and dream. For me, the Constitution is not just a document but is a guide to building a society where every individual can live with equality, dignity, and hope.

A portrait of a young woman with dark hair tied back, smiling. She has a nose ring and is wearing a white shawl over a purple patterned top. The background is a soft, painterly style with warm tones.

**दुर्गा
Durga**

“जब तुम पूरे हृदय से प्रेम की तलाश करते हो, तो उसकी प्रतिध्वनि तुम्हें पूरे ब्रह्मांड में सुनाई देती है।”
— शम्स तबरीज़



मेरा नाम दुर्गा सोलंकी है और मैं मध्य प्रदेश के हरदा ज़िले से हूँ। वर्तमान में मैं स्नातक की पढ़ाई कर रही हूँ और साथ ही 'मेरी पहचान संविधान' फेलोशिप की फेलो के रूप में अपनी यात्रा जारी रखे हुए हूँ। एक किसान परिवार में पली-बढ़ी होने के कारण मैंने बचपन से ही यह विश्वास सीखा कि हर व्यक्ति सम्मान और समान अवसर का अधिकारी है। स्कूल के दिन मेरी सबसे सुंदर यादों में शामिल हैं। वहीं मैंने दोस्ती, भरोसे और बिना किसी डर के स्वयं को व्यक्त करने की स्वतंत्रता का अनुभव किया। उन्हीं अनुभवों ने मेरे भीतर गरिमा, अपनापन और समानता के मूल्यों को गहराई से स्थापित किया।

मेरे जीवन का एक निर्णायक क्षण तब आया, जब मैं कक्षा 12 में थी। एक दिन मंदिर में आरती के दौरान मुझे केवल मेरी जाति के कारण आरती को छूने से रोक दिया गया। उस घटना ने मुझे भीतर तक झकझोर दिया। मैंने पहली बार इतनी गहराई से महसूस किया कि समाज में जातिगत भेदभाव और असमानता कितनी गहराई तक मौजूद है। उसी दिन मैंने निश्चय किया कि मैं ऐसे समाज के निर्माण के लिए काम करूँगी, जहाँ हर व्यक्ति को समान सम्मान और गरिमा मिले। PHIA फाउंडेशन की 'मेरी पहचान संविधान' फेलोशिप ने इस संकल्प को दिशा दी। कार्यशालाओं, मार्गदर्शन और निरंतर सीखने की प्रक्रिया ने मुझे संवैधानिक मूल्यों को गहराई से समझने और उन्हें रोज़मर्रा के जीवन में उतारने का अवसर दिया।

आज मैं युवाओं के साथ मिलकर समानता, गरिमा और सम्मान के मूल्यों को बढ़ावा देने का प्रयास करती हूँ तथा रोज़मर्रा के जीवन में होने वाले भेदभाव के खिलाफ संवाद करती हूँ। मेरा विश्वास है कि परिवर्तन की शुरुआत हमारे अपने व्यवहार से होती है। हर व्यक्ति के साथ समान व्यवहार करना, सम्मानपूर्वक सुनना और जाति, धर्म, लिंग या बाहरी रूप के आधार पर किसी के साथ भेदभाव न करना—ये ऐसे मूल्य हैं जिन्हें मैं अपने जीवन में सचेत रूप से अपनाने का प्रयास करती हूँ।

मेरा सपना भविष्य में पुलिस सेवा से जुड़ने का है। यह मेरे लिए केवल एक पेशा नहीं, बल्कि बाल श्रम के खिलाफ काम करने और हर बच्चे को पढ़ने, सीखने और अपने सपनों को पूरा करने का अवसर दिलाने का माध्यम है। मेरे लिए संविधान केवल एक दस्तावेज़ नहीं, बल्कि ऐसा मार्गदर्शक है जो हमें एक ऐसे समाज की ओर ले जाता है जहाँ हर व्यक्ति समानता, गरिमा और आशा के साथ जीवन जी सके।



“Where there is ruin, there is hope for a treasure.”

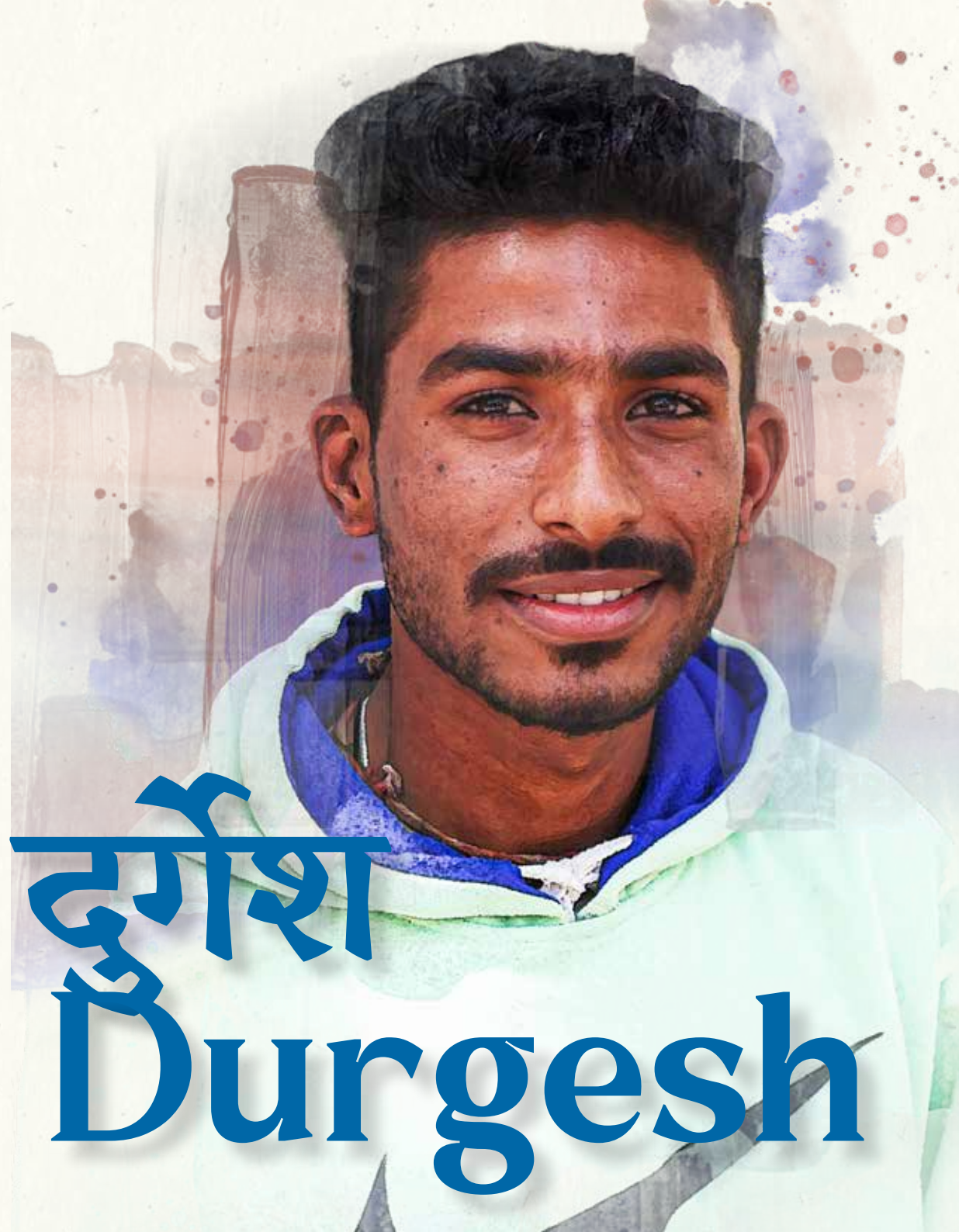
— Rumi

I come from Veer Tantya Nagar in Indore, a settlement once known as Phokatpura. Growing up there was not easy. The name of our Basti itself carried a stigma, and I often felt ashamed of introducing myself. The neighbourhood was marked by violence, substance abuse, school dropouts, and hopelessness. Even my school teachers looked at children from our Basti with prejudice and often called us addicts simply because of where we lived. Those experiences deeply affected me, but they also gave me a purpose. I decided that education would become my strongest tool to change both my life and my community.

My journey in social action began in 2011 through street theatre with Din Bandhu Sanstha, where I worked on issues such as child marriage, education, de-addiction, and child protection. Performing in the community helped me understand the power of dialogue and collective action. When I joined the Meri Pehchan Samvidhan Fellowship, I saw an opportunity to continue this journey with renewed purpose.

Through the fellowship, I chose education as my central intervention. I work with children and young people, especially those affected by substance abuse or who have dropped out of school, helping them reconnect with education and understand their constitutional rights and responsibilities. I have supported children with school admissions, learning materials, and encouragement to continue their education. My goal is to help them distinguish between right and wrong, become confident learners, and grow into responsible citizens.

The fellowship has also transformed my own understanding of constitutional values. I strive to practice equality and dignity within my family by challenging gender discrimination and respecting the rights of every member. For me, social change begins at home and grows stronger when communities come together in the spirit of fraternity. I continue to believe that education, guided by constitutional values, has the power to transform both individuals and communities.



दुर्गेश
Durgesh



“जब तुम पूरे हृदय से प्रेम की तलाश करते हो, तो उसकी प्रतिध्वनि तुम्हें पूरे ब्रह्मांड में सुनाई देती है।”

— रूमी

मैं इंदौर के वीर टंट्या नगर से हूँ, जिसे कभी फोकटपुरा के नाम से जाना जाता था। उस बस्ती में बड़ा होना आसान नहीं था। हमारी बस्ती का नाम ही एक तरह का कलंक बन चुका था, और कई बार मुझे अपना परिचय देते हुए शर्म महसूस होती थी। आसपास का माहौल हिंसा, नशे की लत, स्कूल छोड़ चुके बच्चों और निराशा से घिरा हुआ था। यहाँ तक कि मेरे स्कूल के शिक्षक भी हमारी बस्ती के बच्चों को पूर्वाग्रह की नज़र से देखते थे और केवल हमारे रहने की जगह के कारण हमारे लिए ‘नशेड़ी’ जैसे शब्दों का इस्तेमाल करते थे। इन अनुभवों ने मुझे भीतर तक प्रभावित किया, लेकिन दूसरी तरफ़, मेरे जीवन का उद्देश्य भी तय किया। मैंने निश्चय किया कि शिक्षा ही वह सबसे मजबूत साधन हो सकता है, जिसके माध्यम से मैं अपना जीवन और अपने समुदाय—दोनों बदल सकता हूँ।

सामाजिक कार्य की मेरी यात्रा वर्ष 2011 में दीन बंधु संस्था के साथ नुक्कड़ नाटकों से शुरू हुई। बाल विवाह, शिक्षा, नशामुक्ति और बाल संरक्षण जैसे विषयों पर काम करते हुए मैंने महसूस किया कि संवाद और सामूहिक प्रयास में, समाज में बदलाव लाने की बड़ी ताकत है। जब मैं ‘मेरी पहचान संविधान’ फेलोशिप से जुड़ा, तो मुझे लगा कि इस यात्रा को एक नई दिशा और उद्देश्य मिल गया है।



फेलोशिप के दौरान मैंने शिक्षा को अपने काम का मुख्य आधार बनाया। मैंने उन बच्चों एवं युवाओं के साथ काम करना शुरू किया जिन्हें किसी भी तरह के नशे की आदत है और युवाओं के साथ काम करता हूँ जो नशे की समस्या से प्रभावित हैं और किसी कारणवश स्कूल छोड़ चुके हैं। अभी मेरा प्रयास उन्हें दोबारा शिक्षा से जोड़ना और संविधान द्वारा दिए गए उनके अधिकारों और जिम्मेदारियों से परिचित कराना है। मैंने अनेक बच्चों के स्कूल में प्रवेश, पढ़ाई की सामग्री उपलब्ध कराने और उनकी शिक्षा जारी रखने के लिए उन्हें लगातार प्रोत्साहित करने का काम किया है। मेरा उद्देश्य केवल उन्हें पढ़ाना नहीं, बल्कि सही और गलत के बीच अंतर समझने, आत्मविश्वासी विद्यार्थी बनने और जिम्मेदार नागरिक के रूप में विकसित होने में उनका साथ देना है।

इस फेलोशिप ने संवैधानिक मूल्यों के प्रति मेरी अपनी समझ को भी गहराई से बदला है। आज मैं अपने परिवार में भी समानता और गरिमा के मूल्यों को जीने का प्रयास करता हूँ। मैं लैंगिक भेदभाव को चुनौती देता हूँ और परिवार के हर सदस्य के अधिकारों और सम्मान का आदर करने में विश्वास रखता हूँ। मेरे लिए सामाजिक परिवर्तन की शुरुआत घर से होती है और बंधुत्व की भावना के साथ समुदायों के एकजुट होने पर ही वह स्थायी रूप लेता है।

मेरा विश्वास है कि जब शिक्षा संवैधानिक मूल्यों से जुड़ती है, तो वह केवल व्यक्तियों का नहीं, बल्कि पूरे समाज का भविष्य बदलने की क्षमता रखती है।

**“You were born with wings. why prefer to
crawl through life?”**

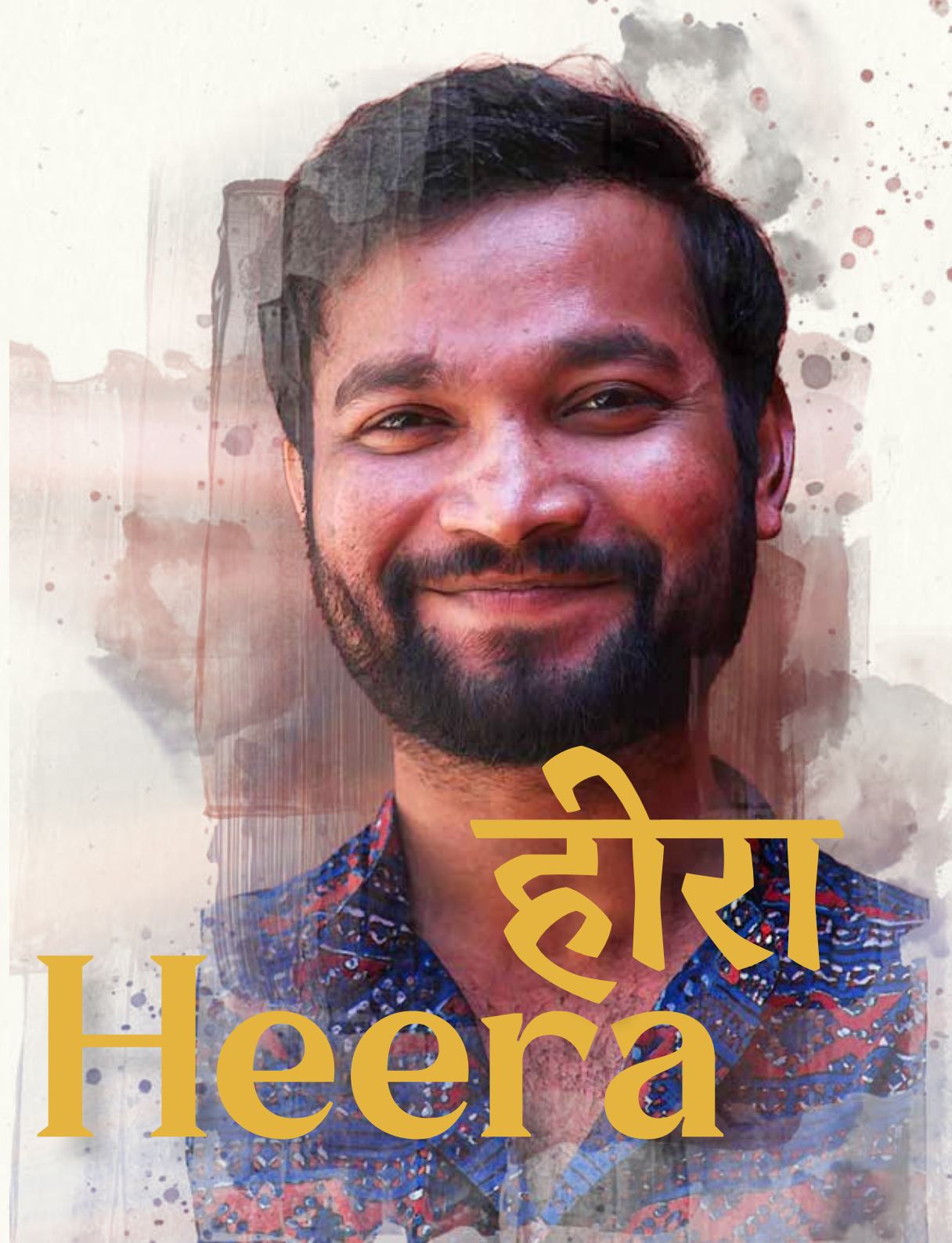
— Rumi

I belong to the Gond Adivasi community and currently live in Bhopal, Madhya Pradesh. Art has always been my way of understanding the world. I completed my schooling with the support of Muskaan, a non-profit organisation working in Bhopal, studied English Literature through distance education, and trained in illustration at Riyaz Academy. Alongside this, theatre became an important part of my life for nearly seven years, helping me discover my voice through acting, music, storytelling, and performance. Today, I compose my own songs, perform, and play the guitar.

One of the proudest moments of my life was seeing my illustrations published in a book. It made me realise that art is not only a personal passion but also a powerful medium to represent my community and tell stories that often remain unseen.

Growing up, I experienced discrimination because I belonged to the Gond community. As a child, I did not have the language to describe those experiences, but I knew they made me feel different. Through the PHIA Fellowship, I found both the language and the confidence to understand discrimination, claim my rights, and raise my voice without fear.

For the past three years, I have worked with young people in Shabari Nagar, using art and illustration to communicate constitutional values of equality, liberty, justice, and fraternity. Together, we created a youth space called ‘Sky Adda’, where young people express themselves, discover their talents, and build confidence. Through posters, illustrations, and creative dialogue, I strive to make constitutional values meaningful and accessible. For me, the Constitution is not merely a document but is a guide that helps people live with dignity, courage, and freedom.





“तुम पंख लेकर पैदा हुए हो, फिर जीवन भर रेंगना क्यों चुनते हो?”

— रूमी

मैं गोंड आदिवासी समुदाय से हूँ और वर्तमान में मध्य प्रदेश के भोपाल में रहता हूँ। कला हमेशा से मेरे लिए दुनिया को समझने का माध्यम रही है। भोपाल स्थित मुस्कान संस्था के सहयोग से मैंने अपनी स्कूली शिक्षा पूरी की, दूरस्थ शिक्षा के माध्यम से अंग्रेजी साहित्य का अध्ययन किया और रियाज़ अकादमी से इलस्ट्रेशन का प्रशिक्षण प्राप्त किया। इसी दौरान लगभग सात वर्षों तक रंगमंच मेरी ज़िंदगी का महत्वपूर्ण हिस्सा बना रहा। अभिनय, संगीत, कहानी और मंच ने मुझे अपनी आवाज़ खोजने में मदद की। आज मैं अपने गीत स्वयं लिखता और गाता हूँ, मंच पर प्रस्तुतियाँ देता हूँ और गिटार भी बजाता हूँ।

मेरे जीवन के सबसे गर्वपूर्ण क्षणों में से एक वह था, जब मेरी बनाई हुई चित्रकृतियाँ एक पुस्तक में प्रकाशित हुईं। उस अनुभव ने मुझे यह एहसास कराया कि कला केवल मेरा व्यक्तिगत जुनून नहीं है, बल्कि अपने समुदाय का प्रतिनिधित्व करने और उन कहानियों को सामने लाने का एक सशक्त माध्यम भी है, जो अक्सर अनदेखी रह जाती हैं।

बचपन में गोंड समुदाय से होने के कारण मुझे भेदभाव का सामना करना पड़ा। उस समय मेरे पास उन अनुभवों को समझने या व्यक्त करने की भाषा नहीं थी, लेकिन इतना ज़रूर महसूस होता था कि मुझे दूसरों से अलग माना जा रहा है। पीएचआईए फाउंडेशन की 'मेरी पहचान संविधान' फेलोशिप ने मुझे न केवल उस भेदभाव को समझने की भाषा दी, बल्कि अपने अधिकारों को पहचानने और बिना डर अपनी आवाज़ उठाने का आत्मविश्वास भी दिया।

पिछले तीन वर्षों से मैं शबरी नगर के युवाओं के साथ काम कर रहा हूँ। कला और इलस्ट्रेशन के माध्यम से मैं समानता, स्वतंत्रता, न्याय और बंधुत्व जैसे संवैधानिक मूल्यों को उनके लिए सहज और अर्थपूर्ण बनाने का प्रयास करता हूँ। हमने मिलकर 'स्काई अड्डा' नाम से एक युवा मंच बनाया है, जहाँ युवा अपनी अभिव्यक्ति कर सकें, अपनी प्रतिभाओं को पहचान सकें और आत्मविश्वास विकसित कर सकें। पोस्टर, चित्रों और रचनात्मक संवाद के माध्यम से मैं संवैधानिक मूल्यों को लोगों के जीवन से जोड़ने का प्रयास करता हूँ।

मेरे लिए संविधान केवल एक दस्तावेज़ नहीं है, बल्कि ऐसा जीवंत मार्गदर्शक है जो हर व्यक्ति को गरिमा, साहस और स्वतंत्रता के साथ जीवन जीने की दिशा दिखाता है।

“The beautiful thing about learning is that no one can take it away from you.”

– BB King

For a long time, I knew what silence felt like.

I had seen it in the women of my community, who spent their days collecting paper and plastic waste, carrying the weight of their homes while their own pain remained unheard. I had seen it in children who slowly disappeared from school because their families migrated, because documents were missing, or because violence at home made learning impossible. And I had felt it in my own life too.

I live in Indore, there was a time when domestic violence shaped my own home, and my children's education suffered because of it. That pain stayed with me. But slowly, it also became a question: if I had lived through this, how many other women and children were living through the same thing quietly? That question did not let me remain still.

I began going from home to home in my community, not as someone with all the answers, but as someone who understood the weight people were carrying. I listened to women, spoke with young people, identified children who had dropped out of school, and encouraged families to see education as more than schooling. For many children, it was a way back to confidence. For many mothers, it was a hope they had once lost.

Slowly, with the support of organisations and community networks, children began reconnecting with education. Families started applying for documents. Women began coming together in meetings. Conversations that were once hidden inside homes began finding space in the community.

Through the Meri Pehchan Samvidhan Fellowship, I found language for what I had always felt—that every person deserves freedom, equality, justice, and dignity. I began speaking about these values not as difficult words, but as everyday rights: the right to speak, the right to study, the right to live without fear.

Today, when I see a child return to school or a woman speak in a meeting for the first time, I feel that my own pain has found meaning. My journey has taught me that change begins when someone refuses to accept silence as destiny.



“सीखने की सबसे खूबसूरत बात यह है कि आपने जो ज्ञान अर्जित किया है, उसे आपसे कोई छीन नहीं सकता।”

- बी. बी. किंग



बहुत लंबे समय तक मैंने खामोशी को बहुत करीब से महसूस किया।

मैंने उसे अपने समुदाय की उन महिलाओं में देखा, जो दिनभर कागज़ और प्लास्टिक बीनकर अपने परिवार का जीवन चलाती थीं, लेकिन उनकी अपनी पीड़ा कभी किसी ने नहीं सुनी। मैंने उसे उन बच्चों में देखा, जो पलायन, आवश्यक दस्तावेज़ों की कमी या घर में होने वाली हिंसा के कारण धीरे-धीरे स्कूल से दूर होते चले गए। और मैंने उस खामोशी को अपने जीवन में भी जिया।

मैं इंदौर में रहती हूँ, एक समय ऐसा था जब घरेलू हिंसा ने मेरे अपने परिवार को भी प्रभावित किया और उसके कारण मेरे बच्चों की पढ़ाई भी बाधित हुई। उस दर्द ने मुझे भीतर तक तोड़ा, लेकिन उसी दर्द ने मेरे भीतर एक सवाल भी जगाया—यदि मैं यह सब झेल रही हूँ, तो मेरे जैसी कितनी और महिलाएँ और बच्चे होंगे, जो बिना कुछ कहे इसी पीड़ा के साथ जी रहे होंगे?

यही सवाल मेरी यात्रा की शुरुआत बना।

मैंने अपने समुदाय में घर-घर जाना शुरू किया। मैं किसी समाधान के साथ नहीं, बल्कि एक ऐसे व्यक्ति की तरह पहुँची जो लोगों के दर्द को समझती थी। मैंने महिलाओं की बातें सुनीं, युवाओं से संवाद किया, स्कूल छोड़ चुके बच्चों की पहचान की और परिवारों को यह समझाने की कोशिश की कि शिक्षा केवल पढ़ाई नहीं, बल्कि एक बेहतर भविष्य की नींव है। कई बच्चों के लिए यह आत्मविश्वास की ओर लौटने का रास्ता बना और कई माताओं के लिए वह उम्मीद, जिसे वे बहुत पहले खो चुकी थीं।

धीरे-धीरे सामाजिक संस्थाओं और समुदाय के सहयोग से बच्चे फिर से स्कूलों से जुड़ने लगे। परिवारों ने आवश्यक दस्तावेज़ बनवाने शुरू किए। महिलाएँ बैठकों में आने लगीं। जो बातें कभी घरों की चारदीवारी तक सीमित थीं, वे अब पूरे समुदाय के बीच संवाद का विषय बनने लगीं।

‘मेरी पहचान संविधान’ फेलोशिप ने मुझे उन भावनाओं को शब्द दिए, जिन्हें मैं हमेशा महसूस करती थी। मैंने समझा कि स्वतंत्रता, समानता, न्याय और गरिमा केवल संविधान में लिखे शब्द नहीं हैं, बल्कि हर व्यक्ति के रोज़मर्रा के जीवन से जुड़े अधिकार हैं। मैंने इन्हें कठिन अवधारणाओं की तरह नहीं, बल्कि इस रूप में साझा करना शुरू किया कि हर व्यक्ति को अपनी बात कहने, पढ़ने-लिखने और बिना भय के सम्मानपूर्वक जीने का अधिकार है।

आज जब मैं किसी बच्चे को फिर से स्कूल जाते हुए देखती हूँ, या किसी महिला को पहली बार किसी बैठक में अपनी बात रखते हुए सुनती हूँ, तो मुझे लगता है कि मेरे अपने संघर्षों को एक नया अर्थ मिल गया है। मेरी यात्रा ने मुझे सिखाया है कि बदलाव वहीं से शुरू होता है, जहाँ कोई व्यक्ति खामोशी को अपनी नियति मानने से इंकार कर देता है।



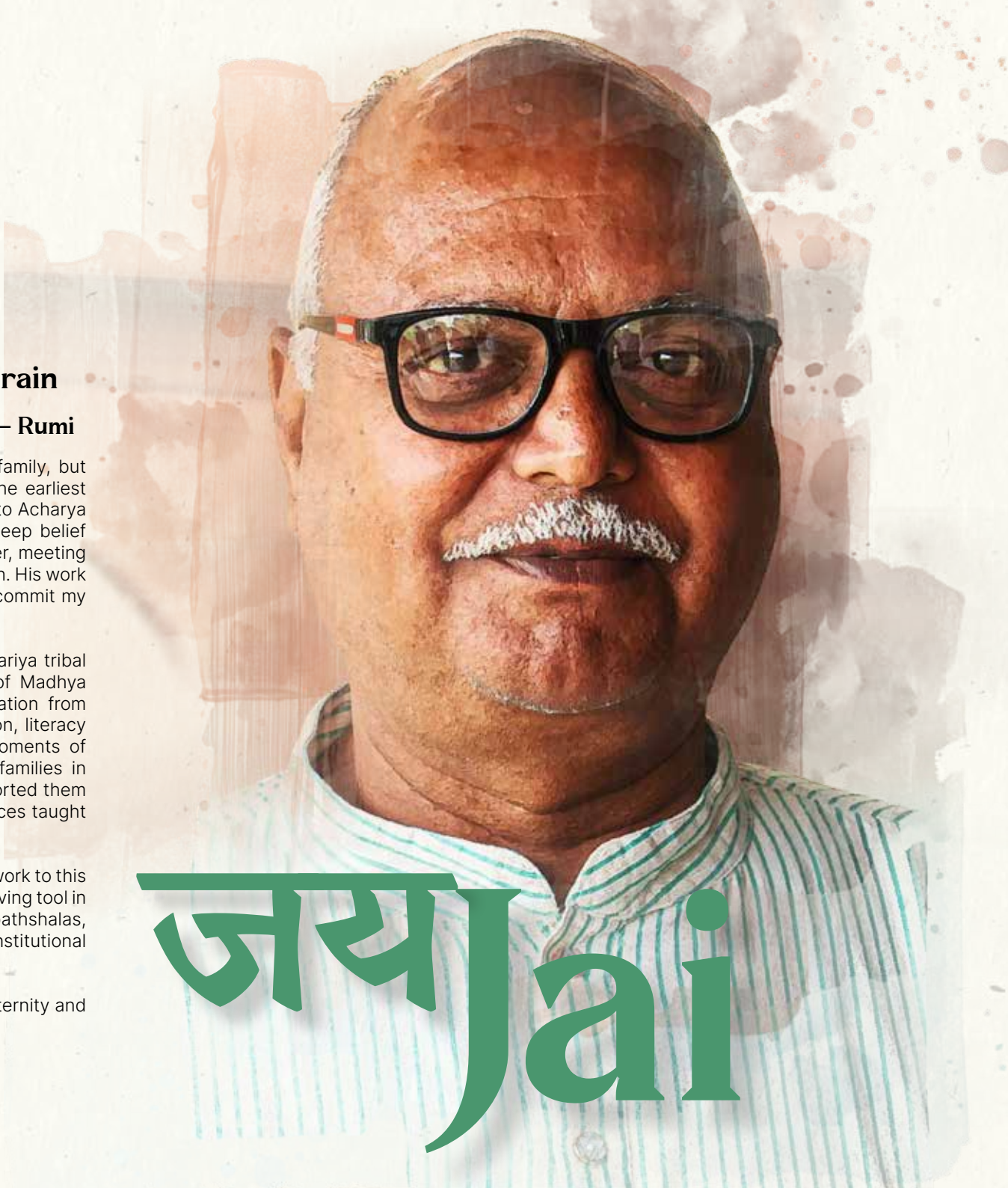
**“Raise your words, not your voice. It is rain
that grows flowers, not thunder.”** — Rumi

I was born in Sheopur, Madhya Pradesh, into a former jagirdar family, but my life was shaped more by service than by privilege. One of the earliest influences on me was my father, who donated 500 acres of land to Acharya Vinoba Bhave's Bhoodan Movement. That act planted in me a deep belief that land, power and resources must ultimately serve justice. Later, meeting Gandhian leader Dr. S. N. Subbarao gave this belief a clear direction. His work for peace, national unity and communal harmony inspired me to commit my life to social change.

For more than four decades, I have worked closely with the Sahariya tribal community and other marginalised groups in Sheopur district of Madhya Pradesh. My work has included struggles for land rights, liberation from bonded labour, rehabilitation of displaced families, girls' education, literacy campaigns, nutrition, vaccination, and peace-building during moments of communal tension. I have walked with thousands of Sahariya families in padyatras, stood with them against powerful interests, and supported them in approaching the administration for their rights. These experiences taught me that when communities organise, fear begins to break.

The PHIA Constitution Fellowship gave a new language and framework to this long journey. Earlier, I respected the Constitution, now I use it as a living tool in every dialogue, application and campaign. Through Constitution pathshalas, community meetings, student dialogues and the idea of a 'Constitutional Awareness Forum',

I now work to help people understand equality, liberty, justice, fraternity and dignity as practical values of daily life.



जयJai



“अपनी आवाज़ ऊँची मत करो, अपने शब्दों को ऊँचा करो। फूलों को खिलाने का काम बारिश करती है, गरज नहीं।”

— रूपी

मेरा जन्म मध्य प्रदेश के श्योपुर ज़िले के एक पूर्व जागीरदार परिवार में हुआ, लेकिन मेरे जीवन को विशेषाधिकारों से अधिक सेवा की भावना ने आकार दिया। मेरे जीवन पर सबसे गहरा प्रभाव मेरे पिता का रहा, जिन्होंने आचार्य विनोबा भावे के भूदान आंदोलन के लिए 500 एकड़ भूमि दान कर दी। उस घटना ने मेरे भीतर यह विश्वास जगाया कि भूमि, सत्ता और संसाधनों का अंतिम उद्देश्य न्याय और समाज की भलाई होना चाहिए। बाद में गांधीवादी चिंतक डॉ. एस. एन. सुब्बाराव से मिलना मेरे जीवन का एक महत्वपूर्ण मोड़ बना। शांति, राष्ट्रीय एकता और सांप्रदायिक सदभाव के लिए उनका समर्पण मुझे सामाजिक परिवर्तन की दिशा में जीवन समर्पित करने की प्रेरणा देता रहा।

पिछले चार दशकों से अधिक समय से मैं मध्य प्रदेश के श्योपुर ज़िले में सहरिया आदिवासी समुदाय और अन्य वंचित समूहों के साथ काम कर रहा हूँ। इस दौरान मेरी यात्रा भूमि अधिकारों की लड़ाई, बंधुआ मज़दूरी से मुक्ति, विस्थापित परिवारों के पुनर्वास, बालिका शिक्षा, साक्षरता अभियान, पोषण, टीकाकरण और सांप्रदायिक तनाव के समय शांति स्थापित करने जैसे अनेक प्रयासों से होकर गुजरी है। मैंने हजारों सहरिया परिवारों के साथ पदयात्राएँ की हैं, उनके अधिकारों के लिए प्रभावशाली शक्तियों के सामने खड़ा रहा हूँ और प्रशासन तक उनकी आवाज़ पहुँचाने में उनका साथ दिया है। इन अनुभवों ने मुझे सिखाया कि जब समुदाय संगठित होता है, तो डर धीरे-धीरे टूटने लगता है।

PHIA फाउंडेशन की ‘मेरी पहचान संविधान’ फेलोशिप ने मेरी इस लंबी यात्रा को एक नई भाषा और नया दृष्टिकोण दिया। पहले मैं संविधान का सम्मान करता था, आज मैं उसे हर संवाद, आवेदन और जन-अभियान में एक जीवंत साधन के रूप में उपयोग करता हूँ। संविधान पाठशालाओं, सामुदायिक बैठकों, विद्यार्थियों के साथ संवाद और ‘संवैधानिक जागरूकता मंच’ जैसी पहलों के माध्यम से मैं लोगों तक समानता, स्वतंत्रता, न्याय, बंधुत्व और गरिमा जैसे संवैधानिक मूल्यों को उनके रोज़मर्रा के जीवन से जोड़ने का प्रयास करता हूँ।

मेरे लिए सबसे वंचित व्यक्ति की सेवा दया का कार्य नहीं है। यही संविधान को सबसे सच्चे अर्थों में जीने का मार्ग है।

“As you start to walk on the way, the way appears.”

— Rumi

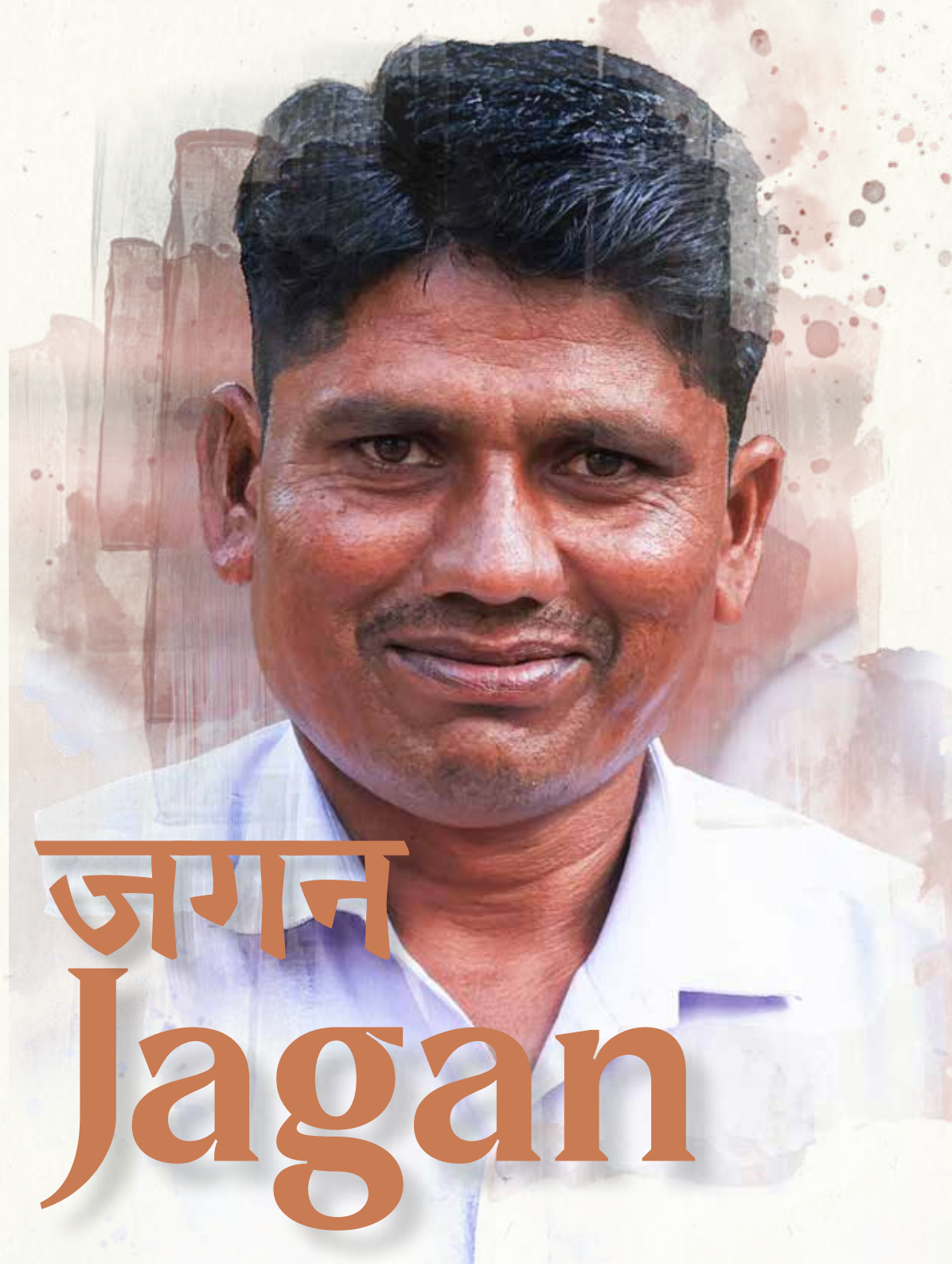
Growing up in an Adivasi village, I learned that life moves forward when people stand together. Whether it was farming, festivals, or everyday challenges, community was always our greatest strength. Long before I knew the language of constitutional values, I had already experienced the meaning of equality through shared work and mutual respect.

My first step into social work came when I was in Class 12 and had the opportunity to work with ActionAid. That experience stayed with me. Years later, when the PHIA Foundation and Jeevan Project team visited my village for a mapping exercise, I joined them. Through those conversations, I discovered the Meri Pehchan Samvidhan Fellowship, and it felt like the path I had been waiting for.

Today, I work with communities on constitutional values, access to government schemes, social justice, and the preservation of Adivasi culture.

One experience that strengthened my belief in collective action was when our village came together to demand electricity for families living in the hilly area. Seeing that effort succeed reminded me that change begins when people raise their voices together.

For me, the Constitution is not only about rights. It is a way of living—sharing responsibilities, rejecting discrimination, and treating every person with dignity. My hope is to help build communities where equality is not just discussed but practiced every day.





“जैसे ही तुम चलना शुरू करते हो, रास्ता स्वयं प्रकट होने लगता है।”

— रूमी

मैं एक आदिवासी गाँव में पला-बढ़ा हूँ, जहाँ मैंने बचपन से सीखा कि जीवन तब आगे बढ़ता है जब लोग एक-दूसरे के साथ खड़े होते हैं। खेती हो, त्योहार हों या रोज़मर्रा की चुनौतियाँ—हमारे आदिवासी समाज में हमेशा से समुदाय ही हमारी सबसे बड़ी ताकत रहा है। संवैधानिक मूल्यों की भाषा समझने से बहुत पहले मैंने साझा श्रम, पारस्परिक सम्मान और साथ मिलकर जीने के माध्यम से समानता का अर्थ महसूस कर लिया था।

सामाजिक कार्य की ओर मेरा पहला कदम तब बढ़ा, जब मैं कक्षा 12 में था और मुझे एक्शन एड के साथ काम करने का अवसर मिला। उस अनुभव ने मेरे भीतर समाज के लिए काम करने की इच्छा जगा दी। कुछ वर्षों बाद, जब PHIA फाउंडेशन और जीवन परियोजना की टीम गाँव में एक परियोजना के तहत मैपिंग के लिए आई, तो मैं भी उस प्रक्रिया से जुड़ गया। वहीं से मुझे ‘मेरी पहचान संविधान’ फेलोशिप के बारे में पता चला। मुझे लगा, जैसे मैं जिस रास्ते की तलाश कर रहा था, वह मुझे मिल गया है।

आज मैं समुदायों के साथ संवैधानिक मूल्यों, सरकारी योजनाओं तक पहुँच, सामाजिक न्याय और आदिवासी संस्कृति के संरक्षण पर काम करता हूँ। सामूहिक प्रयास की शक्ति पर मेरा विश्वास तब और गहरा हुआ, जब हमारे गाँव के पहाड़ी क्षेत्र में रहने वाले परिवारों के लिए बिजली की समस्या को लेकर हम सबने मिलकर आवाज़ उठाई। सामूहिक आवेदन और निरंतर प्रयासों के बाद समस्या का समाधान हुआ। उस अनुभव ने मुझे सिखाया कि बदलाव तब शुरू होता है, जब लोग अपनी आवाज़ को एक साथ उठाते हैं।

मेरे लिए संविधान केवल अधिकारों का दस्तावेज़ नहीं है, बल्कि जीवन जीने का एक तरीका है। समानता की शुरुआत घर से होती है—जब हम जिम्मेदारियाँ बाँटते हैं, भेदभाव को अस्वीकार करते हैं और हर व्यक्ति के साथ गरिमा और सम्मान से पेश आते हैं। मेरी आशा है कि हम ऐसे समुदायों का निर्माण करें जहाँ समानता केवल चर्चा का विषय न रहे, बल्कि रोज़मर्रा के जीवन का हिस्सा बन जाए।

“Don’t be satisfied with stories, how things have gone with others. Unfold your own myth.”

– Rumi

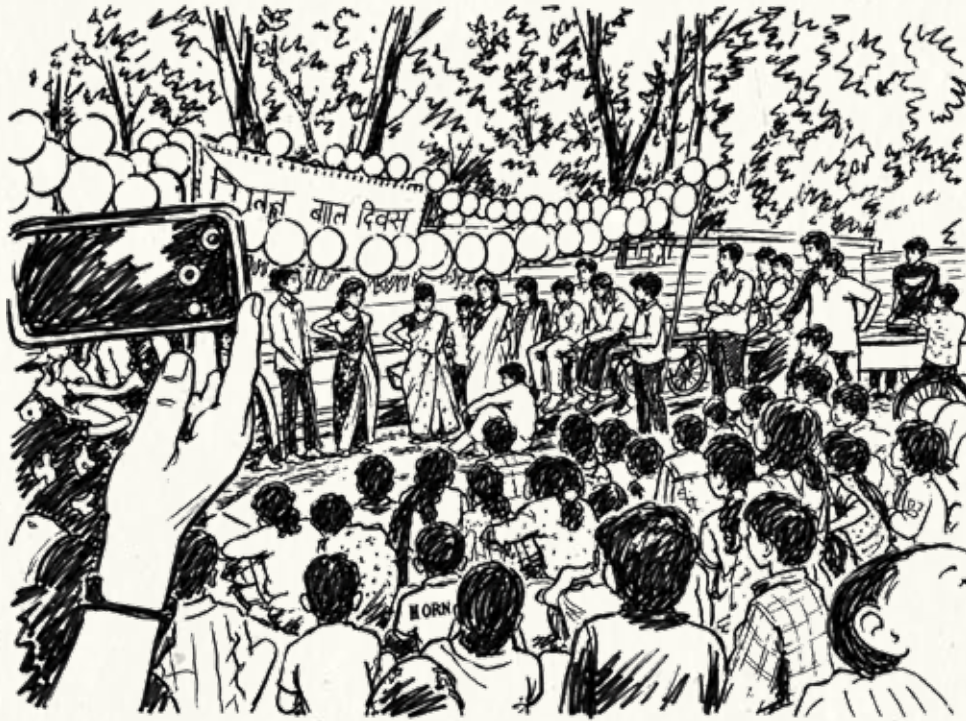
I come from the Banjara community in Indore and am currently pursuing a Bachelor of Social Work (BSW). I grew up in a family of eight where poverty, domestic violence, and gender discrimination were part of everyday life. As a girl, I learned early that opportunities were not distributed equally. When money was scarce, I was expected to give up my education, while my brother’s education remained the family’s priority, even though he showed little interest in studying. Those experiences forced me to question why a girl’s dreams were considered expendable. Looking back, I realise that my journey into social work began long before I entered the field formally, it began with those questions and my determination to ensure that other girls do not have to fight the same battles.

My formal interest in social work began when I volunteered with Deenbandhu Social Organisation. Through street theatre campaigns on child marriage, domestic violence, addiction, and other social issues across Indore’s settlements, I discovered the power of collective action and community awareness. Later, joining the Meri Pehchan Samvidhan Fellowship gave me the confidence and financial support to resume my education and pursue the work I had always wanted to do. I became the first girl in my family to attend college, a milestone that continues to inspire me.

Since 2023, I have been working with Banjara communities on issues of girls’ education, child marriage, child labour, domestic violence, and gender equality. Alongside community meetings and awareness activities, I support children from economically disadvantaged families with books, notebooks, and educational materials whenever possible. I have also helped several children return to school and have seen encouraging changes in community attitudes towards girls’ education.

For me, the Constitution represents dignity, equality, and freedom for every individual. My dream is that no girl should be forced to give up her education or her aspirations simply because she was born a girl. Through my work, I strive to ensure that every young woman in my community has the confidence to claim her rights, continue her education, and shape her own future.





“दूसरों की कहानियों से संतुष्ट मत हो। अपनी कहानी स्वयं रचो।”

— रूमी

मैं इंदौर के बंजारा समुदाय से हूँ और वर्तमान में बैचलर ऑफ सोशल वर्क (बी.एस.डब्ल्यू.) की पढ़ाई कर रही हूँ। मेरा बचपन आठ सदस्यों वाले ऐसे परिवार में बीता, जहाँ गरीबी, घरेलू हिंसा और लैंगिक भेदभाव रोज़मर्रा की ज़िंदगी का हिस्सा थे। एक लड़की होने के नाते मैंने बहुत जल्दी समझ लिया था कि अवसर सबको समान रूप से नहीं मिलते। जब घर की आर्थिक स्थिति कमजोर होती, तो सबसे पहले मेरी पढ़ाई छुड़वा देने की बात होती, जबकि मेरे भाई की पढ़ाई परिवार की प्राथमिकता बनी रहती, चाहे उसकी पढ़ाई में रुचि कम ही क्यों न हो। इन्हीं अनुभवों ने मुझे यह सवाल पूछने के लिए मजबूर किया कि आखिर लड़कियों को ही अपने सपनों को त्यागने को कहा जाता है। आज पीछे मुड़कर देखती हूँ तो महसूस करती हूँ कि मेरी सामाजिक यात्रा किसी संस्था से जुड़ने के बाद नहीं, बल्कि इन्हीं सवाल और इस संकल्प से शुरू हुई थी कि दूसरी लड़कियों को वही संघर्ष न झेलना पड़े जो मुझे झेलना पड़ा।

सामाजिक कार्य की औपचारिक शुरुआत दीनबंधु सोशल ऑर्गेनाइजेशन के साथ स्वयंसेवक के रूप में हुई। इंदौर की बस्तियों में बाल विवाह, घरेलू हिंसा, नशामुक्ति और अन्य सामाजिक मुद्दों पर नुक्कड़ नाटकों के माध्यम से काम करते हुए मैंने सामूहिक जागरूकता और संवाद की ताकत को समझा। बाद में ‘मेरी पहचान संविधान’ फेलोशिप से जुड़ना मेरे जीवन का महत्वपूर्ण मोड़ बना। इसने मुझे अपनी पढ़ाई दोबारा शुरू करने का आत्मविश्वास और आर्थिक सहयोग दिया, साथ ही उस सामाजिक कार्य को आगे बढ़ाने का अवसर भी, जिसे मैं हमेशा करना चाहती थी। मैं अपने परिवार की पहली लड़की बनी जिसने कॉलेज में प्रवेश लिया, और यह उपलब्धि आज भी मुझे आगे बढ़ने की प्रेरणा देती है।

वर्ष 2023 से मैं बंजारा समुदाय के साथ बालिकाओं की शिक्षा, बाल विवाह, बाल श्रम, घरेलू हिंसा और लैंगिक समानता जैसे मुद्दों पर काम कर रही हूँ। सामुदायिक बैठकों और जागरूकता कार्यक्रमों के साथ-साथ मैं आर्थिक रूप से कमजोर बच्चों को यथासंभव किताबें, कॉपियाँ और अन्य शैक्षणिक सामग्री उपलब्ध कराने का प्रयास करती हूँ। मुझे यह देखकर संतोष मिलता है कि कई बच्चे दोबारा स्कूल लौट रहे हैं और समुदाय में लड़कियों की शिक्षा को लेकर सोच धीरे-धीरे सकारात्मक रूप से बदल रही है।

मेरे लिए संविधान हर व्यक्ति की गरिमा, समानता और स्वतंत्रता का प्रतीक है। मेरा सपना है कि कोई भी लड़की केवल इसलिए अपनी पढ़ाई या अपने सपनों को छोड़ने के लिए मजबूर न हो क्योंकि उसका जन्म एक लड़की के रूप में हुआ है। अपने काम के माध्यम से मैं चाहती हूँ कि मेरे समुदाय की हर युवती अपने अधिकारों को पहचाने, अपनी शिक्षा जारी रखने और अपने भविष्य का निर्णय स्वयं लेने का आत्मविश्वास हासिल करे।

“The highest education is that which does not merely give us information but makes our life in harmony with all existence.”

Rabindranath Tagore

I come from Darasi Kala, a small village in Seoni district of Madhya Pradesh, and currently live in Kurai, a tribal region near Pench National Park. I grew up in a modest family where my curiosity about society began not in classrooms, but by listening to conversations between my father and local political leaders. Although I once dreamed of becoming an engineer, I gradually realised that my true calling lay in education and social change. I completed my Bachelor of Social Work from IGNOU, a decision that transformed the direction of my life.

A turning point came in 2012, when a volunteer started a small community resource centre called Shikshalaya in our village after realising that none of us had ever used a computer or the internet. Learning digital skills there opened an entirely new world for me. Soon afterwards, while examining MGNREGA records, my friends and I discovered fraudulent payments made in the names of deceased villagers. Together, we raised the issue in the Gram Sabha and later participated in social audits across 62 Gram Panchayats, helping vulnerable families reclaim pensions, wages and other entitlements despite facing threats and resistance.

For the past eight years, I have worked with schools, teachers and children to make learning more meaningful. While teaching Civics, I realised that the subject often remained confined to textbooks and failed to connect with children's lives. The Meri Pehchan Samvidhan Fellowship helped me reimagine constitutional education through games, sports, dance and experiential learning. Today, I use activities such as netball, storytelling and classroom dialogue to help children experience equality, liberty, justice and fraternity rather than simply memorise them.

The fellowship has also challenged me to practise these values in my own life. Whether creating classrooms where every child feels heard, giving additional attention to children who need greater support, or standing firmly against practices like dowry within my own family, I have realised that constitutional values demand both conviction and courage. For me, the Constitution is not simply a document to be taught, it is a way of living. I believe that if children begin to understand these values early in life, they will grow into citizens capable of building a more just, equal and compassionate India.



ललित
Lalit

“सर्वोच्च शिक्षा वह है जो हमें केवल जानकारी नहीं देती, बल्कि हमारे जीवन को समस्त सृष्टि के साथ सामंजस्य में जीना सिखाती है।”

— रवींद्रनाथ टैगोर

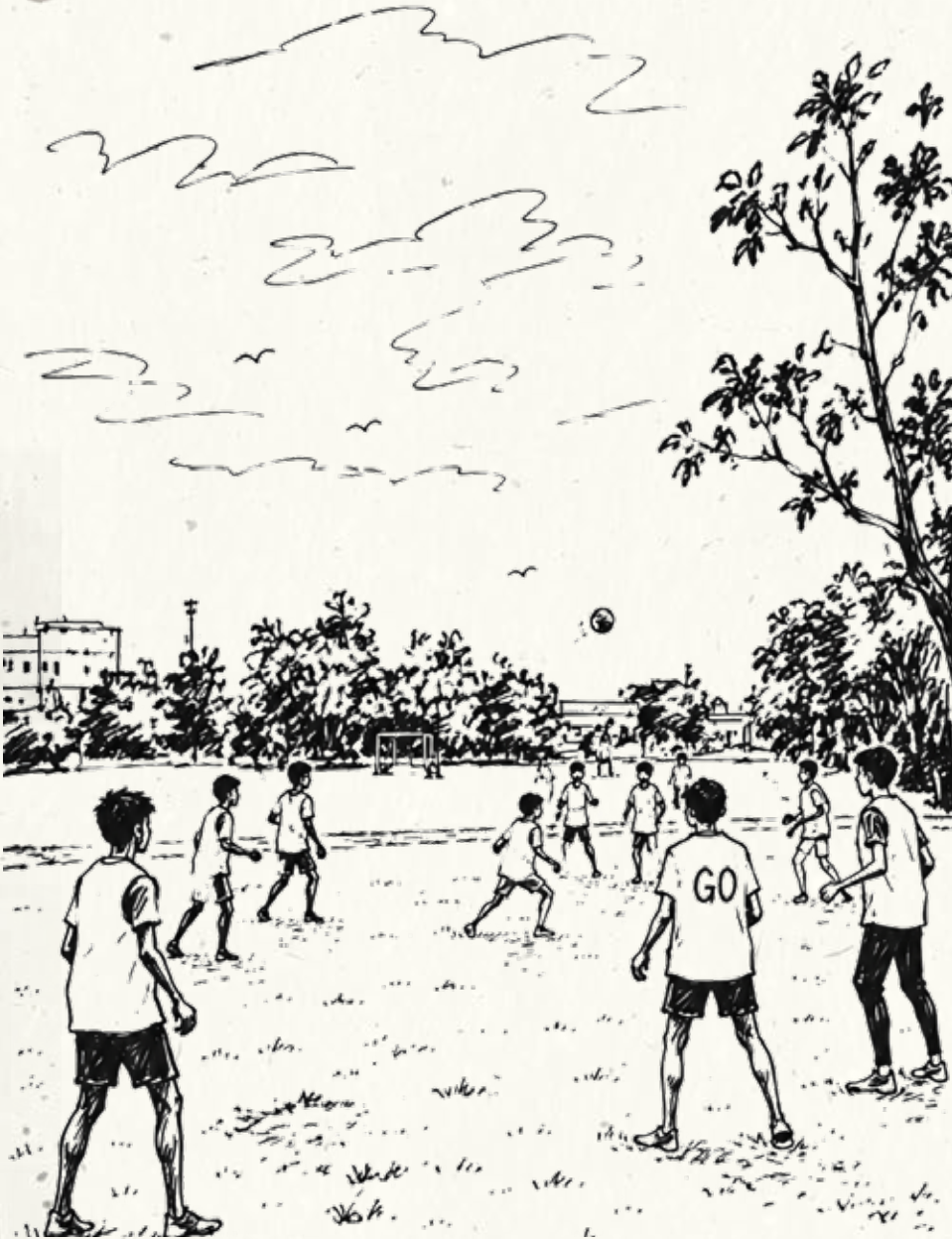
मैं मध्य प्रदेश के सिवनी ज़िले के छोटे से गाँव दरासी कला का रहने वाला हूँ और वर्तमान में पेंच राष्ट्रीय उद्यान के निकट स्थित आदिवासी क्षेत्र कुरई में रहता हूँ। मेरा बचपन एक साधारण परिवार में बीता, जहाँ समाज को समझने की मेरी जिज्ञासा कक्षा की किताबों से नहीं, बल्कि अपने पिता और गाँव के राजनीतिक कार्यकर्ताओं के बीच होने वाली चर्चाओं को सुनते हुए विकसित हुई। एक समय मेरा सपना इंजीनियर बनने का था, लेकिन धीरे-धीरे मुझे एहसास हुआ कि मेरी वास्तविक राह शिक्षा और सामाजिक परिवर्तन के क्षेत्र में है। इसी सोच ने मुझे इग्नू से बैचलर ऑफ सोशल वर्क (बी.एस.डब्ल्यू.) की पढ़ाई करने के लिए प्रेरित किया, जिसने मेरे जीवन की दिशा ही बदल दी।

मेरे जीवन का एक महत्वपूर्ण मोड़ वर्ष 2012 में आया, जब एक स्वयंसेवक ने हमारे गाँव में 'शिक्षालय' नाम से एक छोटा सामुदायिक संसाधन केंद्र शुरू किया। तब तक हममें से किसी ने कंप्यूटर या इंटरनेट का उपयोग नहीं किया था। वहाँ डिजिटल कौशल सीखते हुए मेरे सामने एक नई दुनिया खुल गई। कुछ समय बाद मनरेगा के अभिलेखों की जाँच करते हुए मैंने और मेरे साथियों ने पाया कि मृत लोगों के नाम पर भी भुगतान किया गया था। हमने यह मामला ग्राम सभा में उठाया और बाद में 62 ग्राम पंचायतों में सामाजिक अंकेक्षण (सोशल ऑडिट) का हिस्सा बने। विरोध और धमकियों के बावजूद हमने अनेक ज़रूरतमंद परिवारों को पेंशन, मज़दूरी और अन्य सरकारी अधिकार दिलाने में सहयोग किया।

पिछले आठ वर्षों से मैं विद्यालयों, शिक्षकों और बच्चों के साथ मिलकर शिक्षा को अधिक अर्थपूर्ण बनाने का प्रयास कर रहा हूँ। नागरिक शास्त्र पढ़ाते समय मुझे महसूस हुआ कि यह विषय अक्सर केवल पाठ्यपुस्तकों तक सीमित रह जाता है और बच्चों के जीवन से उसका संबंध नहीं बन पाता। 'मेरी पहचान संविधान' फेलोशिप ने मुझे संवैधानिक शिक्षा को नए ढंग से देखने की दृष्टि दी। आज मैं खेल, नेटबॉल, कहानियों, नृत्य और अनुभववात्मक गतिविधियों के माध्यम से बच्चों को समानता, स्वतंत्रता, न्याय और बंधुत्व जैसे संवैधानिक मूल्यों को केवल याद नहीं, बल्कि महसूस करने और अपने जीवन में आत्मसात करने के लिए प्रेरित करता हूँ।

इस फेलोशिप ने मेरे अपने जीवन को भी बदला है। मैं ऐसी कक्षाएँ बनाने का प्रयास करता हूँ जहाँ हर बच्चा अपनी बात कह सके, जिन बच्चों को अधिक सहयोग की आवश्यकता हो, उन्हें अतिरिक्त समय दे सकूँ, और अपने परिवार में भी दहेज जैसी कुप्रथाओं के विरुद्ध स्पष्ट रूप से खड़ा रह सकूँ। इसके साथ साथ मैंने यह भी समझा है कि संवैधानिक मूल्यों को जीने के लिए केवल समझ ही नहीं, बल्कि साहस भी चाहिए।

मेरे लिए संविधान केवल पढ़ाने का विषय नहीं, बल्कि जीवन जीने का एक तरीका है। मेरा विश्वास है कि यदि बच्चे बचपन से ही इन मूल्यों को समझना और अपनाना सीखें, तो वे आगे चलकर एक अधिक न्यायपूर्ण, समानतापूर्ण और संवेदनशील भारत के निर्माण में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाएँगे।



“No one liberates anyone else, nor do we liberate ourselves alone. We liberate ourselves in communion.”

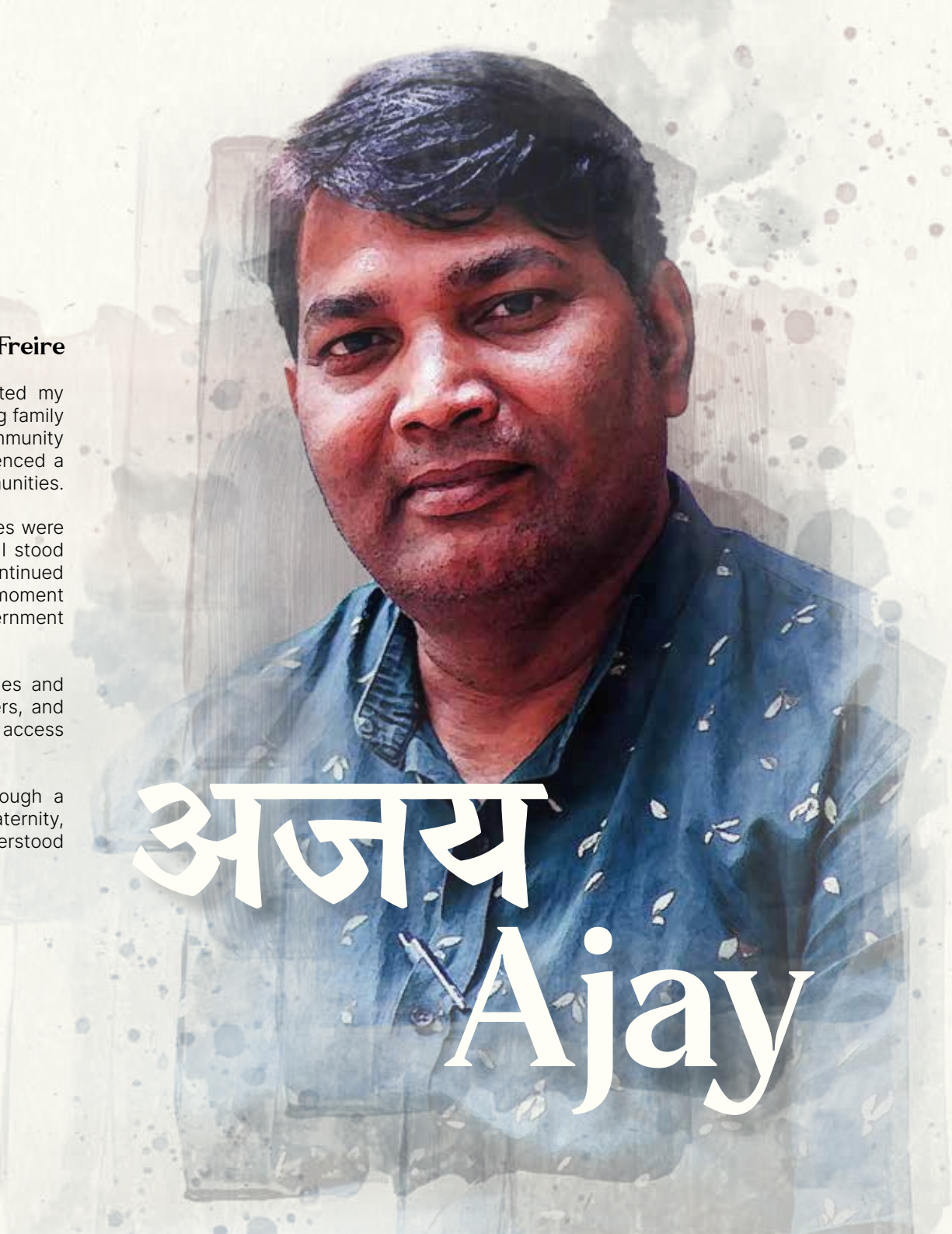
– Paulo Freire

I come from Mandla district in Madhya Pradesh. I have completed my postgraduate degree in Rural Development, and my roots in a farming family have shaped my deep connection with villages, agriculture, and community life. Growing up between my village and a railway colony, I experienced a culture of harmony, trust, and shared celebration among diverse communities.

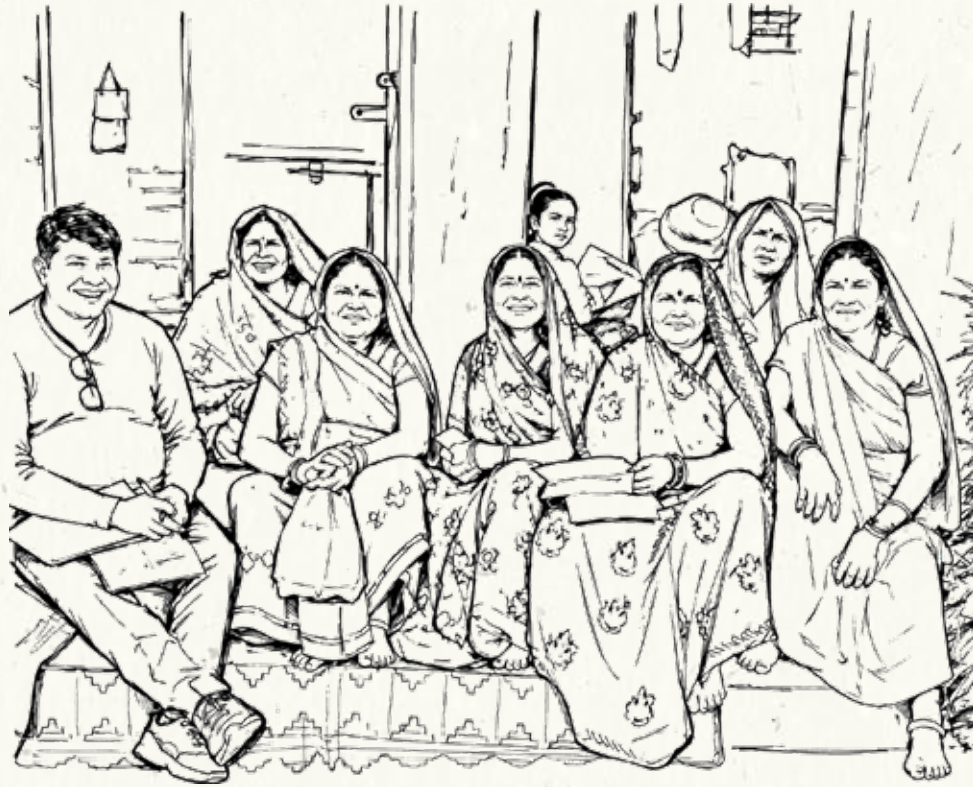
The turning point in my life came in 2008, when nearly 2,000 families were to be displaced from their settlement under the JNNURM project. I stood with the community and became part of a collective struggle that continued for two years and finally succeeded in preventing the eviction. That moment redefined my path. I chose community rights over the pursuit of a government job.

For the past 14 years, I have worked with urban poor communities and informal workers, including domestic workers, construction labourers, and street vendors. My work has focused on social security entitlements, access to education under RTE, gender justice, and issues of displacement.

Through the PHIA Fellowship, I have strengthened my work through a constitutional lens, grounding my efforts in the values of equality, fraternity, dignity, and justice. I believe the Constitution must not only be understood but lived in everyday practice.

A portrait of a man with dark hair and a slight beard, wearing a blue patterned shirt. The background is a light, textured wash with some darker spots. The name 'अजय' is written in large white Devanagari script, and 'Ajay' is written in large white Latin script below it.

अजय
Ajay



“कोई किसी और को मुक्त नहीं करता, और न ही हम अकेले स्वयं को मुक्त कर सकते हैं। हम एक-दूसरे के साथ मिलकर ही मुक्ति प्राप्त करते हैं।”
- पाउलो फ्रेरे

मैं मध्य प्रदेश के मंडला ज़िले से हूँ। मैंने ग्रामीण विकास में स्नातकोत्तर की पढ़ाई की है। एक किसान परिवार में पला-बढ़ा होने के कारण गाँव, खेती और सामुदायिक जीवन से मेरा गहरा जुड़ाव रहा है। मेरा बचपन गाँव और रेलवे कॉलोनी, दोनों परिवेशों में बीता, जहाँ मैंने विविध समुदायों के बीच विश्वास, सद्भाव और मिलकर रहने की संस्कृति को बहुत करीब से देखा।

मेरे जीवन का सबसे महत्वपूर्ण मोड़ वर्ष 2008 में आया, जब जेएनएनयूआरएम परियोजना के तहत लगभग दो हज़ार परिवारों को उनके बसेरे से विस्थापित किया जाना था। मैं उस समुदाय के साथ खड़ा हुआ और दो वर्षों तक चले सामूहिक संघर्ष का हिस्सा बना। अंततः यह संघर्ष सफल हुआ और लोगों का विस्थापन रुक गया। उसी अनुभव ने मेरे जीवन की दिशा बदल दी। मैंने सरकारी नौकरी की राह चुनने के बजाय समुदाय के अधिकारों के लिए काम करने का निर्णय लिया।

पिछले चौदह वर्षों से मैं शहरी गरीब समुदायों और असंगठित क्षेत्र के श्रमिकों—घरेलू कामगारों, निर्माण श्रमिकों और रेहड़ी-पटरी विक्रेताओं—के साथ काम कर रहा हूँ। मेरा कार्य सामाजिक सुरक्षा योजनाओं तक पहुँच, शिक्षा के अधिकार (आरटीई), लैंगिक न्याय और विस्थापन जैसे मुद्दों पर केंद्रित रहा है।

पीएचआईए की 'मेरी पहचान संविधान' फेलोशिप ने मेरे काम को संवैधानिक दृष्टि से और अधिक मजबूत बनाया। इसने मुझे समानता, बंधुत्व, गरिमा और न्याय जैसे मूल्यों को अपने कार्य और जीवन के केंद्र में रखने की प्रेरणा दी। मेरा विश्वास है कि संविधान केवल समझने की चीज़ नहीं है, बल्कि उसे अपने रोज़मर्रा के जीवन और व्यवहार में जीना ही उसकी सच्ची सार्थकता है।



“Slowly, slowly. O mind: everything happens in its own time. The gardener may pour a hundred pots of water, but the fruit appears only in its season.”

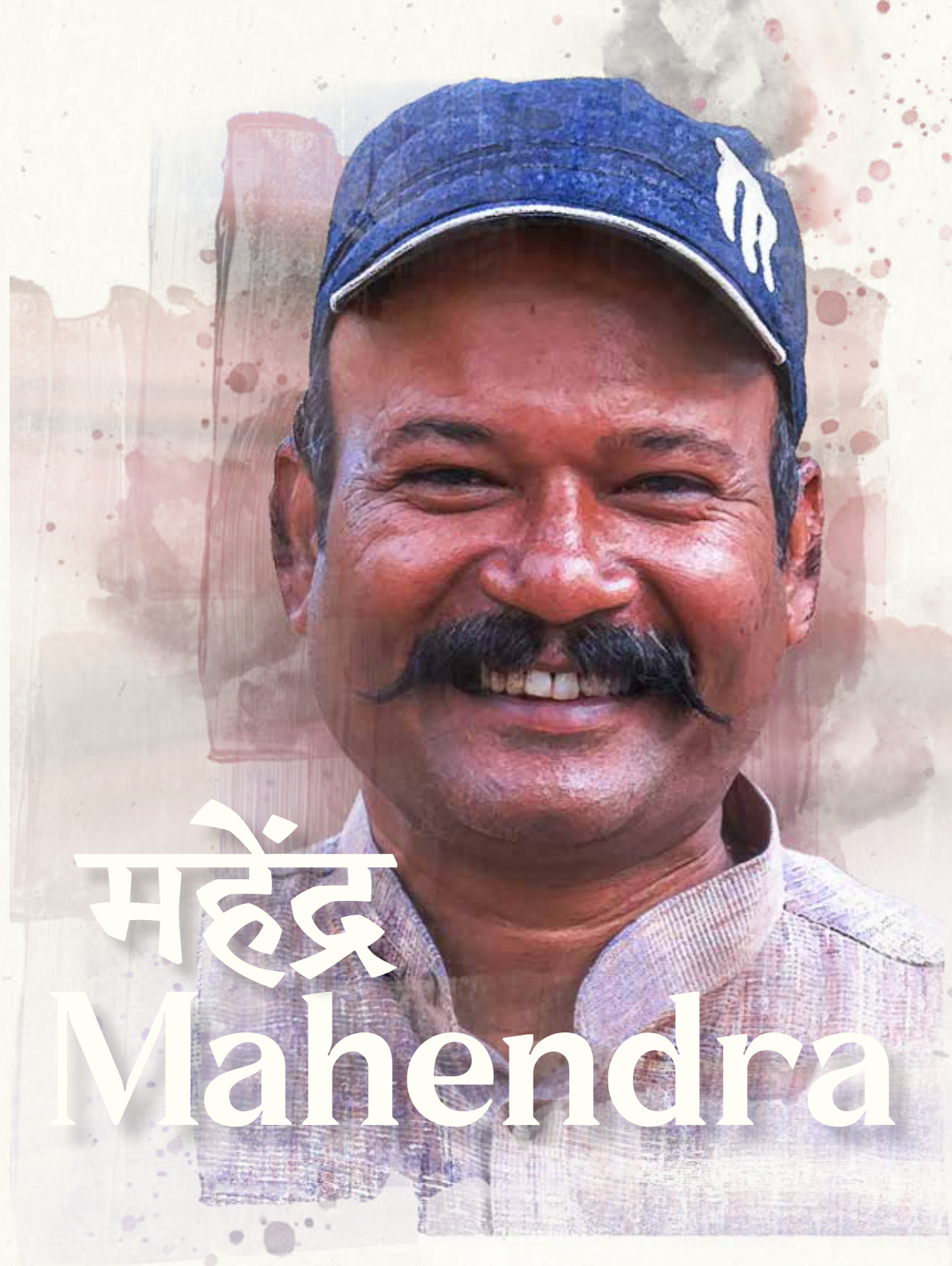
– Kabir

I come from Sehore district in Madhya Pradesh and have been working in the social development sector since 2006. Although I hold a postgraduate degree in Sociology, my real education has come from working alongside communities and understanding their struggles. My journey into social action began after my father's passing, when I joined a non-profit organisation, Samarthan Centre for Development Support. I learned about Panchayati Raj, the Right to Information, and community mobilisation, while travelling across villages and listening to people's lived experiences. One incident that has stayed with me is that of Vimla Didi, who mortgaged her silver anklet just to build a toilet and protect her dignity. That moment taught me that development is ultimately about human dignity.

The defining moment in my journey came in 2010 while working at the District Hospital in Sehore. I witnessed poor families being forced to pay bribes for birth certificates that should have been issued free of cost. I could not remain silent. Along with my organisation, I filed a formal complaint, which eventually led to the concerned official being removed. That experience strengthened my belief that raising one's voice against injustice can bring meaningful change.

Since 2011, I have been working on the implementation of the Forest Rights Act in Madhya Pradesh. Walking alongside Adivasi communities, I have supported families in securing legal recognition of their land rights. During this period, more than 1500 forest rights titles were approved with our collective efforts, making this one of the most fulfilling chapters of my life. Through community mobilisation, public advocacy, and legal awareness, I continue to work towards correcting the historical injustices faced by forest-dwelling communities.

The Meri Pehchan Samvidhan Fellowship has transformed not only my work but also my own way of living. Earlier, I focused mainly on the issues I was already working on. The fellowship helped me see social justice through a broader constitutional lens, deepening my understanding of equality, liberty, fraternity, dignity, and even issues such as LGBTQIA+ rights that I had not engaged with earlier. Today, I consciously practise these values in my family, my workplace, and every community I work with. For me, the Constitution is a guide for living with fairness, respect, and humanity.





“धीरे-धीरे रे मना, धीरे सब कुछ होया। माली सींचे सौ घड़ा, ऋतु आए फल होया।”

— कबीर

मैं मध्य प्रदेश के सीहोर ज़िले से हूँ और वर्ष 2006 से सामाजिक विकास के क्षेत्र में कार्य कर रहा हूँ। हालांकि मैंने समाजशास्त्र में स्नातकोत्तर की पढ़ाई की है, लेकिन मेरी वास्तविक शिक्षा समुदायों के बीच रहकर, उनके संघर्षों को समझते हुए मिली है। सामाजिक कार्य की मेरी यात्रा पिता के निधन के बाद शुरू हुई, जब मैं समर्थन सेंटर फॉर डेवलपमेंट सपोर्ट से जुड़ा। गाँव-गाँव घूमते हुए, लोगों के जीवन को करीब से समझते हुए मैंने पंचायती राज, सूचना का अधिकार और सामुदायिक संगठन की शक्ति को जाना। इसी दौरान विमला दीदी की एक घटना ने मुझे गहराई से प्रभावित किया। उन्होंने अपनी गरिमा की रक्षा के लिए शौचालय बनवाने हेतु अपनी चाँदी की पायल गिरवी रख दी थी। उस दिन मैंने समझा कि विकास का सबसे बड़ा अर्थ मनुष्य की गरिमा है।

मेरे जीवन का एक महत्वपूर्ण मोड़ वर्ष 2010 में आया, जब मैं सीहोर जिला अस्पताल में कार्य कर रहा था। वहाँ मैंने देखा कि गरीब परिवारों से जन्म प्रमाण पत्र, जो निःशुल्क मिलना चाहिए था, उसके लिए रिश्तत माँगी जा रही थी। मैं चुप नहीं रह सका। अपनी संस्था के साथ मिलकर मैंने इसकी औपचारिक शिकायत की, जिसके परिणामस्वरूप संबंधित अधिकारी को पद से हटाया गया। उस घटना ने मेरे भीतर यह विश्वास और मजबूत किया कि अन्याय के विरुद्ध उठाई गई आवाज़ वास्तविक परिवर्तन ला सकती है।

वर्ष 2011 से मैं मध्य प्रदेश में वन अधिकार अधिनियम के प्रभावी क्रियान्वयन पर कार्य कर रहा हूँ। आदिवासी समुदायों के साथ चलते हुए मैंने अनेक परिवारों को उनकी भूमि पर कानूनी अधिकार दिलाने में सहयोग किया है। सामूहिक प्रयासों के माध्यम से 1500 से अधिक वन अधिकार पट्टे स्वीकृत हुए, जो मेरी यात्रा के सबसे संतोषजनक अनुभवों में से एक हैं। सामुदायिक संगठन, जन-अभियान और कानूनी जागरूकता के माध्यम से मैं आज भी वन आश्रित समुदायों के साथ हुए ऐतिहासिक अन्याय को दूर करने की दिशा में काम कर रहा हूँ।

‘मेरी पहचान संविधान’ फेलोशिप ने न केवल मेरे काम को नई दिशा दी, बल्कि मेरे जीवन जीने के तरीके को भी बदला। पहले मेरा ध्यान मुख्यतः उन्हीं मुद्दों तक सीमित था जिन पर मैं पहले से काम कर रहा था। इस फेलोशिप ने मुझे सामाजिक न्याय को संविधान की व्यापक दृष्टि से समझने का अवसर दिया। समानता, स्वतंत्रता, बंधुत्व, गरिमा और यहाँ तक कि एलजीबीटीक्यूआईए+ समुदाय के अधिकारों जैसे विषयों पर भी मेरी समझ गहरी हुई। आज मैं इन मूल्यों को अपने परिवार, कार्यस्थल और हर उस समुदाय में आत्मसात का प्रयास करता हूँ जिनके साथ मैं काम करता हूँ।

मेरे लिए संविधान केवल एक दस्तावेज़ नहीं, बल्कि निष्पक्षता, सम्मान और मानवीय संवेदनाओं के साथ जीवन जीने का मार्गदर्शक है।

“The wound is the place where the Light enters you.”

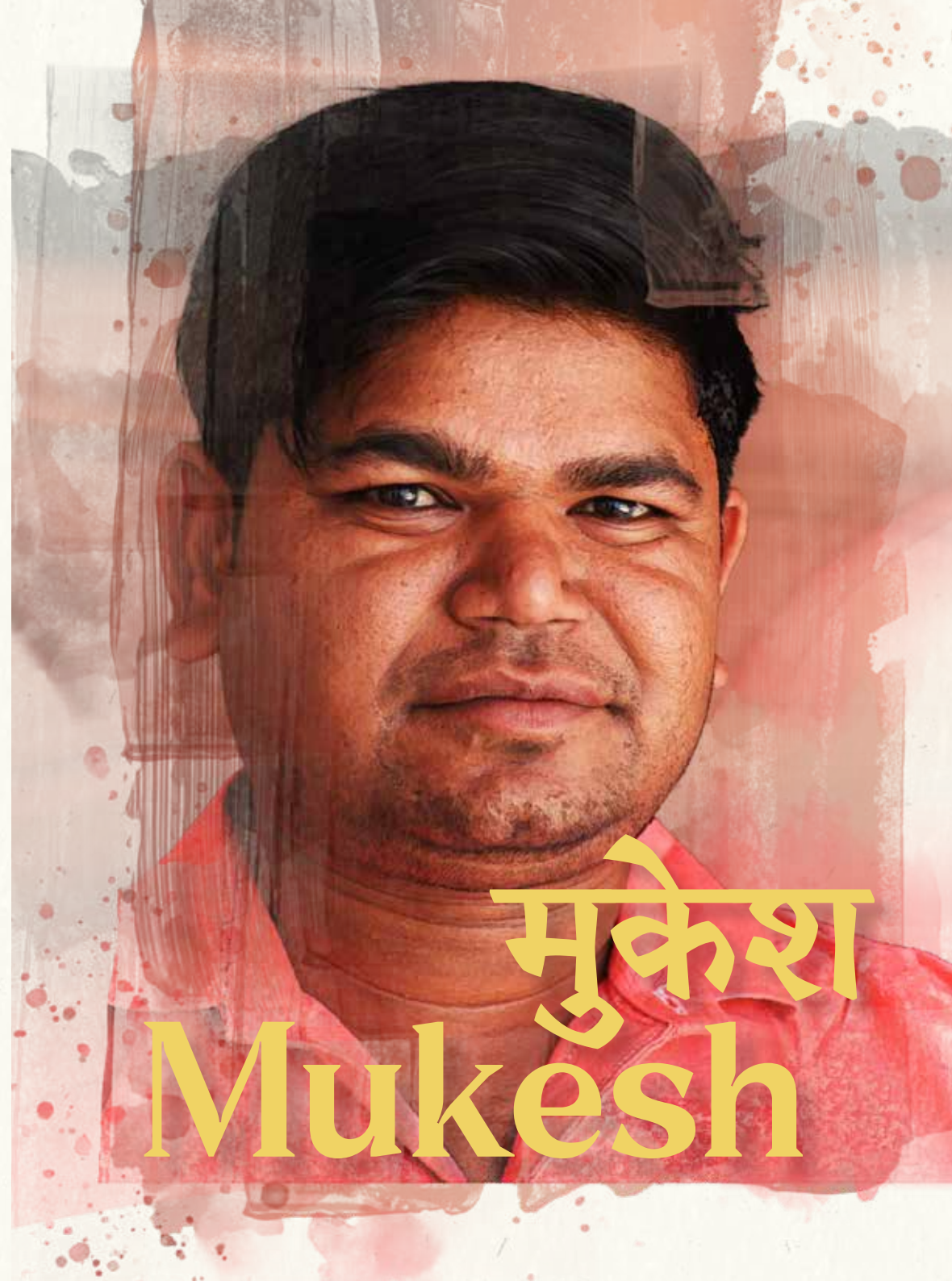
– Rumi

I come from Baniyagaon village in Sehore district, Madhya Pradesh, and belong to the Barela tribal community. My childhood was shaped by multiple hardships. My parents worked as bonded labourers, and to ensure that I could study, they sent me to a hostel at an early age. Although I completed my schooling, financial constraints forced me to discontinue my education after Class 12. I enrolled in an ITI, but soon had to leave my studies behind and take up daily wage work to support my family.

The turning point in my life came when my younger brother was brutally assaulted, leaving him with severe injuries. Our family spent nearly ₹1.5 lakh on his treatment by borrowing money, yet we received no justice through the traditional community panchayat. That experience changed me forever. I realised how painful it is when ordinary people are denied justice, and I decided that I would stand beside others facing similar struggles.

My association with land rights movements introduced me to community mobilisation, and later the Meri Pehchan Samvidhan Fellowship gave my work a new direction. Through the fellowship, I resumed my education, completing a PGDCA and pursuing an MSW, while working with Adivasi communities on constitutional values, social justice, government entitlements, and the preservation of Barela culture. I also help document our traditions and encourage dialogue on how indigenous values of collective living, respect for nature, and mutual responsibility resonate with the constitutional principles of equality, dignity, fraternity, and justice.

One of the achievements I value most is mobilising my village to demand safe drinking water. Together, we raised the issue with the Gram Panchayat, and today a water tank is being constructed for the community. Experiences like these have strengthened my belief that lasting change comes when people organise and raise their voices together. For me, the Constitution is about living with justice, equality, and respect, while ensuring that no one is left behind because of poverty, discrimination, or circumstances.





“घाव ही वह स्थान है जहाँ से प्रकाश आपके भीतर प्रवेश करता है।” - रूमी

मैं मध्य प्रदेश के सीहोर जिले के बनियागाँव का रहने वाला हूँ और बरेला आदिवासी समुदाय से संबंध रखता हूँ। मेरा बचपन अनेक कठिनाइयों के बीच बीता। मेरे माता-पिता बंधुआ मज़दूर थे। उन्होंने मेरे बेहतर भविष्य के लिए मुझे कम उम्र में ही छात्रावास भेज दिया ताकि मैं पढ़ाई कर सकूँ। मैंने अपनी स्कूली शिक्षा पूरी की, लेकिन आर्थिक परिस्थितियों के कारण बारहवीं के बाद पढ़ाई जारी नहीं रख सका। मैंने आईटीआई में प्रवेश लिया, पर परिवार की जिम्मेदारियों ने मुझे पढ़ाई छोड़कर दिहाड़ी मज़दूरी करने के लिए मजबूर कर दिया।

मेरे जीवन का सबसे बड़ा मोड़ तब आया, जब मेरे छोटे भाई पर जानलेवा हमला हुआ। वह गंभीर रूप से घायल हो गया और उसके इलाज के लिए हमारे परिवार को लगभग डेढ़ लाख रुपये उधार लेने पड़े। इतना सब होने के बाद भी हमें पारंपरिक सामुदायिक पंचायत से न्याय नहीं मिला। उस घटना ने मुझे भीतर तक बदल दिया। मैंने महसूस किया कि जब साधारण लोगों को न्याय नहीं मिलता, तो उसका दर्द कितना गहरा होता है। उसी दिन मैंने तय किया कि मैं उन लोगों के साथ खड़ा रहूँगा जो ऐसे ही संघर्षों से गुजर रहे हैं।

भूमि अधिकार आंदोलनों से जुड़ने के बाद मुझे सामुदायिक संगठन की शक्ति को समझने का अवसर मिला। बाद में 'मेरी पहचान संविधान' फेलोशिप ने मेरे काम को नई दिशा दी। फेलोशिप के साथ जुड़ते हुए मैंने अपनी पढ़ाई भी दोबारा शुरू की, पीजीडीसीए पूरा किया और सामाजिक कार्य (एम.एस.डब्ल्यू.) की पढ़ाई जारी रखी। आज मैं आदिवासी समुदायों के साथ संवैधानिक मूल्यों, सामाजिक न्याय, सरकारी योजनाओं तक पहुँच और बरेला संस्कृति के संरक्षण लिए प्रयास कर रहा हूँ। साथ ही, बरेला संस्कृति का दस्तावेजीकरण करने और प्रकृति की प्रति सम्मान एवं सामूहिक जिम्मेदारी जैसे आदिवासी परंपरा की प्रमुख मूल्यों को संवैधानिक मूल्यों, समानता, गरिमा, बंधुत्व और न्याय इत्यादि, से जोड़ कर समुदाय के लोगों के साथ सक्रिय संवाद जारी रखने का प्रयास कर रहा हूँ।

मेरे लिए सबसे संतोषजनक उपलब्धियों में से एक अपने गाँव में सुरक्षित पेयजल की व्यवस्था के लिए समुदाय को संगठित करना रहा। हम सबने मिलकर ग्राम पंचायत के सामने अपनी बात रखी एवं इस मुद्दे के लिए ग्राम एवं पंचायत स्तर पर निरंतर संवाद एवं वकालत की जिसके फल स्वरूप आज गाँव में पानी की टंकी का निर्माण हो रहा है। ऐसे अनुभवों ने मेरे विश्वास को और मजबूत किया है कि स्थायी परिवर्तन तभी संभव है, जब लोग संगठित होकर अपनी आवाज़ स्वयं उठाएँ।

मेरे लिए संविधान केवल अधिकारों का दस्तावेज़ नहीं, बल्कि न्याय, समानता और सम्मान के साथ जीवन जीने का मार्ग है—एक ऐसा मार्ग, जहाँ गरीबी, भेदभाव या परिस्थितियों के कारण कोई भी व्यक्ति पीछे न छूटे।

“Ask not a seeker’s caste; ask instead what they have learned. Value the sword for its worth, not the sheath that covers it.”

– Kabir

I come from Sagargram village in Neemuch district of Madhya Pradesh, and belong to the Bachhda community. My journey into social work began with questions from my own childhood. In my community, women are often pushed into sex work to support their families, and this was also part of my own family’s reality. My mother was engaged in sex work, while my father belonged to another community and did not have official documents. Because of this, my school records carried only my mother’s name. In school, other children mocked me and asked why my father’s name was not written. Many children from my community faced the same stigma, and several dropped out. Watching this made me question why a child should be denied dignity, education, or opportunity because of their mother’s work or their community identity.

While still studying, I joined struggles to protect land rights of families from my community. Later, through association with ActionAid’s Bhor project, I began understanding community mobilisation more deeply. Along with other community members, I founded Naya Jeevan Foundation to create alternative opportunities for the Bachhda community.

For more than a decade, I have worked to support girls’ education, prevent school dropouts, create livelihood alternatives, and help families access identity documents, caste certificates, welfare schemes, and constitutional entitlements. A major part of my work is to ensure that girls are not pushed into intergenerational sex work and are able to imagine futures of education, dignity, and choice.

The Meri Pehchan Samvidhan Fellowship helped me see my work through constitutional values of equality, dignity, fraternity, justice, and freedom. Today, I see my journey not as an individual struggle, but as part of a larger process of social change. For me, “Naya Jeevan” means a new life where every child in my community has identity, dignity, and the freedom to choose their own

A portrait of a man with dark hair and glasses, wearing a light green shirt. The background is a textured, painterly style with warm tones. The name 'Narendra' is written in large blue Devanagari and English script across the bottom right of the image.

नरेंद्र
Narendra



“जाति न पूछो साधु की, पूछ लीजिए ज्ञान। मोल करो तलवार का, पड़ा रहन दो म्याना।”

– कबीर

मैं मध्य प्रदेश के नीमच ज़िले के सागरग्राम गाँव का रहने वाला हूँ और बाछड़ा समुदाय से संबंध रखता हूँ। सामाजिक कार्य की मेरी यात्रा मेरे बचपन के उन सवालों से शुरू हुई, जिनके उत्तर मैं काफी समय से खोज रहा था। मेरे समुदाय में आजीविका के अभाव में अनेक महिलाओं को देह व्यापार के लिए मजबूर होना पड़ता है, और यह मेरे अपने परिवार की भी सच्चाई थी। मेरी माँ इसी काम से जुड़ी थीं, जबकि मेरे पिता दूसरे समुदाय से थे और उनके पास कोई आधिकारिक पहचान दस्तावेज़ नहीं था। इसी कारण मेरे स्कूल के रिकॉर्ड में केवल मेरी माँ का नाम दर्ज था। स्कूल में बच्चे मेरा मज़ाक उड़ाते थे और पूछते थे कि मेरे पिता का नाम क्यों नहीं लिखा है। मेरे समुदाय के अनेक बच्चों ने इसी तरह के भेदभाव का सामना किया और कई ने पढ़ाई बीच में ही छोड़ दी। इन अनुभवों ने मेरे भीतर यह सवाल जगाया कि किसी बच्चे की गरिमा, शिक्षा और अवसर केवल उसकी माँ के काम या उसके समुदाय की पहचान के कारण क्यों छीन लिए जाएँ ?

पढ़ाई के दौरान ही मैं अपने समुदाय के विभिन्न परिवारों के भूमि अधिकारों की लड़ाई से जुड़ा। बाद में एक्शन एड के भोर प्रोजेक्ट के साथ काम करते हुए मैंने सामुदायिक संगठन की शक्ति को गहराई से समझा। इसी दौरान मेरे ही समुदाय के साथियों के साथ मिलकर मैंने नया जीवन फाउंडेशन की स्थापना की, जिसके प्रमुख उद्देश्यों में बाछड़ा समुदाय के लोगों, विशेषकर महिलाओं और बच्चों के लिए सम्मानजनक जीवन और आजीविका के नए अवसर तैयार करना है।

पिछले एक दशक से अधिक समय से मैं बाछड़ा समुदाय की बालिकाओं की शिक्षा को बढ़ावा देने, स्कूल छोड़ने की समस्या को रोकने, आजीविका के वैकल्पिक साधन विकसित करने और समुदाय के लोगों को विभिन्न पात्रताएँ जैसे की पहचान पत्र, जाति प्रमाण पत्र, सरकारी योजनाओं तथा संवैधानिक अधिकारों तक पहुँच दिलाने के लिए काम कर रहा हूँ। मेरे काम का सबसे महत्वपूर्ण उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि कोई भी लड़की पीढ़ी-दर-पीढ़ी चली आ रही देह व्यापार की परंपरा में धकेली न जाए, बल्कि उसे शिक्षा, गरिमा और अपने जीवन से जुड़े हर निर्णय लेने की स्वतंत्रता मिले।

‘मेरी पहचान संविधान’ फेलोशिप ने मुझे अपने काम को समानता, गरिमा, बंधुत्व, न्याय और स्वतंत्रता जैसे संवैधानिक मूल्यों की दृष्टि से देखने का अवसर दिया। आज मैं अपनी यात्रा को केवल व्यक्तिगत संघर्ष नहीं, बल्कि व्यापक सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया का हिस्सा मानता हूँ। मेरे लिए ‘नया जीवन’ का अर्थ है, ऐसा उज्ज्वल भविष्य, जहाँ मेरे समुदाय का हर बच्चा अपनी पहचान, गरिमा और अपने जीवन का रास्ता स्वयं चुनने की स्वतंत्रता के साथ आगे बढ़ सके।

“Faith is the bird that feels the light and sings when the dawn is still dark.”

– Rabindranath Tagore

There was a time when I thought my dreams had ended before they had truly begun.

I grew up in Indore in a Banjara family as the eldest of four siblings. From an early age, I carried responsibilities, but I also carried the dream of continuing my education. After completing Class 10, financial hardship and poor health forced me to leave school. Watching my education come to a halt was one of the most difficult moments of my life, and for a while, it felt as though my future had slipped away.

Yet I could not let go of the desire to make a difference.

Although I had left school, I began volunteering with social organisations, working with children and young people across different settlements in Indore. Through street theatre, I spoke about issues like child marriage, education, and social inequality. Those performances helped me discover that my voice could inspire change.

When the COVID-19 lockdown brought this work to a halt, I found myself back at home, uncertain about what lay ahead. Around that time, I learned about the Meri Pehchan Samvidhan Fellowship. Joining the fellowship became a turning point. It helped me understand constitutional values and renewed my confidence to return to my own education.

Today, I am completing my Class 12 studies while working with children and girls from the Banjara community. I encourage families to support girls' education and help young people believe that their dreams are worth pursuing.

Looking back, I realise my journey was never only about returning to school. It was about discovering that circumstances may interrupt our path, but they do not have to define our future.





“आस्था वह पक्षी है जो भोर होने से पहले ही प्रकाश को महसूस कर गाना शुरू कर देता है।”

- रवींद्रनाथ टैगोर

एक समय ऐसा भी था जब मुझे लगा कि मेरे सपने शुरू होने से पहले ही समाप्त हो गए हैं।

मेरा जन्म इंदौर के एक बंजारा परिवार में हुआ। चार भाई-बहनों में सबसे बड़ी होने के कारण छोटी उम्र से ही जिम्मेदारियाँ मेरे जीवन का हिस्सा बन गई थीं। लेकिन उन जिम्मेदारियों के साथ-साथ मेरे भीतर पढ़ाई जारी रखने और कुछ अलग करने का सपना भी था। दसवीं कक्षा पूरी करने के बाद आर्थिक कठिनाइयों और खराब स्वास्थ्य के कारण मुझे अपनी पढ़ाई बीच में छोड़नी पड़ी। अपनी शिक्षा को अचानक रुकते देखना मेरे जीवन के सबसे कठिन अनुभवों में से एक था। कुछ समय के लिए मुझे लगा कि मेरा भविष्य मुझसे छिन गया है।

फिर भी, मेरे भीतर कुछ बदलने की इच्छा कभी खत्म नहीं हुई।

स्कूल छोड़ने के बाद भी मैंने सामाजिक संस्थाओं के साथ जुड़कर इंदौर की विभिन्न बस्तियों में बच्चों और युवाओं के साथ काम करना शुरू किया। नुक्कड़ नाटकों के माध्यम से मैंने बाल विवाह, शिक्षा और सामाजिक असमानता जैसे मुद्दों पर लोगों से संवाद किया। इन्हीं प्रस्तुतियों ने मुझे यह विश्वास दिलाया कि मेरी आवाज़ बदलाव की शुरुआत बन सकती है।

कोविड-19 लॉकडाउन के दौरान यह काम अचानक रुक गया और मैं एक बार फिर घर की सीमाओं और अनिश्चितताओं के बीच लौट आई। इसी समय मुझे 'मेरी पहचान संविधान' फेलोशिप के बारे में पता चला। इस फेलोशिप से जुड़ना मेरे जीवन का एक महत्वपूर्ण मोड़ साबित हुआ। इसने मुझे संवैधानिक मूल्यों की गहरी समझ दी और अपनी अधूरी पढ़ाई दोबारा शुरू करने का आत्मविश्वास भी।

आज मैं अपनी बारहवीं की पढ़ाई पूरी कर रही हूँ और साथ ही बंजारा समुदाय के बच्चों और किशोरियों के साथ काम करती हूँ। मैं परिवारों को लड़कियों की शिक्षा का महत्व समझाने और युवाओं को अपने सपनों पर विश्वास करने के लिए प्रेरित करती हूँ।

आज पीछे मुड़कर देखती हूँ तो समझ आता है कि मेरी यात्रा केवल पढ़ाई दोबारा शुरू करने की नहीं थी। यह उस विश्वास को फिर से पाने की यात्रा थी कि परिस्थितियाँ हमारी राह रोक सकती हैं, लेकिन हमारे भविष्य का फैसला नहीं कर सकतीं।

“The lamps are different, but the Light is the same.”

– Rumi

I was born in a small village in Bhind district of Madhya Pradesh and moved to Bhopal with my parents when I was six years old. Growing up in Balbir Nagar Basti, I dreamed of becoming an engineer. However, studying engineering in English after a Hindi-medium education proved overwhelming, and I had to leave the course. My attempts to complete higher education through a bachelor's degree and later a diploma also remained unfinished due to circumstances beyond my control. These setbacks were painful, but they also taught me resilience and helped me realise that education is not confined to classrooms but is equally found in communities and lived experiences.

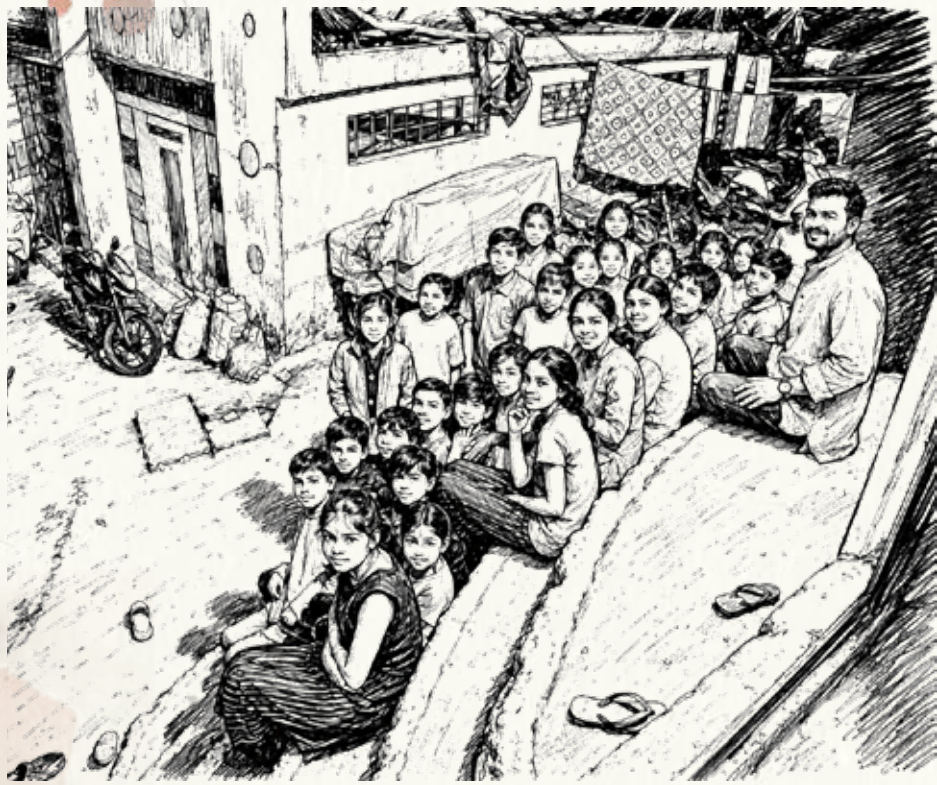
My journey into social work began with a youth collective called Ansh, but it was my association with land rights movements in Madhya Pradesh that transformed my perspective. Travelling across the Chambal region with young people from different parts of India and later participating in peace marches, including the Delhi to Geneva peace march, taught me the power of dialogue, equality, and collective action. These experiences inspired me to create platforms such as “Yuva Karna Kya Chahta Hai?” and Youth for Change (Y4C), where young people could express themselves through theatre, discussions, and community engagement.

The Meri Pehchan Samvidhan Fellowship gave me the opportunity to dedicate myself full time to the work I had been doing voluntarily for years. Through the Samvidhan Shala in Balbir Nagar, I now work with children and young people to help them understand constitutional values of equality, dignity, freedom, and fraternity through conversations, activities, exposure visits, and summer camps. My own struggles with education motivate me to ensure that no child has to abandon their dreams because of circumstances.

For me, constitutional values begin at home. Living in a joint family has taught me that equality grows through shared decision-making, mutual respect, and collective responsibility. Whether I am working with children from different castes and religions or encouraging young people to respect each other's beliefs and identities, I try to create spaces where diversity is celebrated and no one feels excluded. I believe that when children learn to live the Constitution in their everyday lives, they also learn to build a more peaceful, just, and compassionate society.

A portrait of a man with dark hair and a beard, wearing a blue shirt. The background is a soft, painterly wash of light colors. The name 'Neeru' is written in large white letters across the bottom right of the portrait.

नीरु
Neeru



“दीपक अलग-अलग हैं, पर उनका प्रकाश एक ही है।”

— रूमी

मेरा जन्म मध्य प्रदेश के भिंड जिले के एक छोटे से गाँव में हुआ। जब मैं छह वर्ष का था, तब मेरा परिवार भोपाल आकर बस गया। बलबीर नगर बस्ती में पला-बढ़ा और बचपन में मेरा सपना इंजीनियर बनने का था। लेकिन हिंदी माध्यम से पढ़ाई करने के बाद अंग्रेजी माध्यम में इंजीनियरिंग की पढ़ाई मेरे लिए बेहद कठिन साबित हुई और मुझे बीच में ही पढ़ाई छोड़नी पड़ी। बाद में स्नातक और डिप्लोमा की पढ़ाई पूरी करने के प्रयास भी विक्षम परिस्थितियों के कारण अधूरे रह गए। ये असफलताएँ निश्चित ही पीड़ादायक थीं, लेकिन उन्होंने मुझे यह भी सिखाया कि शिक्षा केवल कक्षाओं तक सीमित नहीं होती, बल्कि समुदायों, लोगों और जीवन के अनुभवों से भी मिलती है।

सामाजिक कार्य की मेरी यात्रा 'अंश' नामक एक युवा समूह से शुरू हुई, लेकिन मध्य प्रदेश में भूमि अधिकार आंदोलनों से जुड़ने के बाद मेरे सोचने का नज़रिया पूरी तरह बदल गया। चंबल क्षेत्र में देश के अलग-अलग हिस्सों से आए युवाओं के साथ यात्राएँ करना और बाद में दिल्ली से जिनेवा तक की शांति पदयात्रा सहित अनेक शांति यात्राओं में भाग लेना, मेरे लिए जीवन बदल देने वाले अनुभव रहे। इन यात्राओं ने मुझे संवाद, समानता और सामूहिक प्रयास की शक्ति का एहसास कराया। इन्हीं अनुभवों से प्रेरित होकर मैंने 'युवा करना क्या चाहता है?' और यूथ फॉर चेंज (Y4C) जैसे मंचों की शुरुआत की, जहाँ युवा रंगमंच, संवाद और सामुदायिक सहभागिता के माध्यम से अपनी बात कह सकें।

'मेरी पहचान संविधान' फेलोशिप ने मुझे वर्षों से स्वैच्छिक रूप से किए जा रहे इस कार्य को पूर्णकालिक रूप से आगे बढ़ाने का अवसर दिया। आज बलबीर नगर स्थित संविधान शाला के माध्यम से मैं बच्चों और युवाओं के साथ काम करता हूँ, ताकि वे बातचीत, गतिविधियों, शैक्षणिक भ्रमण और समर कैंप जैसे अनुभवों के माध्यम से समानता, गरिमा, स्वतंत्रता और बंधुत्व जैसे संवैधानिक मूल्यों को समझ सकें और उन्हें अपने जीवन में अपना सकें। शिक्षा से जुड़े मेरे अपने संघर्ष मुझे लगातार प्रेरित करते हैं कि कोई भी बच्चा केवल परिस्थितियों के कारण अपने सपनों से समझौता न करे।

मेरे लिए संवैधानिक मूल्यों की शुरुआत घर से होती है। संयुक्त परिवार में रहते हुए मैंने सीखा है कि समानता साझा निर्णय लेने, पारस्परिक सम्मान और सामूहिक जिम्मेदारी से विकसित होती है। चाहे मैं अलग-अलग जातियों और धर्मों के बच्चों के साथ काम करूँ या युवाओं को एक-दूसरे की आस्थाओं और पहचानों का सम्मान करना सिखाऊँ, मेरा प्रयास हमेशा ऐसे सुरक्षित और समावेशी स्थान बनाने का रहता है जहाँ विविधता का उत्सव मनाया जाए और कोई भी स्वयं को अलग-थलग महसूस न करे।

मेरा विश्वास है कि जब बच्चे अपने रोज़मर्रा के जीवन में संविधान को जीना सीखते हैं, तभी वे आगे चलकर एक अधिक शांतिपूर्ण, न्यायपूर्ण और संवेदनशील समाज का निर्माण करते हैं।

“I went looking for the wicked, but found none. When I looked within myself, I found no one worse than me.”

– Kabir

I grew up in Ghaziabad, on the outskirts of Delhi, in a family that gave me every opportunity to pursue my interests. As a child, I dreamed of becoming a sportsperson and spent most of my time on the cricket field. Looking back, I realise I also grew up with privileges that shielded me from many forms of discrimination. It was only while studying sociology that I first encountered the realities of caste, exclusion, and inequality. That realisation began a journey of questioning my own privilege and understanding the structures that shape people's lives.

My studies at Ambedkar University and later at Azim Premji University deepened this understanding, but it was working with Denotified Tribes that transformed it into commitment. Listening to members of the Pardhi community speak about police harassment, inherited stigma, and being seen as “criminals” regardless of who they were made me realise how deeply injustice can shape a person's identity. During a livelihood programme, one woman refused to start a food business because she believed no one would eat food prepared by someone from her community. That moment taught me that exclusion is not only imposed from outside—it can also become internalised.

The Meri Pehchan Samvidhan Fellowship gave me the opportunity to bring together my interests in sports, community work, and constitutional values. Rather than teaching the Constitution through lectures, I chose Ultimate Frisbee as a medium for learning. Its principles of self-officiating, shared decision-making, mixed-gender participation, and respect naturally cultivate equality, dialogue, and fraternity. Through games, storytelling, theatre, and art, I work with children and young people from the Pardhi community, creating spaces where constitutional values are experienced rather than simply explained.

For me, the Constitution is not merely a legal document. It is a way of questioning privilege, nurturing empathy, and building communities where every person can participate with dignity.

A portrait of a man with a beard and a green headband, smiling. The background is a textured, watercolor-like wash of colors. The name 'Neelansh' is written in large, bold, yellow-green letters across the bottom right of the image.

नीलांश
Neelansh



“बुरा जो देखन मैं चला, बुरा न मिलिया कोया जो दिल खोजा आपना, मुझ से बुरा न कोया॥”

- कबीर

मैं दिल्ली के बाहरी क्षेत्र गाज़ियाबाद में पला-बढ़ा, एक ऐसे परिवार में जहाँ मुझे अपनी रुचियों को आगे बढ़ाने के हर अवसर मिले। बचपन में मेरा सपना एक खिलाड़ी बनने का था और मेरा अधिकांश समय क्रिकेट के मैदान पर बीतता था। आज पीछे मुड़कर देखता हूँ तो समझ आता है कि मैं ऐसे विशेषाधिकारों के साथ बड़ा हुआ, जिन्होंने मुझे समाज में मौजूद अनेक प्रकार के भेदभाव से अनजान बनाए रखा। समाजशास्त्र की पढ़ाई के दौरान पहली बार मेरा सामना जाति, बहिष्कार और असमानता की वास्तविकताओं से हुआ। तभी मैंने अपने विशेषाधिकारों को समझना और उन सामाजिक संरचनाओं पर सवाल उठाना शुरू किया जो लोगों के जीवन को आकार देती हैं।

अंबेडकर विश्वविद्यालय और बाद में अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय में पढ़ाई ने मेरी समझ को और गहरा किया, लेकिन विमुक्त जनजातियों के साथ काम करते हुए यह समझ एक प्रतिबद्धता में बदल गई। पारधी समुदाय के लोगों से पुलिस उत्पीड़न, पीढ़ियों से चले आ रहे सामाजिक कलंक और हर हाल में “अपराधी” समझे जाने की पीड़ा सुनकर मुझे एहसास हुआ कि अन्याय केवल अवसर नहीं छीनता, बल्कि इंसान की पहचान और आत्मविश्वास को भी प्रभावित करता है। एक आजीविका प्रशिक्षण के दौरान एक महिला ने केवल इसलिए भोजन का व्यवसाय शुरू करने से मना कर दिया क्योंकि उसे विश्वास था कि उसके समुदाय के हाथ का बना भोजन कोई नहीं खाएगा। उस क्षण मैंने समझा कि भेदभाव केवल बाहर से थोपा नहीं जाता, वह धीरे-धीरे लोगों के भीतर भी बस जाता है।

‘मेरी पहचान संविधान’ फेलोशिप ने मुझे खेल, सामुदायिक कार्य और संवैधानिक मूल्यों को एक साथ जोड़ने का अवसर दिया। संविधान को केवल व्याख्यानों के माध्यम से पढ़ाने के बजाय मैंने अल्टीमेट फ्रिस्बी को सीखने का माध्यम बनाया। इस खेल के सिद्धांत—स्वयं नियमों का पालन, सामूहिक निर्णय, मिश्रित लैंगिक भागीदारी और पारस्परिक सम्मान—स्वाभाविक रूप से समानता, संवाद और बंधुत्व जैसे मूल्यों को विकसित करते हैं। खेल, कहानियों, रंगमंच और कला के माध्यम से मैं पारधी समुदाय के बच्चों और युवाओं के साथ ऐसे सुरक्षित स्थान बनाता हूँ, जहाँ वे संवैधानिक मूल्यों को केवल पढ़ते नहीं, बल्कि उन्हें अपने अनुभवों में जीते हैं।

मेरे लिए संविधान केवल एक कानूनी दस्तावेज़ नहीं है। यह समाज को समझने, अपने विशेषाधिकारों पर प्रश्न उठाने और ऐसे अवसर बनाने का माध्यम है जहाँ हर व्यक्ति गरिमा के साथ भागीदारी कर सके। मेरा विश्वास है कि संवैधानिक चेतना केवल पढ़ाने से नहीं, बल्कि समानता, संवाद, सहानुभूति और साझा जिम्मेदारी के रोज़मर्रा के अनुभवों से विकसित होती है।

“The beautiful thing about learning is that no one can take it away from you.”

– BB King

For a long time, I believed that silence was simply a part of being a girl.

I belong to the Pardhi community and am currently pursuing my Class 10 education through the Open School system. My journey back to learning has been anything but easy. As a child, I was often considered weak in studies. Today, I know it was never because I lacked ability, but because my days were divided between school and household responsibilities. While other children returned home to complete their homework, I was expected to cook, clean, and care for my family. In our community, girls begin carrying these responsibilities from a very young age.

After Class 8, my education came to a complete stop. I did not know how to argue for my dreams, so I quietly accepted the decision. For the next four years, I travelled with my family across different states as migrant labourers, selling bangles and doing daily wage work. Slowly, I began to believe that education no longer belonged to my future.

Everything began to change when I joined the Lahar Team. Through theatre, I discovered something I had never recognised before—my own voice. In my first play, I portrayed a young girl whose education was cut short, who was married as a child, and who eventually lost hope after facing domestic violence. The story was not fiction. It reflected the lives of many girls around me. After the performance, several young people came forward saying they wanted to continue their education. That moment showed me that stories can move people in ways that arguments sometimes cannot.

I decided to return to school through the Open School system. Soon after, I joined the Meri Pehchan Samvidhan Fellowship, where I encountered the Constitution not simply as a document, but as a way of understanding equality, dignity, freedom, and justice. The fellowship also helped me find the confidence to speak about the violence and discrimination I had experienced, and to transform those experiences into a source of strength.

Today, I work with children, girls, and young people through theatre, dialogue, and community learning spaces. I encourage girls to continue their education, question practices that limit their choices, and believe that their dreams deserve space to grow.

When I look back, I remember a girl who rarely spoke. Today, I stand before my community with confidence, believing that when one girl finds her voice, she quietly makes it easier for many others to find theirs too.

A portrait of a young woman with dark hair tied back, smiling warmly at the camera. She has a green bindi on her forehead and is wearing a pink and white striped shirt. The background is a soft, painterly wash of pink and white. The name 'Sanjana' is written in large, bold, blue Devanagari and Latin script across the bottom right of the image.

संजना
Sanjana



“सीखने की सबसे खूबसूरत बात यह है कि आपने जो ज्ञान अर्जित किया है, उसे आपसे कोई छीन नहीं सकता।”

- बी. बी. किंग

बहुत लंबे समय तक मुझे लगता था कि चुप रहना ही एक लड़की होने का हिस्सा है।

मैं पारधी समुदाय से हूँ और वर्तमान में ओपन स्कूल के माध्यम से दसवीं कक्षा की पढ़ाई कर रही हूँ। शिक्षा तक लौटने की मेरी यह यात्रा बिल्कुल आसान नहीं रही। बचपन में मुझे अक्सर पढ़ाई में कमजोर समझा जाता था। आज मैं समझती हूँ कि इसकी वजह मेरी क्षमता नहीं, बल्कि मेरी परिस्थितियाँ थीं। जब दूसरे बच्चे स्कूल से लौटकर अपना होमवर्क करते थे, तब मुझे घर का खाना बनाना, सफ़ाई करना और परिवार की जिम्मेदारियाँ निभानी पड़ती थीं। हमारे समुदाय में लड़कियों को बहुत छोटी उम्र से ही घर के कामों की जिम्मेदारी सौंप दी जाती है।

आठवीं कक्षा के बाद मेरी पढ़ाई पूरी तरह रुक गई। उस समय मेरे भीतर अपने सपनों के लिए बोलने का साहस नहीं था। अगले चार वर्षों तक मैं परिवार के साथ अलग-अलग राज्यों में मजदूरी करने और चूड़ियाँ बेचने जाती रही। धीरे-धीरे मुझे लगने लगा कि शिक्षा अब मेरे जीवन का हिस्सा नहीं रहेगी और मेरे सपने हमेशा के लिए अधूरे रह जाएंगे।

मेरे जीवन में बदलाव तब आया, जब मैं लाहर टीम से जुड़ी। रंगमंच के माध्यम से मैंने पहली बार अपनी ही आवाज़ को पहचाना। अपने पहले नाटक में मैंने एक ऐसी लड़की की भूमिका निभाई, जिसकी पढ़ाई छुड़वा दी जाती है, कम उम्र में उसकी शादी कर दी जाती है और घरेलू हिंसा से टूटकर वह अपनी जान दे देती है। वह केवल एक नाटक नहीं था, बल्कि हमारे समुदाय की अनेक लड़कियों की सच्चाई थी। उस प्रस्तुति के बाद कई लड़के और लड़कियाँ अपनी पढ़ाई जारी रखने की इच्छा लेकर हमारे पास आए। उसी दिन मुझे महसूस हुआ कि कहानियाँ और कला लोगों के भीतर बदलाव की शुरुआत कर सकती हैं।

इसके बाद मैंने स्वयं भी ओपन स्कूल के माध्यम से अपनी पढ़ाई दोबारा शुरू करने का निर्णय लिया। कुछ समय बाद मैं 'मेरी पहचान संविधान' फेलोशिप से जुड़ी। इस फेलोशिप ने मुझे केवल संविधान के बारे में नहीं सिखाया, बल्कि समानता, गरिमा, स्वतंत्रता और न्याय जैसे मूल्यों को अपने जीवन में जीने का साहस भी दिया। इसने मुझे अपने अनुभवों को छिपाने के बजाय उन्हें बदलाव की ताकत में बदलना सिखाया।

आज मैं बच्चों, किशोरियों और युवाओं के साथ रंगमंच, संवाद और सामुदायिक सीखने की प्रक्रियाओं के माध्यम से काम करती हूँ। मैं लड़कियों को अपनी शिक्षा जारी रखने, अपने अधिकारों को समझने और उन परंपराओं पर सवाल उठाने के लिए प्रेरित करती हूँ जो उनके सपनों को सीमित कर देती हैं।

जब मैं पीछे मुड़कर देखती हूँ, तो मुझे एक ऐसी लड़की दिखाई देती है जो अपनी बात कहने से डरती थी। आज वही लड़की पूरे आत्मविश्वास के साथ अपने समुदाय के सामने खड़ी होकर अपनी आवाज़ बुलंद करती है। मेरा विश्वास है कि जब एक लड़की अपनी आवाज़ पहचान लेती है, तो वह अनजाने में ही अनेक दूसरी लड़कियों के लिए भी बोलने का साहस पैदा कर देती है।

